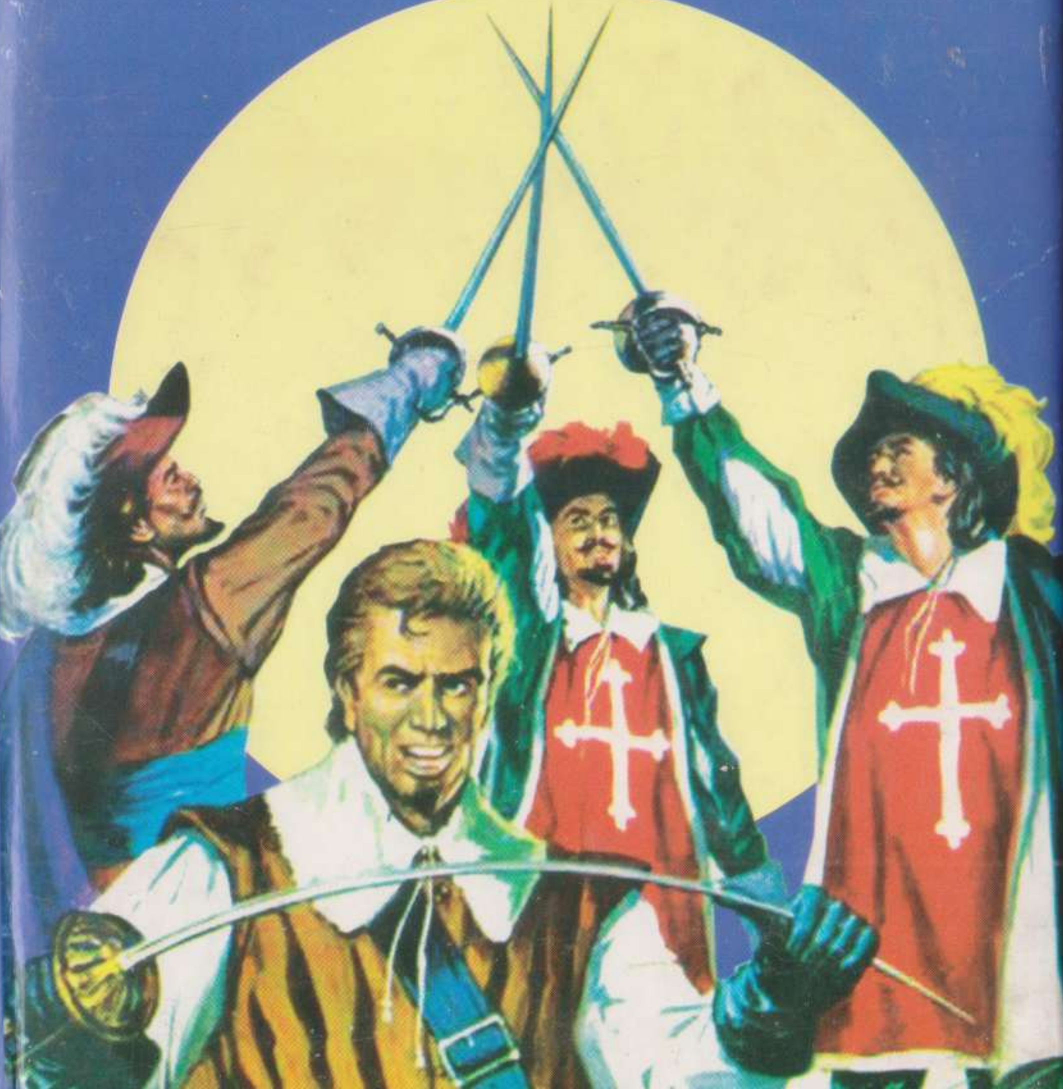
विश्व प्रसिद्ध किशोरोपयोगी उपन्यास

विश्व क्लासिक

तीन तिलंगे

अलेक्ज़ेन्डर ड्यूमा





अलेक्ज़ेन्डर ड्यूमा का प्रसिद्ध यास 'थ्री मेस्केटियर्स' एक ऐसा ठा उपन्यास है जो एक गरीब वार के नन्हें तीसमार खां के मन में । खलबली को उजागर करता हैं ने अपनी लगन, मेहनत एवं जांबाज नामों से राजा के हृदय में भी जगह । ली। इस उपन्यास में लेखक ने ा के विरुद्ध देश-द्रोह को उजागर या है और अपनी सूझबूझ से, बहादुर न तिलंगों से देश में शांति का माहौल । दिया। धर्म की आड़ में देश की ति को भंग करने वाले गद्दारों को ा देकर देश में आपसी सहिष्णुता, ता और धर्मनिरपेक्षता की खातिर ादुर तीन तिलंगों ने अपनी जान की वाह न करके देश में खुशहाली की नूठी मिसाल कायम की।

तीन तिलंगे

विश्व प्रसिद्ध किशोरोपन्यास **The Three Musketeers**





भूमिका

अलेक्जेंडर ड्यूमा एक महान उपन्यासकार थे। यह पुस्तक उनके महान उपन्यास 'थ्री मैरुकेटियर्स' का हिन्दी रूपांतरण है जिसका नाम 'तीन तिलंगे' हैं। इस उपन्यास में बहादुर दार्ता जिसने अपने साथियों की मदद से अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और साथ ही साथ अन्यायियों को भी सजा दिलवाई। बहादुर दार्ता ने अपने पिता से शिक्षा प्राप्त की थी कि अपना सिर केवल सम्राट के सामने झुकाना उनके अलावा और किसी के सामने सिर झुकाने का मतलब उनसे याचना करना है। इसलिए दार्ता ने कितना भी कठिन परिस्थिति क्यों न हो, परंतु उनके सामने अपना सिर न झुकाया और उन परिस्थितियों का डटकर मुकाबला किया। दार्ता पेरिस के सम्राट के शाही सेना जिसे तिलंगी पलटन के नाम से जाना जाता था, में भर्ती होना चाहता था। उस तिरंगी पलटन पर सम्राट के सुरक्षा का भार रहता था। वहीं दूसरी तरफ प्रधानमंत्री की सेना भी थी जिससे पूरी प्रजा परेशान थी। जो हमेशा जनता को परेशान करते थे। एक दिन प्रधानमंत्री की सेना के सरदार गुसाक और उनके साथियों से शाही पलटन के तीन सिपाहियों से मुठभेड़ हो गई। वहीं पर दार्ता भी मौजूद था। एक तरफ प्रधानमंत्री की सेना के आठ जवान और दूसरी तरफ तिलंगी पलटन के तीन जवानों में युद्ध शुरू हो गया। अंत में दार्ता भी सोच-विचार कर शाही पलटन के जवानों का साथ दिया और प्रधानमंत्री के पलटन के सरदार गुसाक को युद्ध में हरा दिया।

इस तरह अपनी इस वीरता के बल पर दार्ता तिलंगी की पलटन में शामिल हो गया और अपनी बहादुरी के कई कारनामे कर दिखाए जिससे उसका मस्तक हमेशा ऊंचा उठा रहा।

प्रस्तुत उपन्यास में दार्ता के इन अनोखे कारनामों के माध्यम से कि शोरों के मन में देश के प्रति वफादारी की मशाल जगाने और बहादुर तिलंगी पलटन की गौरव गाथा को उजागर करता है।





एक

फ्रांस का एक नगर। यह नगर ऐतिहासिकता की दृष्टि से भी मशहूर हैं। यह नगर समुद्र के किनारे बसा था। यहां एक बन्दरगाह भी था इस वजह से इस नगर में विदेशों से जहाजी, व्यापारी और अन्य लोग घूमने आते और माल का आना जाना लगा रहता। यहां हर समय कोलाहल रहता था। 1925 अप्रैल की बात है उस दिन सोमवार था। फ्रांस के उस नगर में चारों तरफ कोलाहल गूंज रहा था। सब लोग इधर ऊधर दौड़ रहे थे कोई कुछ कहता तो कोई कुछ। वैसे किसी की कुछ समझ नहीं आ रहा था बगैर कुछ मालूम हुए भी लोग भाग रहे थे। बस बच्चे, बूढ़े और जवान सभी एक सराय की तरफ दौड़े जा रहे थे। देखते ही देखते सराय के बाहर भीड़ इकट्ठी हो गई। सभी लोग यहां एक नौजवान को देखने के लिए उतावले थे। भीड़ इतनी थी कि लोगों में उस नौजवान को देखने के लिए धक्का-मुक्की हो रही थी। ऐसा लगता था जैसे पूरा नगर ही खाली ही गया हो और सभी वहां इकट्ठे हो रहे है।

जिसको देखने के लिए सारे नगर के वासी सराय के बाहर इकट्ठा हुए थे वह एक नौजवान था और उसकी उम्र करीब बीस साल की होगी। वह शरीर पर रेशमी वस्त्र पहने हुए था। वैसे तो यह वस्त्र ठीक थे परन्तु इस नगर में यह वस्त्र मसखरे के लिए थे और इस नगर में ऐसे लोग देखने को मिलते ही नहीं है इसलिए लोग इसे देखने के लिए इकट्ठे हुए थे। यह कमर में एक तलवार बांधे था। इन सब चीजों के होते यह किसी देश का मामूली सरदार लगता था लोग इस विचित्र सरदार को देखकर हंस रहे थे और तरह-तरह की बातें कर रहे थे। इस नगर में शायद पहली बार यहां के लोगों ने ऐसा विचित्र सरदार देखा था। कई



लोगों के हंसते-हंसते पेट में दर्द हो रहा था। बच्चे उसे देखकर तालियां बजा रहे थे और नाच रहे थे।

उस नौजवान को जरा भी अफसोस नहीं था कि लोग मुझे देखकर हंस रहे है। वह लोगों की भीड़ देखकर और अकड़कर खड़ा हो गया।

शायद यह नौजवान एक छोटा-मोटा 'तीसमार खां' था। इस विचित्र सरदार व इसके मरियल घोड़े को देखने के लिए ही सब लोग यहां एकत्र हुए है।

यह नन्हा नौजवान तीसमार खां जब घर से निकला तो यहीं प्रण करके निकला कि संसार में मैंने बहुत बहादुरी के नाम सुने है। मैं भी अब कुछ ऐसा कर दिखाऊंगा ताकि मेरी भी गिनती बहादुरों में हो जाए। घर से चलते वक्त उसके पिता ने उसे अपना सबसे प्यारा घोड़ा दिया था जिसे देख लोग हंस रहे थे परन्तु इस तीसमार खां को लोगों की जरा भी परवाह नहीं थी। उसके पिता ने घर से चलते वक्त उसे कुछ नसीहतें भी दी।

जब वह घर से विदेश में अपनी बहादुरी दिखाने के लिए चला तो उसके पिता ने कहा "बेटे अगर तुम्हारी यही इच्छा है कि मैं विदेशों में जा अपनी शोहरत का झन्डा फहराऊं तो मैं तुम्हें रोकूंगा भी नहीं, पर जाने से पहले मेरी दो चार बातों को हमेशा ध्यान रखना। मैं तुम्हें ये अपना सबसे प्यारा घोड़ा दे रहा हूं जैसे तुम मुझे सर्वाधिक प्रिय हो ऐसे ही यह घोड़ा भी मुझे बहुत प्यारा है और यह भी मुझसे उतना ही लगाव रखता है। हां तुम्हारी तरह यह भी इसी घर में जन्मा है। मैंने इसे अपने हाथों से पाला है इसके दुःख मैं दुःखी और सुख में सुखी रहा हूं। यह भी तुम्हारी ही तरह इस घर का सदस्य है। यह अब तेरह साल का हो गया है मुझे उम्मीद है कि अपने बाप की तरह तुम भी इसे बहुत अच्छी तरह रखोगे। अच्छा अब सुनो अब मेरी और इस घर की इज्जत तुम्हारे हाथ में है अगर कभी सौभाग्य से तुम सम्राट के दरबार में पहुंच सको तो यह बहुत अच्छी बात है लेकिन इस बात का अवश्य ध्यान रखना कि तुम्हारा यह मस्तक सिर्फ सम्राट के आगे ही झुकना चाहिए और किसी के आगे नहीं क्योंकि और किसी के सामने मस्तक झुकाने का मतलब है याचना, यह तुम्हारे लिए अपमान की बात है। तुम्हारे बाप का सिर कभी किसी के आगे नहीं झुका। तुम बस इतना ध्यान रखना कि ऐसा काम न हो जिससे तुम्हारे पिता का मस्तक शर्म से झुक जाए।

बेटे तुम्हें तो मालूम है कि हमने आज तक कितनी गरीबी में दिन गुजारे हैं मुझे दुःख भी हो रहा है कि तुम यात्रा पर जा रहे हो और मेरे पास तुम्हे देने को कुछ भी नहीं है फिर भी मैंने अपनी जिन्दगी में आज तक ये पन्द्रह क्राऊन इकट्ठे कर रखे हैं तुम इन्हे ले जाओ। हां अगर तुम्हारी मां होती तो शायद वह तुम्हारी और सहायता करती परन्तु मैं तुम्हें तुम्हारी मां की बगैर सहायता के नहीं जाने दूंगा। फिर अपनी पत्नी की याद में उसकी आंखे नम हो गई। बहुत पहले तुम्हारी मां ने किसी से एक मरहम बनाना सीखा था वह मरते समय इसकी विधि मुझे बता गई थी अब जाने से पहले तुम इस विधि को जान लो ये तुम्हारे बहुत काम आएगी और लोग तुम्हे दुआ देंगे। यह मरहम अगर किसी भी घाव पर लगा दिया जाए तो तुरन्त ठीक हो जाता है। इससे तुम्हारी मां हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी।

मुझे पता है कि तुम पहले पेरिस जाओगे अगर तुम वहां गए तो वहां एक पुराना सरदार है जिसका नाम मोस्यो त्रिवेल है। वह मेरा दोस्त है। अपने समय में वह निडर एवं बहादुर था। आजकल भी वह सम्राट के अंगरक्षको के सेनापति है। पता है उन्हें बारह हजार क्राऊन महिने का वेतन मिलता है यह वेतन उन्हें उनकी योग्यता का ही मिलता है लेकिन तुम यह ना समझ लेना कि वे शुरू से ऐसे ही थे वे भी पहले तुम्हारे जैसे ही थे परन्तु अपनी लगन के बलबूते पर उन्होंने सम्राट का दिल जीत लिया। मैं उनके नाम एक चिट्ठी लिखे देता हूं जहां तक सम्भव है वे तुम्हारी सहायता करेगें।"

इस तरह पहले तो पिता ने उसे मरहम बनाना सिखाया फिर मोस्यो त्रिवेल के नाम चिट्ठी लिखकर उसे दी और उसे आर्शीवाद देकर अश्रुपूरित नेत्रों से विदा किया। पिता से बिछुडकर वह चल दिया। उसकी आंखो से भी दो बूंदे आंसू की लुढ़क गई।

इस नौजवान का नाम दार्ता था। वह पिता को छोड़ पेरिस की तरफ चल दिया। यहां एक सराय के पास आया उसे आया देख लोगों की भीड़ इकट्ठी होने लगी परन्तु दार्ता को इसकी जरा भी परवाह नहीं

थी। वह आसपास बनी सराय और मकानों को देखने लगा। वह मन ही मन उनकी सराहना करने लगा "सचमुच जैसा मैंने सुना पेरिस तो कहीं उससे बढ़कर है। इतनी ऊंची अट्टालिकाएं, कितना साफ नगर और यहां के सभ्य निवासी।" तभी जैसे ही दार्ता की नजर सराय के ऊपर वाले भाग पर गई तो देखता ही रह गया। उसने देखा कि जिस सराय के नीचे वह खड़ा है ऊपर खिड़की में एक लम्बा तगड़ा आदमी बैठा है और अन्य दो आदमियों से इशारे से बातें कर रहा है वे मुस्कुरा रहे थे और जब कभी दार्ता पर नजर पड़ जाती तो खिलखिलाकर हंस देते। अब दार्ता उन तीनों को गौर से देख रहा था। जब दार्ता ने उनकी बातें गौर से सुनी तो उसे पता चला कि वे लोग उसके घोड़े को देखकर हंस रहे है और साथ में उसका भी उपहास उड़ा रहे है। इस बात पर दार्ता को गुस्सा आया। उसने सोचा कि मैं गांव का रहने वाला हूं इसलिए ये लोग हंस रहे है मेरा मजाक बना रहे है। यह बात दार्ता को बहुत बुरी लगी क्योंकि दार्ता सब कुछ सहन कर सकता है पर वह अपना अपमान सहन नहीं कर सकता। अब दार्ता के क्रोध की ज्वाला भड़क गई।

उनको हंसते देख दार्ता गुस्से से कांप उठा। उसके नथुने गुस्से के कारण फूल उठे, चेहरा लाल हो गया, आंखे अंगारे उगलने लगी। वह गुस्से में ऊपर मुंह उठा कर बोला "क्यों साहब आप खिड़की में बैठे क्यों हंस रहे है? वाह आप तो ऐसे लग रहे है जैसे पेरिस के नवाब हो। अगर हंसना ही है तो नीचे आइए। लगता है आपने कभी किसी व्यक्ति की शक्ल देखी ही नहीं क्यों मूर्खों की तरह हंस रहे हो? मुझ पर या मेरे घोड़े पर हंसते हुए शर्म नहीं आती। लगता है आप पागल है या अपने आप को बहुत बुद्धिमान समझ रहे हो। चलो जो भो कोई हो पर मैं इस बात को बर्दास्त नहीं कर सकता।"

अब भी दार्ता का चेहरा गुस्से से तिलमिला रहा था उसकी बातें सुन पहले तो वहां खड़े लोग सन्न रह गए क्योंकि दार्ता ने ऊपर बैठे लोगों को इशारा करके ये बातें कहीं थी फिर अन्य भी लोग थोड़ा सहम गए। वह उन्हीं की तरफ घूर रहा था। उसका ऐसा चेहरा देख लोग



खिलखिलाकर हंस पड़े जिससे दार्ता का गुस्सा और भी बढ़ गया और सोचने लगा कि मैं पागलों की नगरी में कहां आ फंसा? दार्ता का हाथ कमर में बन्धी तलवार की मूठ पर चला गया, यह देख सारे लोग चुप हो गए। अब उनके चेहरे पर हंसी नहीं वरन् डर था। यह देख उस ऊपर

बैठे लम्बे-चौड़े आदमी को भी गुस्सा आ गया। शायद वह आदमी कोई फौजी सरदार था वह व्यंग्य से दार्ता की तरफ देखकर मुस्कुराया फिर घोड़े की तरफ उंगली तानकर बोला "ओह घोड़ा तो बड़ा शानदार है पूरे फ्रांस में मैंने तो कोई ऐसा घोड़ा देखा नहीं।" वह फिर हंस पड़ा और बोला "लगता है तुम्हारा घोड़ा अब ज्यादा ही बूढ़ा हो गया है वह इतना बूढ़ा हो गया है कि अब यह खच्चर बन गया है और इस घोड़े के बराबर में तुम ऐसे लग रहे हो जैसे किसी देश का महान जोकर खड़ा हो। इसी मरियल घोड़े को देखकर हम हंस रहे है। क्या तुम अब भी नहीं समझे कि तुम्हारे आसपास इतनी भीड़ क्यों इकट्ठी है? लगता है पागल हम नहीं वरन् तुम हो जो अपनी हंसी उडवाए जा रहे हो।"

दार्ता ने एक बार आसपास इकट्ठी हुई भीड़ की तरफ देखा और फिर एक बार खा जाने वाली नजरों से ऊपर खिड़की की तरफ देखा। फिर कड़ककर बोला "क्या कहा? तुम मेरे घोड़े को देखकर हंस रहे हो। हंसो, खूब हंसो। लेकिन जब तुम इस घुड़सवार को देखोगे तो तुम्हारी सारी हंसी नदारद हो जाएगी। यह घोड़ा जिसको देखकर तुम हंस रहे हो उसमें मेरे पिता का आर्शीवाद भरा है। अरे कायरों तुम क्या जानो कि बड़ों के आर्शीवाद में कितनी शक्ति है?"

इतना सुनकर सरदार को भी गुस्सा आ गया और बोला "अच्छा तो तुम्हें अपने ऊपर इतना घंमड है" कहते हुए सरदार नीचे उतर आया वह दार्ता के इधर-उधर घूमने लगा फिर खिलखिलाकर हंस पड़ा और बोला "तुम अभी बच्चे हो पर तुम बोलते बिल्कुल बड़ों की तरह हो। चलो फिर भी मैं तुम्हें माफ करता हूं।" और घूम कर दूसरी तरफ जाने लगा।

सरदार को जाते देख दार्ता ने तलवार खींच ली और गरजकर बोला "तुम मुझे बच्चा समझने की भूल मत करना। वीर इस तरह से रणभूमि में पीठ नहीं दिखाते या फिर तुममें मुझसे युद्ध करने का साहस नहीं है हां सामने आओ और मुझसे युद्ध करो। मैं वीर हूं और वीर कभी पीठ पर वार नहीं करता। हां अगर तुम अपने माथे पर कायरता का टीका

लगाना चाहते हो तो बात और है।"

क्या कहा? तुम मुझसे लड़ना चाहते हो। मुझे तुम्हारी उम्र पर तरस आता है। कहां मैं और कहां तुम? मेरा तुम्हारे साथ युद्ध के मैदान में कोई साथ नहीं। जिद मत कर, मैं भी जानता हूं कि तुम्हारे खून में जोश है। ऐ छोकरे! कहीं तेंरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है? ज्यादा बढ़-बढ़ कर मत बोल। क्यों मेरें हाथों मरना चाहता है? मुझे तेरी जवानी देखकर तरस आता है अन्यथा तुझे तो मैं चींटी की तरह मसलकर फैंक देता।"

इसमें कोई शक नहीं कि दार्ता बहादुर था वह पूरे जोश में था। सरदार जाने ही वाला था कि दार्ता ने वार भी कर दिया। सरदार चौकन्ना था अगर वह समय से वहां से हट नहीं जाता तो उसका सिर जमीन पर होता। अभी तक तो वह सोच रहा था कि यह लड़का उसके साथ मजाक कर रहा है उसके बस का कुछ भी नहीं है लेकिन अब उसे समझ आया कि सचमुच ही वह क्रोध में है। जैसे ही अपने सरदार पर वार करते देखा तो उसके अन्य साथी तलवार लेकर दार्ता पर टूट पड़े। जो लोग वहां दार्ता तथा उसके मरियल घोड़े पर हंस रहे थे अचानक हुए युद्ध को देख सब भागने लगे। जहां कुछ देर पहले लोगों की भीड़ इकट्ठी थी वहां अब खाली मैदान पड़ा हुआ था। जहां कुछ देर पहले हंसी के फौव्वारे छूट रहे थे वहीं अब तलवारें खनखना रही थी। कैसा विचित्र संयोग था?

परन्तु इन सबके बीच दार्ता मुकाबला कर रहा था उसके चेहरे पर अब भी गुस्सा था वह तो इतने आदमियों को वार करता देख घबराया नहीं वरन् उसे प्रसन्नता थी कि शुरू में ही उसे एक नहीं वरन् चार-चार आदमियों से जुझना पड़ रहा था। वह भी डटकर मुकाबला करने लगा। तभी सरदार बोला "देखो यह अभी बच्चा है इसको मारने की जरूरत नहीं है अभी भीड़ इसको देखकर मनोरंजन कर रही थी इसकी तलवार छीन लो और उसके मरियल घोड़े पर इसे बैठा कर शहर के बाहर कर दो। हम इस निर्दोष से अपनी तलवार खून से नहीं रंगेंगे।"



सरदार के आदमी रूक गए लेकिन दार्ता बहादुरों की तरह तलवार चलाता रहा और बोला "कायर कहीं के? मैंने तुम जैसे बहुत देखे है। हां अभी तुमने कहा कि मैं अपने मरियल घोड़े के साथ शहर छोड़ दूं। मैं तुम्हारी यह ख्वाहिश भी पूरी कर दूंगा क्योंकि ऐसे शहर में जहां कि

सभी डरपोक और जोकर हो मैं वहां रहना भी नहीं चाहता। लेकिन तुम सबका सिर काटकर।"

यह सुन सरदार मन ही मन बहुत खुश हुआ उसकी तलवार चलाने की कला पर वह मुग्ध हो गया। ऐसा लड़का तो उसने आज तक नहीं देखा था इतना निडर और वीर। अभी सरदार सोच ही रहा था कि तब तक एक आदमी के तलवार के वार से दार्ता लड़खड़ा गया और जमीन पर गिर गया। उसके गिरते ही आसपास खड़े लोग उसके इर्द-गिर्द घेरा बनाकर फिर खड़े हो गए लेकिन इस बार उनके चेहरों पर हंसी नहीं थी वरन् दर्द और दयनीयता भरे भाव थे। सब उसकी वीरता पर कायल थे।

सरदार दार्ता से बहुत प्रभावित था जैसे ही दार्ता जमीन पर गिरा तो उसने अपने आदमियों की तरफ इशारा किया कि अब तलवार का वार बन्द करो। देखा नहीं यह कितना वीर है? इसी ने कहा था कि मैं किसी की पीठ पर वार नहीं करता? अब तुम भी समझ लो कि वीर को वीरता की पहचान होनी ही चाहिए। इस समय यह जमीन पर है इसलिए तुम भी वार बन्द कर दो। दार्ता को काफी खून बह गया था वह बेहोश होता जा रहा था। ऐसे में सरदार ने सराय के मालिक से कहा "देखो इस वीर को सराय में ले जाओ। यह बेहोश है उसे पंलग पर लिटा इसे होश मे लाने की कोशिश करो" सराय का मालिक उसे उठाकर सराय में ले गया और उसके मुंह पर पानी के छींटे दिए जाने लगे।

अब दार्ता बीच-बीच में चिल्ला उठता "देख लूंगा, एक एक को देख लूंगा जब उन्हें मालूम चलेगा तो अवश्य ही वे एक-एक की खबर लेंगे" और वह बेहोश हो गया। बेहोश होने के पहले वह पता नहीं क्या-क्या कहता रहा? कुछ बातें तो सराय मालिक की समझ भी नहीं आई जब वह सो गया तो सराय का मालिक सरदार के पास आया और बोला "हुजूर वह लड़का तो बेहोश हो गया मैंने पानी के छीटें मारकर उसे भरपूर कोशिश की कि वह होश में आ जाए परन्तु मैं सफल नहीं हो सकता। हां बेहोश होने के पहले वह काफी देर तक चीखता-चिल्लाता रहा। उसका एक हाथ कुर्ते की जेब पर था जब मैंने यह हाथ हटाना

चाहा तो वह घायल शेर की भांति दहाड़ उठा और अपने कुर्ते की जेब कसकर पकड़ ली और कहने लगा "पता नहीं ये लोग अपने को कितना बड़ा तीसमार खां समझते है? इस बात का जब मोस्यो त्रिवेल को पता चलेगा तो वह एक-एक को मजा चखा देंगे। मैं तो उन्हीं के पास जा रहा था परन्तु रास्ते में कुछ मसखरे, कुछ कायर व्यक्ति मिल गए अब मैं कर भी क्या सकता था। वे पांच आदमी थे और मैं अकेला। लगता है वे सभी खेले खाए थे। परन्तु मैं भी उनसे कम नहीं था। परन्तु मैं कर भी क्या सकता था?" और न जाने क्या-क्या बड़बड़ा रहा था।"

मोस्यो त्रिवेल का नाम सुनते ही सरदार चौक गया और बोला "क्या कहा उस छोकरे ने। मालूम होता है उसकी जेब में अवश्य ही मोस्यो त्रिवेल के नाम कोई गुप्त चिट्ठी है" और सरदार के चेहरे पर परेशानी के भाव उभर आए।

सराय वाला बोला "बाद के शब्द तो मेरी समझ ही नहीं आए क्योंकि बोलते-बोलते ही वह बेहोश हो गया। मुझे भी शक था कि अवश्य इसकी जेब मे कुछ ऐसा छुपा हुआ है जो रहस्य से भरा है। जब वह बेहोश हो गया तो मैंने उसकी जेब देखी तो मुझे कुछ कागज मिले शायद यह किसी के नाम जरूरी चिट्ठी हो मैंने यह कागज आपको दिखाने के लिए उसकी जेब से निकाल लिए" यह कह कर उसने दार्ता की जेब से मिले कागज सरदार को दे दिए।

सरदार ने चिट्ठी झपट ली और बोला "मोस्यो त्रिवेल!" वह किसमिसा गया। उसकी मुट्ठियां भीच गई। लगता है त्रिवेल ने मुझे मारने के लिए ही उस लड़के को यहां बुलाया है लेकिन यह सच भी तो नहीं हो सकता। शायद यह लड़का किसी काम से त्रिवेल के पास जा रहा हो? फिर वह बोला "अच्छा तुम मेरा घोड़ा फौरन तैयार करो आखिर इस बात का तो पता लगाना ही है। मैं अभी उस अंग्रेज लेड़ी के पास इसका पता लगाने जा रहा हूं शायद वही इस बारे में कुछ जानती हो?"

उधर सराय मालिक और सरदार के बीच बातें हो रही थी तभी बराबर के कमरे मे दार्ता की बेहाशी टूट गई। अचानक दार्ता को बराबर

वाले कमरे से बातचीत की आवाज आई। वह अपने पलंग से उठा और दरवाजे के पीछे कान लगा उनकी बातों को सुनने लगा। उसने सुना कि वह सरदार कुछ देर तक तो सराय मालिक से बात करता रहा तभी वहां एक औरत आई तो सराय मालिक दरवाजे से बाहर निकल गया। अब सरदार उस औरत से कह रहा था "अब करीब-करीब यहां तुम्हारा काम समाप्त हो गया है और जो बचा है उसे मेरे ऊपर छोड कर चली जाओ। अब तुम निश्चिन्त होकर इंग्लैण्ड चली जाओ और अगर ड्यूक लन्दन से चले गए हो तो फौरन इसकी सूचना मुझे देना। यह सन्दूक अपने साथ ले जाओ। और हां इस सन्दूक को अपने से अलग मत होने देना इसमें एक पत्र है जिसमें आगे तुम्हें क्या करना है कहां जाना है सभी कुछ लिखा है? लेकिन यह बात याद रहे कि इस सन्दूक को तुम इंग्लैण्ड जाकर ही खोलना उससे पहले नहीं। हां फ्रांस में इसे मत खोलना।"

दार्ता ने देखा कि वह औरत और सरदार दोनों बाहर निकले जहां एक घोड़ा और एक रथ खड़ा हुआ है सरदार घोड़े पर सवार होकर वहां से तेजी से चल दिया और वह औरत रथ पर बैठकर चली गई।

दार्ता उन दोनों को जाते देख असमन्जस में पड़ गया। वह सोचने लगा कि यह औरत कौन थी और सरदार से इसका क्या सम्बन्ध है? ऐसा इस सन्दूक में क्या है जो कि फ्रांस में खोलकर देख नहीं सकती? उसकी इच्छा हुई कि वह सरदार का पीछा करे लेकिन एक ही कदम बढ़ाया था वह दर्द से कराह उठा। वैसे भी सरदार घोड़े पर था फिर उसके घाव भी ताजा थे अतः वह सरदार का पीछा कर ही नहीं सकता था। अभी उसका घोड़ा भी इस लायक नहीं था कि वह भी दौड़ सके। इसलिए उसकी इच्छा होते हुए भी वह जा नहीं सका और वह मन मार कर रह गया। उसने वह रात वहीं सराय में बिताई। उसे याद आया कि चलते समय उसके पिता ने एक मरहम दिया था। उसने उसे निकाला और अपने सभी घावों पर लगा दिया। रात में उसके करीब-करीब सारे घाव ठीक हो गए। अगले दिन जब उसने देखा कि वह और उसका घोड़ा चलने लायक हो गए है तो उसने पेरिस जाने की तैयारी कर ली।

जब दार्ता सराय से निकलने ही वाला था तो उसे चिट्ठी की याद आई। जैसे ही उसने जेब में हाथ डाला तो चिट्ठी नहीं मिली अब वह परेशान हो उठा। उसे पता था कि जब वह बेहोश था तो उसके पास सराय वाला ही था वह अपनी तलवार निकालकर दुबारा सराय में पहुंच गया और बोला "देखो तुम्हें अच्छी तरह याद है कि मेरी चिट्ठी जेब से कहां गई? तुम बगैर किसी शोर-शराबे के मुझे वह चिट्ठी सौंप दो मैं किसी से कुछ भी नहीं कहूंगा अन्यथा.....।" सराय वाला हाथ जोड़कर मना ही करता रहा कि मुझे पता ही नहीं कि तुम्हारी जेब में कुछ था भी या नही। जब वह नही माना तो दार्ता ने तलवार की नौंक उसकी छाती से लगा दी तो वह कांपता हुआ बोला "हुजूर मैं सब कुछ बता दूंगा लेकिन पहले यह तलवार हटा लीजिए" दार्ता मुस्कुरा दिया और तलवार हटाकर म्यान में रख ली और फिर गरज कर बोला "हां तो अब बताओ" सराय मालिक कांपता हुआ बोला "हुजूर माफ करें आपकी जेब में जो चिट्ठी थी वह मेरे पास नहीं है। हुजूर मैं कसम खाता हूं। लेकिन मुझे पता है कि वह चिट्ठी किसके पास है? अगर मेरी जान की हिफाजत करें तो मैं अवश्य ही बताऊंगा।" वास्तव में सराय मालिक दार्ता के गुस्से से डर गया था हालांकि चिट्ठी जेब से निकालकर स्वयं सराय मालिक ने सरदार को दी थी परन्तु वह इस बात को छुपा गया और बोला "हुजूर जिस सरदार के साथ अभी दो दिन पहले आपकी लड़ाई हुई थी चिट्ठी उसी के पास है। जब आप बेहोश हो गए तो बार-बार आपका हाथ कुरते की जेब पर चला जाता जिससे सरदार को शक हो गया मेरे नौकर ने मुझे बताया कि सरदार ने आपकी जेब से कुछ कागज निकाले थे।"

जब दार्ता को मालूम चला कि वास्तव में असली दोषी सराय मालिक नहीं वरन् वह सरदार था तो वह दांत पीसकर रह गया क्योंकि वह तो कल ही घोड़े पर सवार हो पता नहीं कहां निकल गया था? फिर भी बोला "ठीक है अब समझ आया कि वह इतनी जल्दी क्यों भाग गया? मैं अभी पेरिस जा रहा हूं वहां मोस्यो त्रिवेल को यहां की पूरी घटना सुनाऊंगा तब देखना वह कैसे आप सब लोगों की खबर लेंगे?"

सराय मालिक हाथ जोड़े चुपचाप सुनता रहा। इसके बाद दार्ता ने अपना सामान बांधा। बाहर आकर उसने प्यार से अपने घोड़े को थपथपाया और उस पर सवार होकर पेरिस की ओर चला। पेरिस सचमुच बहुत सुन्दर शहर था, वह उसकी सुन्दरता को निहारता रहा। पेरिस की सीमा में पैर रखते ही उसने सबसे पहला जो कार्य किया वह यह कि उसने अपना मरियल घोड़ा जिसकी वजह से वह हंसी का पात्र बना उसे सिर्फ चार क्राऊन में बेच दिया। फिर वह पैदल ही फ्रांस की राजधानी पेरिस में नंगे पैर ही दाखिल हुआ। शहर मैं तो अभी उसका कोई भी नहीं था थोड़े से पैसे जेब में रखे थे बाकी सिर ढ़कने को छत नहीं थी। इतने बड़े शहर में वह कहां रहे? यहां पहुंचकर सबसे पहले उसने अपने लिए कमरा देखा जिसका कि किराया एक महिने का दो क्राऊन था वह दार्ता ने अग्रिम ही दे दिया वहां आकर वह सो गया। सुबह नित्य क्रिया से निवृत हो उसने पेरिस घूमने का विचार बनाया। शाम तक वह पेरिस की सड़कों पर घूमता रहा। उसे पेरिस के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी भी हो गई। फिर रात को वह आराम से सो गया। अगली सुबह उठकर वह अच्छे कपड़े पहन कमर में तलवार लटकाकर मोस्यो त्रिवेल से मिलने के लिए चल पडा।

●●





दो

दार्ता मोस्यो त्रिवेल की हवेली के पास पहुंचा तो देखता ही रह गया। मोस्यो त्रिवेल की हवेली बहुत खूबसूरत थी उसके बाहर दो सिपाही पहरा दे रहे थे। तभी दार्ता ने उन से कहा कि मुझे मोस्यो त्रिवेल से मिलना है तो वे आश्चर्य चकित हो दार्ता को देखने लगे। परन्तु फिर भी त्रिवेल से इजाजत लेकर वे दार्ता से बोले, "हां जनाब आपको मोस्यो त्रिवेल ने बुलाया है।" दार्ता ने मोस्यो त्रिवेल की बैठक में प्रवेश किया। दार्ता ने देखा कि त्रिवेल घूम रहा था और कुछ सोच रहा था। दार्ता को सामने देख त्रिवेल ने उसका मुस्कुराकर स्वागत किया। दार्ता ने भी जमीन छूकर फिर उन्हें दण्डवत प्रणाम किया जिससे त्रिवेल बहुत खुश हुआ और उसे आर्शीवाद दिया और एक तरफ बैठ जाने का संकेत किया। अब दार्ता बैठा हुआ त्रिवेल की गतिविधियां देख रहा था। तभी त्रिवेल ने अपने सिपाहियों को आवाज दी। "ऐथोस, पार्थस, अरामिस कहां गए सारे के सारे? जरा यहां आओ।"

ये तीनों सैनिक त्रिवेल के कमरे के साथ वाले कमरे में रहते थे। त्रिवेल की आवाज सुनकर दो सैनिक फुर्ती से वहां पहुंच गए और उनके कहने का इन्तजार करने लगे। इन दोनों को दार्ता फौरन पहचान गया क्योंकि जब दार्ता ने इस हवेली में प्रवेश किया तो वे दोनों दार्ता की ओर देखकर गुफ्तगूं कर रहे थे। जैसे ही इन दोनों पर त्रिवेल की नजर पड़ी तो वह क्रोधित होकर बोला "तुम्हारी करतूतें दिन पर दिन बढ़ती जा रही है और खुले आम सड़कों पर दंगा-फसाद कर बैठते हो। कल मुझे सम्राट ने बुलाया था। तुम्हें पता है कि सम्राट ने मुझे क्या हुक्म दिया? मैं तो सुनते ही सम्राट के आगे मस्तक ऊंचा न कर सका। उन्होंने कहा कि



अगर मैं अपनी तिलंगो की पलटन में किसी नए सिपाही को भर्ती करना चाहूं तो मैं कार्डिनल की टुकड़ी से ही चुनूं। इसका मतलब तुम लोग अच्छी तरह जानते हो। आज सम्राट को तुम्हारे ऊपर शक है तभी तो

सम्राट ने ऐसा कहा। मैं शर्म से झुक गया। कहो, यह मैं क्या सुन रहा हूं?"

यह सुन पहले तो सिपाही सन्न रह गए फिर सिपाहियों के चेहरे गुस्से से तमतमा उठे। वे अधिक गुस्से के कारण कांपने लगे और बोले "अच्छा उन्होंने ऐसा कहा! जरूर किसी ने सम्राट के कान भरे है?" दार्ता उनकी वार्तालाप सुन रहा था, दार्ता ने सोचा कि इस समय इनको ही बात कर लेने देना उचित है, इस समय उसे यहां नहीं रहना चाहिए। परन्तु शायद त्रिवेल दार्ता की इस बात को जान गया था। उसने दार्ता की तरफ वहीं बैठे रहने का संकेत किया, न चाहते हुए भी दार्ता फिर वहीं बैठ गया। फिर दोनों सिपाहियों से त्रिवेल बोला "सम्राट का कहना है कि जिन शाही सिपाहियों पर मुझे गर्व है उन्होंने तो मुझे मुंह दिखाने लायक भी नहीं छोड़ा। मैं मानता हूं कि वे वीर है, निडर है पर उनकी इस बात पर मुझे आपत्ति है कि वे अपनी वीरता को खुली सड़क पर कहीं भी नीलाम न करें। आज उन तीनों की वजह से मेरी शाही तिलंगी पलटन बदनाम हो रही है।" त्रिवेल बोले जा रहा था "क्या यह सच है कि कार्डिनल के सिपाहियों ने कल एक शराबखाने में दंगा फसाद के अपराध में तुम सबको गिरफ्तार किया था?" यह सब बातें सम्राट को कार्डिनल ने ही बताई है। जब मैं सम्राट के पास पहुंचा तो कार्डिनल मेरी तरफ देखकर मन्द-मन्द मुस्कुरा रहा था और अपनी सेना की बड़ाई कर रहा था। मुझे ताज्जुब इस बात का हुआ कि कार्डिनल ने तुम दोनों के साथ ऐथोस का भी नाम लिया। देखो मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। और हां मैंने तुम तीनों को बुलाया था लेकिन ऐथोस नहीं आया। कहां है वह?

अरामिस और पार्थस सिर झुकाएं खड़े थे। तभी पार्थस ने सिर झुकाकर कहा "हुजूर ऐथोस की वह हालत नहीं कि वह आपके पास तक आ जाएं।"

"क्या कहां? क्या हुआ ऐथोस को? त्रिवेल गुस्से में विचित्र नजरों से पार्थस को घूरते हुए बोला।

"सर ऐथोस बीमार हो गया" पार्थस बोल उठा। मोस्यो त्रिवेल ने जब यह सुना कि ऐथोस बीमार हो गया है तो वह और भी बिगड़ गया, फिर नाराज होकर बोला "क्या कहा? बीमार हो गया! वाह यह भी खूब कही। देखो मैं तुम्हारे जाल में फंसने वाला नहीं हूं ये सब बेकार की बातें है। मेरे बाल ऐसे ही सफेद नही हुए है। मैंने भी दुनिया देखी है तुम्हें शर्म आनी चाहिए। कार्डिनल के आदमियों ने तुम लोगों के आदमियों को पकड़ लिया और तुम लोग पीठ दिखा कर भाग लिए। बहुत बहादुरी की तुम लोगों ने। जी चाहता है तुम्हें बहुत इनाम दूं। छिः छिः तुम्हारे लिए इससे शर्म की बात और क्या होगी? वाह! दीवान के सिपाहियों ने सम्राट के सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया। माना कि वे लोग दो थे परन्तु तुम भी तो दो थे। आज तक सम्राट की शाही सेना के तिलंगों के लिए मेरा सिर गर्व से तना रहता था परन्तु तुमने तो मुझे मुंह दिखाने के लायक भी नहीं छोड़ा। क्या तुमने हाथों में चूड़िया पहन रखी थी जो तुमसे कुछ भी नही हुआ? तुम्हारी करतूत देखकर तो मन करता है कि मैं इस पद से इस्तीफा दे दूं।"

अब अरामिस में बोलने की थोड़ी हिम्मत आ गई थी। जब मोस्यो त्रिवेल की बाते असहनीय हो गई तो वह बोला "हुजूर आपसे सम्राट ने जो कुछ कहा वह सत्य नहीं है। कार्डिनल ने सम्राट को सारी बातें बढ़ा-चढ़ाकर बताई है यह तो उसका स्वभाव है। उसे आप बहुत अच्छी तरह जानते है। हां यह बात तो सही है कि जहां हम दो थे वहीं वे भी दो थे परन्तु जिस चालाकी से उन लोगों ने हमें गिरफ्तार किया इसमें उनकी बहादुरी नहीं वरन कायरता दिखाई देती है। वे हम पर सामने से वार करते तो सचमुच आज आपका सिर गर्व से ऊंचा हो जाता। उन कायरों ने तो हम पर चोरों की तरह हमला किया था। और तो और हमें अपनी तलवार निकालने का भी मौका नहीं दिया। कायर कहीं के? वे लोग तो सिर्फ पीठ पर छुरी चलाना जानते है। फिर भी हम ऐसे ही गिरफ्तार नहीं हुए। हमारे बहादुर साथी ऐथोस ने मौका देख तलवार निकाल ली और मुकाबला करने की कोशिश की लेकिन वह अकेला था

और वे कई थे थोड़ी देर बाद वह घायल हो गया। लगता है कि आप लोगों को किसी ने गलत बताया कि हमने उनके हमले पर कोई जबाबी कार्यवाही नहीं की। हां सच्चाई तो यह है कि जब वे लोग हमको पकड़कर ले जाने लगे तो हमनें हमलावरों से रास्ते में ऐथोस को छुड़ा लिया और तीनों उनकी आंखों में धूल झौंककर वहां से भाग लिए। अब इसे तुम हमारी कायरता कहो या वीरता।"

अरामिस बोलते-बोलते हॉफ गया था फिर पार्थस बोला "कार्डिनल ने तो राजा को बढ़-चढ़ कर बताया परन्तु आपने भी तो इस बारे में कुछ सोचा होगा? आपने यह भी सुना होगा कि अकेले मैंने खाली हाथ उनमें से एक सिपाही को जमीन की धूल चटा दी और उसकी तलवार छीन कर उसका काम तमाम कर दिया।"

जब मोस्यो त्रिवेल ने पार्थस और अरामिस से ये बातें सुनी तो आश्चर्यचकित रह गया। फिर त्रिवेल बोला "अच्छा! तुमने भी बहादुरी दिखाई। अभी तक मुझे तो मालूम ही नहीं था। मैंने तो बस इतना ही सुना था कि कार्डिनल के सिपाही बहादुर थे एवं सम्राट के सिपाही तो डरपोक चूहे निकले जिन्होंने आसानी से आत्मसमर्पण कर दिया। लगता है कार्डिनल ने सम्राट के आगे अपने सिपाहियों का सारा किस्सा बढ़ा-चढा कर बताया है।"

दार्ता ने देखा की तभी बराबर वाले दरवाजे का परदा उठा और तलवार के सहारे धीरे-धीरे ऐथोस वहां आ रहा है। उसके चेहरे से साफ मालूम चल रहा है कि वह बीमार है और उसके बहुत घाव है क्योंकि कभी-कभी वह सीत्कार भी कर उठता है। पास आने पर पता चला कि सचमुच उसके कई घाव बहुत गहरे है एवं उनसे खून-बह रहा है। वह बहुत कमजोर नजर आ रहा था। उसे देख सभी लोग चौक पड़े। मोस्यो त्रिवेल को पहले लगा कि ये लोग झूठ बोल रहे है परन्तु ऐथोस की हालत देख अब उसको लगने लगा कि सचमूच ये लोग सच ही बोल रहे है। तभी मोस्यो त्रिवेल बोले "अरे यह क्या ऐथोस तुम?" और उसने भागकर दरवाजे में जाकर ऐथोस को पकड़ लिया। तभी ऐथोस बोला



"नहीं हुजूर मैं चला आऊंगा।"

ऐथोस हॉफ रहा था तभी वह गम्भीर स्वर में बोला "हुजूर माफ करिए मुझे कुछ देरी हो गई। आपने मुझे बुलाया मैं आ गया हूं। मेरे

लिए क्या हुक्म है?"

मोस्यो त्रिवेल ने जब देखा कि ऐथोस इस गम्भीर घायल अवस्था में भी यहां मुझसे मिलने आया है तो त्रिवेल बेहद खुश हुआ और उसने प्रसन्न होकर कहा "मैं अभी तुम्हारे साथियों से कह रहा था कि तुम दोनों तो आ गए लेकिन ऐथोस कहां गया? जब तुम्हारे साथियों ने बताया कि तुम घायल हो गए हो तो एक बार को तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ परन्तु अब तुम्हें देखकर लग रहा है कि सचमुच ही तुम लोगों ने कार्डिनल के सिपाहियों से जमकर लोहा लिया होगा। शाबाश मेरे बहादुर! मुझे तुम पर गर्व है। तुम सम्राट के अंगरक्षक हो। तुम्हें ऐसी वीरता ही शोभा देती है।"

ऐसा सुनकर ऐथोस के चेहरे पर प्रसन्नता आ गई लेकिन ज्यादा देर तक नहीं क्योंकि उसकी कमजोरी बढ़ती ही जा रही थी। उसके पांव लड़खड़ाने लगे शायद वह ज्यादा देर खड़ा नहीं रह पाएगा। देखते ही देखते उसके हाथ से तलवार की मूठ छूट गई और वह जमीन पर गिर गया। पार्थस और अरामिस उसकी तरफ दौड़े। मोस्यो त्रिवेल भी उसकी तरफ झुक गया और घबरा गया। उसने देखा कि ऐथोस बेहोश हो चुका है। मोस्यो त्रिवेल चिल्ला पड़े "हाय-हाय यह क्या हो गया? मेरा बहादुर सिपाही। पार्थस और अरामिस जल्दी से तुम वैद्य को बुलाओ। देखो मेरा ऐथोस बेहोश हो गया है जल्दी करो।"

मोस्यो त्रिवेल की आवाज सुनकर बाहर से कुछ सिपाही भी दौड़े-दौड़े आ गए। जब उन्होंने देखा कि ऐथोस जमीन पर पड़ा है तो घबरा उठे। हकीम पास में ही रहता था कुछ सिपाही तुरन्त हकीम के पास पहुंचे और हकीम को बुला लाए। पार्थस और अरामिस ने ऐथोस को उठाकर बराबर वाले कमरे मे बिस्तर पर लिटा दिया। जब हकीम ने देखा कि ऐथोस की हालत बिगड़ती जा रही है तो उसने सारा कमरा खाली करा लिया और ऐथोस का इलाज करने लगा। सभी लोग उस कमरे के दरवाजे पर प्रतीक्षा करने लगे।

उधर मोस्यो त्रिवेल बैचेनी से इधर-उधर टहल रहा था। अभी कुछ

सिपाही एवं पार्थस, अरामिस त्रिवेल के कमरे में ही थे उसने सभी को वहां से चले जाने के लिए कहा। दार्ता भी उठकर जाने लगा। जैसे ही त्रिवेल की नजरें दार्ता पर पड़ी तो अफसोस के साथ बोला "माफ करना मैं तो भूल ही गया था कि तुम भी यहां हो। बैठो! मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम भी जाओ।" फिर वह दार्ता से बोले "हां अब बताओ तुम किसलिए यहां आए हो?" दार्ता ने उन्हें अपने आने का मकसद बताया और बताया कि मेरे पिता का खास आग्रह था कि मैं तुमसे अवश्य मिलूं। इतना सुन मोस्यो त्रिवेल ने दार्ता को गले से लगा लिया और बोले "मुझे पता नहीं था कि तुम मेरे दोस्त के लड़के हो अन्यथा मैं तुम्हें इतना इन्तजार नही कराता। अरे भाई तुम तो मेरे लड़के के समान हो? जरा बताओ मेरे लायक क्या काम है?"

दार्ता ने सोचा कि मोस्यो त्रिवेल इतने बड़े पद पर है लेकिन वह उसके पिता को अब भी नहीं भूले। यह है दोस्ती की मिसाल। तभी मोस्यो त्रिवेल बोला "बेटे लगता है तुम किसी सोच में पड़ गए। तुम मुझसे डरो मत एवं जो कुछ भी मन में हो उसे कह डालो।" इससे दार्ता को हिम्मत बंधी और बोला "हुजूर यहां आने से पहले जब पिताजी ने बताया कि आप सम्राट की सेना के सरदार है तो मेरी तीव्र इच्छा हुई कि मैं आपके सिपाहियों की सेना में भरती हो जाऊं। यहां आने के बाद जब मैंने आपकी तिलंगी सेना के बहादुरी भरे कारनामें सुने तो अब तो मेरी तीव्र इच्छा है कि मैं आपकी सेना में जरूर ही भर्ती हो जाऊं और बहादुरी भरे काम आपके तिलंगो के साथ मिलकर करूं परन्तु अब शायद लगता है कि मैं शाही सेना में भरती होने के योग्य ही नहीं हूं क्योंकि यहां की सेना के सिपाही निडर और बहादुर है।"

मोस्यो त्रिवेल ने जब दार्ता की मायूसी भरी बातें सुनी तो उसे दिलासा देते हुए बोला "जवान पहले तो मुझे तुम अपना नाम बताओ" तभी दार्ता ने सिर झुका कर कहा " हुजूर इस नाचीज को दार्ता कहते है।" तो त्रिवेल ठहाका लगाकर हंस पडा और बोला "दार्ता इस तरह से मायूस नहीं होते। यह ठीक है कि शाही सेना में फ्रांस के चुने हुए

बहादुरों को ही जगह दी जाती है और तुम्हें एक बात और भी शायद मालूम ना हो कि इस सेना में सम्राट खुद बहादुर लोगो की परीक्षा लेते है और खुद ही भरती करते है। इस बात को तुम अच्छी तरह जान गए होगे कि अगर शाही सेना में भरती होना है तो पहले सम्राट को अपनी बहादुरी का सबूत देना होगा और फिर दो साल किसी सेना में भरती होकर अपनी बहादुरी को दिखाना होगा। इतना सब कुछ करने के बाद ही तुम शाही सेना की तिलंगी सेना में स्थान पा सकोगे। वैसे है तो कठिन ही परन्तु अगर आदमी के अन्दर लगन और मेहनत करने की क्षमता हो तो फिर आदमी क्या कुछ नहीं कर सकता?"

मोस्यो त्रिवेल की बातें सुन पहले तो दार्ता निराशा हुआ लेकिन फिर खुश भी। उसके चेहरे के भावों से पता चलता था कि वह किसी उलझन में फंसा हुआ है। यह देखकर मोस्यो त्रिवेल बोले "देखो दार्ता इतने परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। मैं पहले ही कह चुका हूं कि तुम मेरे अपने बेटे के समान हो। मैं तुम्हें निराश भी नहीं करना चाहता। फिर तुम तो मेरे मित्र के लड़के हो। यहां से तो कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटा है। हां तिलंगी पलटन में शामिल होने के लिए पहले तुम्हें फौजी तालिम लेनी होगी। हां एक बात और फौजी तालिम में भी हर किसी व्यक्ति को नहीं लिया जाता इसमें बड़े-बड़े अमीर घरानों के लड़के भरती होने के लिए तरसते है क्योंकि इस तालिम में पैसों की जरूरत नहीं होती वरन अपनी बहादुरी, निडरता और चुनौतियों की जरूरत होती है। लेकिन तुम चिन्ता मत करो मेरी इतनी पहुंच है कि मैं तुम्हें इस फौजी तालिम में भरती करा दूंगा। जहां तुम्हें अपनी बहादुरी दिखाने का मौका मिलेगा और अपनी मेहनत, ईमानदारी और बहादुरी के बल पर तुम शाही तिंलगों की फौज का मान बढ़ाओगे।"

यह सुन दार्ता को थोडा धीरज तो बंधा लेकिन निराशा अधिक हुई। वास्तव में अभी तक वह गांव का ही बहादुर था नगर की चकाचौंध तो अभी तक उसने देखी ही नहीं थी और यहां के पैंतरेबाजी से वह अनभिज्ञ था। दार्ता का चेहरा उतर गया। उसे लगा कि जिस

काम के लिए वह घर से चला था वह पूरा नहीं हो सकता। उसे अभी बहुत कुछ सीखना है। वह गहरी सांस छोड़कर बोला "क्या करूं कुछ समझ नहीं आ रहा है? अब पता चला कि मैंने वह चिट्ठी खोकर अपना कितना बड़ा नुकसान किया है? काश वह चिट्ठी चोरी ना गई होती तो शायद मैं इतना निराश न होता।"

मोस्यो त्रिवेल दार्ता की तरफ आश्चर्य भरी निगाहों से देख रहा था। जब उसने सुना कि दार्ता किसी चिट्ठी के बारे में अफसोस जाहिर कर रहा है तो वह उसे देखता ही रह गया और बोला "चिट्ठी! कैसी चिट्ठी? अभी तुम कह रहे थे कि तुम्हारे पास से चिट्ठी चोरी हो गई। मैं समझा नहीं कि ऐसा उस चिट्ठी में क्या था जो तुम इतने परेशान हो रहे हो?" इस पर दार्ता ने बताया कि वह चिट्ठी उसे उसके पिता ने दी थी और आपके नाम ही थी। इस पर त्रिवेल का गुस्सा भड़क उठा और बोला "क्या कहा? मेरे दोस्त ने मेरे नाम चिट्ठी दी थी और वह चोरी हो गई। भला यहां इतनी हिम्मत किसमें है जो मेरे नाम की चिट्ठी को चुरा ले?"

जब दार्ता ने देखा कि लोहा गर्म है और अब इनके सामने सारी सच्चाई बयान कर देनी चाहिए तो वह बोला "जब मैं यहां आया तो एक सराय के बाहर खड़ा था तभी एक सरदार और उसके सिपाहियों ने मुझसे युद्ध किया जिससे मैं बेहोश हो गया। उसी हालत में उन्होंने मेरी तलाशी ली और वह चिट्ठी मेरी जेब से निकाल भाग गए।" इस पर मोस्यो त्रिवेल ने अफसोस जाहिर किया और बोले "अच्छा दार्ता यह बताओ कि जिससे तुम्हारा युद्ध हुआ उसे तुम पहचान तो लोगे। जिस सरदार के बारे में अभी तुमने अभी तुमने बताया क्या उसके दाहिने गाल पर घाव का निशान था?"

इस पर दार्ता बोला "हुजूर उस सरदार को तो मैं कभी नहीं भूल सकता क्योंकि उसने काफी समय तक मेरा और मेरे घोड़े का उपहास किया था। मैं सब कुछ सहन कर सकता हूं परन्तु अपना उपहास सहन नहीं कर सकता। हां मुझे अच्छी तरह याद है कि उसके दाहिने गाल पर

काफी लम्बा घाव का निशान था और वह दैत्य सराय की खिड़की में से बैठा-बैठा हंस रहा था।" उसका नाम आते ही दार्ता की बाजू फड़क उठी। उसे गुस्सा आ रहा था गुस्से के कारण उसका चेहरा तमतमा उठा और वह कांपने लगा। फिर बोला "हुजूर अगर वह अब एक बार मुझे मिल जाएं तो मैं उसे मजा चखा सकता हूं। देखना मैं इस अपमान का बदला अवश्य लूंगा।"

दार्ता गुस्से से हॉफ रहा था ऐसा लग रहा था कि अगर वह सरदार दार्ता को इस समय मिल जाएं तो वह उसको कच्चा चबा जाएगा। उसने मोस्यो त्रिवेल को बताया "मैं भी बहुत बहादुरी के साथ लड़ा परन्तु वे संख्या में पांच थे और मैं अकेला। क्या करता? फिर दार्ता ने मोस्यो त्रिवेल को सारी घटना विस्तार से बताई और कहा कि जब मैं होश में आया तो मैंने देखा कि उस सरदार से एक अंग्रेज महिला बात कर रही थी। तभी उस सरदार ने एक सन्दूक उस महिला को दिया और कहा कि इस सन्दूक में बहुत महत्वपूर्ण कागज है परन्तु इस सन्दूक को इंग्लैण्ड जाकर की खोलना। फ्रांस की धरती पर इस सन्दूक को खोलने की कोशिश मत करना। मुझ तो वह अंग्रेज महिला भी चालबाज लगती है।" वह हाथ जोड़कर मोस्यो त्रिवेल से बोला "हुजूर आप शाही सेना में तो भरती नहीं करा सकते परन्तु तुम उसका पता तो मुझे दे ही सकते हो आपकी बड़ी कृपा होगी। बस उस सरदार का नाम बता दीजिए ताकि मैं अपने अपमान का बदला ले सकूं"

मोस्यो त्रिवेल का शक यकीन में बदल गया और वह गम्भीर हो गए और बोले "दार्ता अच्छा है तुम उस सरदार का नाम पता नहीं पूछो क्योंकि वह यहां का सबसे क्रूर आततायी सरदार है उससे सभी डरते है। सुनो तुम उस सराय वाली घटना को भूल जाओ तो अच्छा है। और हां जो बात अभी तुमने उसके बारे में मुझसे कही वह बातें किसी और से मत कहना इसमें तुम्हारी ही भलाई है। मैं तुम्हें बहुत चाहने लगा हूं। मैं नहीं चाहता कि यहां आकर तुम्हारा कोई भी अहित हो क्योंकि अगर तुमने उससे मिलने की जरा भी कोशिश की तो तुम मुसीबत में फंस



जाओगे फिर मैं भी तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता। अच्छा है अगर तुम्हें कभी वह मिल भी जाएं तो तुम मुंह फेरकर निकल जाना। समझ गए ना मेरा मतलब। तुम उससे झगड़ा मोल मत लेना।"

सरदार के हुलिए के बारे में सुनकर मोस्यो त्रिवेल सोच में पड़ गया क्योंकि इस सरदार को मोस्यो त्रिवेल खूब अच्छी तरह जानता था। उसके चेहरे पर चिन्ता की रेखाएं दौड़ गई। फिर दार्ता से बोला "देखो दार्ता चिन्ता की कोई बात नहीं है। तुम अभी जाओ और हां मैं एक चिट्ठी लिख कर तुम्हें दे देता हूं यह तुम्हारे बहुत काम आएगी।" ऐसा कहकर मोस्यो त्रिवेल ने एक चिट्ठी लिखी और उस पर उन्होंने अपनी मुहर लगा दी साथ में एक प्रमाण पत्र भी दिया।

मोस्यो त्रिवेल बोला "यह चिट्ठी हर संकट के समय में तुम्हारी मदद करेगी। मैंने यह प्रमाण पत्र भी तुम्हें दे दिया है इससे यह मालूम होगा कि तुम मेरे बहुत ही नजदीकी हो।" जैसे ही दार्ता चिट्ठी लेकर बाहर जाने लगा तो अचानक उसकी नजर खिड़की पर पड़ी तो वह गुस्से से लाल हो गया मोस्यो त्रिवेल ने जब देखा तो वह बोला उठा "क्यों दार्ता अचानक तुमको ये क्या हो गया? अचानक ही यह गुस्सा क्यों? तो वह उत्तेजित हो उठा और बोला "तो वह आखिर मिल ही गया। मैं अभी कह रहा था ना कि उस शैतान को मैं कभी नहीं भूल सकता। वह रहा वह दैत्य। मैं भी देखता हूं कि अब वह बचकर कैसे जाएगा? अब मैं उसका खून पी जाऊंगा।" इतना कहकर वह तेजी से भागा।

हालांकि उस सरदार को मोस्यो त्रिवेल ने भी देख लिया था परन्तु वह चुप था क्योंकि वह जानता था कि इसका नतीजा क्या होगा? जब दार्ता उसके पीछे भागा तो त्रिवेल ने उसे पकड़ लिया फिर काफी समझाने की कोशिश की लेकिन दार्ता पर तो जुनून सवार था इसलिए वह मोस्यो त्रिवेल की पकड़ से मुक्त भाग निकला।

फिर त्रिवेल बोला "क्यों दार्ता ऐसी तुमने कौन सी चीज देखी है जो मुझे भी भूले जा रहे हो। आखिर कौन है?"

दार्ता जल्दी में था वह बाहर निकलते हुए बोला "हुजूर वही आदमी जिसने मेरे साथ युद्ध किया था और महत्वपूर्ण चिट्ठी को चुरा लिया।"

बाहर निकलकर जैसे ही दार्ता सीढ़ियों पर से नीचे उतर रहा था

कि वह एक सिपाही से टकरा गया यह धक्का इतना तेज था कि वह सिपाही अपने आपको नहीं सम्हाल सका और वह जमीन पर गिर पड़ा तभी जल्दी से दार्ता ने उस सिपाही को उठाया और बोला "माफ करना भाई मैं जल्दी में हूं। मैंने देखा ही नहीं कि सामने तुम खड़े हो।"

दार्ता भागा जा रहा था परन्तु उस सिपाही ने उछलकर उसके कुर्ते का गला पकड़ लिया। दार्ता इस तरह के अचानक हमले के लिए कतई तैयार नहीं था। दार्ता ने देखा कि यह सिपाही तो ऐथोस था जो अभी कुछ ही देर पहले मोस्यो त्रिवेल के कमरे में था। वह सोचने लगा अभी कुछ देर पहले तो यह बेहोश था और उसके पहले यह तलवार की मूठ थामे घावों के खून से लथपथ त्रिवेल के कमरे मे लाचार खड़ा था। दार्ता कुछ समझ नहीं पाया कि आखिर इसमें भी क्या रहस्य है। उसे याद था अभी कुछ देर पहले तो पार्थस एवं अरामिस की सहायता से उसने इसे हकीम के कमरे मे बेहोशी की हालत में लिटाया था। वह सोच ही रहा था कि ऐथोस ने उसे डांटकर कहा "मै जानता हूं कि तू मोस्यो त्रिवेल के कमरे से आ रहा है मुझे मालूम होता है कि तेरा दिमाग फिर गया है। तू ये मत समझना कि अकेला मैं ही बहादुर हूं या फिर मैं मोस्यो त्रिवेल का आदमी हूं इस तरह मुझे धक्का मार कर तू यहां से आसानी से नहीं जा सकता। लगता है तुझे कुछ तमीज सिखानी ही पड़ेगी क्योंकि शायद तुझे नही मालूम कि मैं शाही फौज में तिलंगा पलटन में से एक हूं। तू क्या जाने कि हम क्या चीज है?"

ऐथोस की बातें सुनकर दार्ता का गुस्सा और बढ़ गया परन्तु उसे उस सरदार के निकल जाने का डर था। वह नहीं चाहता था कि हाथ आए शत्रु को छोड़ दे। वह गुस्से से कांप उठा और बोला "कौन किसको तमीज सिखाएगा यह तो मैं अच्छी तरह जानता हूं परन्तु अभी मुझको जल्दी है अपने मुंह मिट्ठू मत बनो। एक बात और कभी भी सामने वाले को कमजोर नहीं समझना चाहिए अन्यथा बहुत बड़ा नुकसान हो जाता है। अगर इस समय मुझको जल्दी ना होती तो मैं तुमको अभी बता देता।"

दार्ता की बातें सुन ऐथोस उसको देखता रह गया। उसने सोचा कि यह नवयुवक वास्तव में बहादुर है क्योंकि इस नगर मैं तो उन्हें सभी जानते है अतः यह इस नगर का जवान भी नहीं है। थोड़ी देर को उसका घमण्ड चूर-चूर हो गया फिर ऐथोस बोला "ठीक है भाई तुम जिस जरूरी काम के लिए निकले हो करो मैं अभी तुम्हें रोकूंगा नहीं। परन्तु तुमने चुनौती देने का साहस किया है अगर तुम वीर हो और तुममें हिम्मत है तो पादरियों के मठ के पास वाले मैदान में आज दोपहर बारह बजे मिलना वहां देखूंगा कि तुम कितने बड़े बहादुर हो? ठीक बारह बजे। मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा।"

दार्ता के लिए तो चुनौती खेल था वह तो चाहता भी यही था। वह बोला "ठीक है मैं अभी तो जा रहा हूं लेकिन मुझे तुम्हारा समय याद रहेगा। मैं तुम्हें इन्तजार भी नहीं कराऊंगा। कहीं तुम ही कायरों की तरह पीठ दिखाकर भाग मत जाना। मैं ठीक बारह बजे पादरियों के मठ के पास वाले मैदान में पहुंचूंगा अब वहीं निपटा जाएगा।" कहते हुए दार्ता दरवाजे के पास आ पहुंचा।

जैसे ही वह दरवाजे पर पहुंचा तो उसने देखा कि पार्थस खड़ा चौकीदार से बातें कर रहा था। वे दोनों सीढ़ियों पर खड़े थे और दार्ता को इन्हीं सीढ़ियों पर से उतरना था। वे दोनों इस तरह खड़े थे कि कोई तीसरा आदमी नीचे नहीं आ सकता था। वे बातों में मशगूल थे। वे लोग हंस-हंस कर बातें कर रहे थे। हां उन दोनों के बीच में इतना फासला था कि एक आदमी अवश्य निकल सकता था। पार्थस का दाहिनां हाथ चौकीदार के कन्धे पर था। दार्ता ने उनके बीच से निकलने की कोशिश की वह कामयाब तो रहा परन्तु उसकी तलवार की मूठ से पार्थस का कुरता फट गया जिससे पार्थस क्रोध से पागल हो उठा और बोला "बदतमीज, बेवकूफ कहीं के! गंवार कहीं के! क्या अन्धे हो गए हो? अरे हमसे कह भी सकते थे हम हट जाते। लगता है इसको अपनी जवानी पर गर्व है। देखकर चलता ही नहीं।"

दार्ता सोचने लगा कि लगता है यहां बहादुर कोई नहीं वरन सबके

सब ही पागल है। वह बोला "देखो अन्धा कहकर मुझे गाली मत दो असल में मैं बहुत जल्दी में हूं अन्यथा बता देता कि अन्धा मैं नहीं तुम हो। अगर सामने से आदमी आ रहा हो तो रास्ते में खड़े आदमी को तुरन्त हट जाना चाहिए अन्यथा उससे बड़ा बेवकूफ मैं किसी को नहीं समझता।"

इतना सुनकर पार्थस क्रोध से कांप उठा और शेर ही तरह दहाड़ उठा "बदतमीज तू अभी यह नहीं जानता कि तू किसके सामने खड़ा है अन्यथा तू बोलने की हिम्मत भी ना करता? अभी तक जो भी तूने बका मैंने सुना अब और नहीं। अब अगर जरा भी बोला तो मैं तेरी जुबान खींच लूंगा। आखिर तूने अपने आपको समझा क्या है? तुझे इतनी भी तमीज नहीं कि शाही फौज के तिलंगे से किस तरह बातें की जाती है? लगता है तुझे तमीज सिखानी ही पड़ेगी।"

दार्ता भी अकड़ गया और बोला "बस शाही फौज के तिलंगे क्या बन गए आम आदमी को कीड़े-मकोड़े समझा लिया? परन्तु तुम भूल रहे हो कि कोई-कोई कीड़ा भी इतना जहरीला होता है कि उसका काटा आदमी पानी भी नहीं मांगता। अगर तुम अपनी बहादुरी दिखाना ही चाहते हो तो थोड़ी देर बात देख लूंगा अभी मुझे जल्दी है अन्यथा अभी धूल चटा देता।"

अच्छा अपनी ताकत पर बड़ा घमन्ड है। अगर तू मुझसे लड़ना ही चाहता है तो ठीक एक बजे शाही बाग के सामने मिलना तेरी यह हसरत भी पूरी कर दूंगा।"

"ठीक है, ठीक है अगर तुम ऐसा ही चाहते हो तो ऐसा ही सही। तुम्हें इन्तजार नहीं करना पड़ेगा। मैं ठीक एक बजे शाही बाग के सामने मिलूंगा।" कहकर दार्ता बाहर सड़क पर आ गया और उसकी तरफ दौड़ने लगा जिस तरफ उसने दुश्मन को जाते हुए देखा था परन्तु उसे देरी हो गई थी। उस आदमी ने शायद दार्ता को देख लिया था वह दार्ता की आंखों में धूल झौंक कर भाग लिया था। दार्ता ने काफी कोशिश की कि उसे शत्रु मिल जाए। उसने उसे खोजने का काफी प्रयत्न किया परन्तु

नाकायाब रहा। अब वह चारों तरफ देखने लगा।

दुश्मन के ना मिलने पर दार्ता हाथ मलकर रहा गया। हाथ आया दुश्मन उससे छूट चुका था। इस बात पर उसे काफी अफसोस हुआ। अब वह निराश होकर लौट ही रहा था कि वहीं उसे अरामिस कुछ साथियों के साथ मजाक करता मिला वह भी इस शाही फौज के तिलंगों में से एक था। इसको सबसे पहले उसने मोस्यो त्रिवेल के कमरे में देखा था वह उसे फौरन पहचान गया। क्योंकि मोस्यो त्रिवेल पहले इससे काफी नाराज था। जब अरामिस ने उसे देखा तो फौरन पहचान गया वह उससे नाराज था क्योंकि उसी के सामने मोस्यो त्रिवेल उसे डांट रहे थे इस बात से उसे काफी शर्मिन्दगी थी क्योंकि तब यह लड़का भी वहीं मौजूद था। वह उससे बदला लेने के लिए लालायित था वह उसको घूर रहा था।

अरामिस खड़ा-खड़ा अन्य सिपाहियों से बात कर रहा था। जब उसने दार्ता को अपने नजदीक देखा तो वह बदले की आग में जल बैठा लेकिन दार्ता के मन में ऐसा कुछ भी नहीं था वह तो उसको देखकर खुश हुआ क्योंकि वह अरामिस से जान पहचान बढ़ाना चाहता था। वह इस ताक में था कि अरामिस से जान पहचान कैसे बढ़ाई जाए? तभी अरामिस की पीछे वाली जेब से एक रूमाल नीचे गिर गया जिसे देख दार्ता को लगा कि अब इस रूमाल के जरिए ही शायद अरामिस के पास जाया जा सकता है। उसने रूमाल उठाया और अरामिस से बोला "महाशय शायद ये आपका रूमाल नीचे गिर गया है आपको याद नहीं है लीजिए।"

जैसे ही दार्ता ने रूमाल उठाकर अरामिस को देना चाहा तो अरामिस बजाय प्रसन्न होने के गुस्से से लाल हो गया वह दार्ता को खा जाने वाली निगाहों से घूरने लगा। दार्ता को लगा कि जैसे उससे कोई भयंकर अपराध हो गया। वैसे वास्तव में दार्ता से बहुत बड़ा अपराध हो गया था। लेकिन अनजाने में। वास्तव में अरामिस अपने साथी सिपाहियों के साथ मजाक कर रहा था तभी उसने चुपके से एक सिपाही

की जेब से रूमाल निकाल लिया और उसे अपनी जेब में रखने लगा। परन्तु वह नीचे गिर गया दार्ता ने वह रूमाल उठाकर अरामिस को दिया तो उसकी पोल खुल गई अब सारे सिपाही अरामिस पर हंस रहे थे और वे हसंते-हसंते चले गए। इस समय अरामिस का मुंह देखने योग्य था। जब सारे सिपाही चले गए तो अरामिस दार्ता से बोला "बदतमीज लड़के तुमसे रूमाल उठाने के लिए किसने कहा था? जानते हो सिर्फ तुम्हारे कारण आज में कितना बेइज्जत हुआ हूं?"

दार्ता अरामिस की तरफ देखता ही रह गया उसने तो जान-पहचान बढ़ाने के लिए ही रूमाल उठा कर दिया था उसे पता नहीं था कि अरामिस पर इसका उल्टा असर पड़ेगा। वह बोला "अरे भाई ऐसा मैंने क्या कर दिया जो आप इतना नाराज हो रहे है?"

दार्ता की बातें सुनकर अरामिस का गुस्सा और भड़क गया और वह गुर्राकर बोला "गलती करके पूछ रहे हो कि मैंने क्या किया? रहोगे गंवार के गंवार! तुझमें अक्ल तो है ही नहीं। क्या हुआ? यह समझने की अक्ल है तुममें।"

गंवार शब्द सुनकर दार्ता को बहुत बुरा लगा। दार्ता आज पहली बार यह शब्द अपने लिए सुन रहा था। उसका जी चाहा कि अभी अरामिस का गला पकड़कर कहे "गधे कहीं के! दो दिन से शहर में रहकर मुझ पर धौंस जमा रहा है।" फिर भी वह शान्ति के साथ बोला "देखो भाई मैंने कोई अपराध नहीं किया है जो तुम उल्टा सीधा बोले जा रहे हो। आखिर तुमने अपने आपको समझ क्या रखा है?"

अरामिस बोला "अच्छा एक तो गलती की और ऊपर से गुर्रा रहे हो। तू मुझे जानना ही चाहता है कि मैं कौन हूं तो सुन, मुझे यहां की सारी जनता जानती है कि मैं कौन हूं? अगर तू भी जानना चाहता है तो आज दोपहर को दो बजे मोस्यो त्रिवेल की कोठी के सामने मिलना। वहीं मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं क्या बला हूं?"

●●



तीन

दार्ता काफी परेशानी में पड़ गया था क्योंकि उसने सम्राट की शाही सेना के तीन तिलंगो से झगड़ा मोल ले लिया था और उनमें से हर एक से उसे आज ही हर एक घंटे के बाद दंगल लड़ना था। लेकिन समस्या थी कि पेरिस में वह नया था न तो वह पेरिस में किसी को जानता था और न ही कोई उसे जानता था। और दंगल का यह नियम होता है कि कम से कम एक व्यक्ति साथ में अवश्य होना चाहिए। पूरे पेरिस में दार्ता को तो मोस्यो त्रिवेल ही जानता था। वही उसके पिता का पुराना मित्र था परन्तु दंगल तो उसे तीन तिलंगो के साथ लड़ना था। अब समस्या यह थी कि वह किसे अपना परिचित बनाए जो उसके साथ दंगल के मैदान तक पहुंच सके और उन दोनों के बीच मध्यस्तता का काम कर सके? हार कर दार्ता ने अकेले ही दंगल लड़ना उचित समझा। कुछ ही देर बाद वह मैदान में था उसने देखा कि ऐथोस उसके इन्तजार में इधर से उधर टहल रहा है। दार्ता के वहां पहुंचने के कुछ देर बाद मठ के घडियाल ने बारह का घंटा बजाया। दार्ता ने ऊपर वाले को धन्यवाद दिया कि वह सही समय पर वहां पहुंच गया अन्यथा वह ऐथोस से दंगल करने में चूक जाता। दंगल का नियम था कि जो व्यक्ति समय से नहीं पहुंचता उसकी हार हो जाती है।

दार्ता को आया देख ऐथोस मुस्कुरा पड़ा। दार्ता ने देखा कि ऐथोस के घाव अभी भरे नहीं थे उसके घावों से कहीं कहीं अभी भी खून बह रहा था। परन्तु वह उसकी हिम्मत की दाद भी दे रहा था कि ऐसी हालत में भी वह दंगल लड़ने की हिम्मत रखता है। अभी भी वह अपने घावों पर पट्टी बांधे हुए था। फिर ऐथोस बोला "देखो भाई दंगल में अभी कुछ

देर हो जाएगी क्योंकि मैंने जिन दो मित्रों को अपनी तरफ से पंच बनाया है वे लोग अभी नहीं आए है। ऐसा नहीं है कि वे लोग आएंगे नहीं वरन अभी आते ही होंगे। इसलिए दंगल में थोड़ी देर हो जाएगी।"

जब ऐथोस ने देखा कि दार्ता तो अकेला ही है तो वह व्यंग्य से मुस्कुरा पड़ा और कटाक्ष करते हुए बोला "क्यों तुम्हारे पंच कहां है? लगता है इस इतने बड़े नगर में तुम किसी से सम्बन्ध बनाना ही नहीं सीखे हो।"

इस बात का दार्ता को बहुत बुरा लगा और बोला "ऐसी बात नहीं हैं वरन मैं इस पेरिस नगर में नया हूं अभी कुछ दिनों पहले ही यहां आया हूं इसलिए यहां मेरा कोई दोस्त नहीं है जिसे मैं अपना पंच बना सकूं। यहां तो मैं सिर्फ मोस्यो त्रिवेल को ही जानता हूं। लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है जो तुम्हारे पंच होंगे वहीं मेरे। मैं उन्हीं की मध्यस्तता स्वीकार कर लूंगा।"

अभी दार्ता और ऐथोस में बातें चल ही रही थी कि पार्थस वहां आ पहुंचा। उसके वहां पहुचने पर ऐथोस ने उसका बड़ी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। दार्ता आश्चर्यचकित रह गया। उसे समझ नहीं आया कि उसके साथ यह क्या हो रहा है? वह सोचने लगा कि लगता है वह किसी चक्रव्यूह में फंस गया है। फिर वह ऐथोस से बोला "क्यों भाई क्या तुम्हारे यहीं पंच है?"

तब तक अरामिस भी मुस्कुराता हुआ वहां आ पहुंचा। दोनों को आया देख दार्ता और भी अचम्भित हुआ। उसकी समझ नहीं आ रहा था कि आखिर ये सब हो क्या रहा है? वे तीनों दार्ता की स्थिति पर हंस रहे थे। तभी ऐथोस बोला "देखो मेरे दोनों पंच तो आ गए है। नियम के अनुसार अगर सचमुच तुम्हारे पंच नहीं है तो तुम अपनी इच्छानुसार एक पंच ले सकते हो या फिर अगर तुम्हें इनसे कोई आपत्ति है तो इनमें से एक पंच निकल भी सकता है। अब यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।"

दार्ता पार्थस और अरामिस को देख थोड़ा चकराया परन्तु फिर सम्हल गया। दार्ता की हरकत देख कर तीनों मुस्कुरा रहे थे। दार्ता कुछ

बोलता इसके पहले ऐथोस बोला "देखो भाई तुम्हें शायद मालूम नहीं कि हम तीनों एक साथ है अर्थात हमेशा हम तीनों साथ ही रहते है। जहां हममें से एक आदमी जाएगा वहां असम्भव है कि बाकी दो ना पहुंचे। इस बात की सन्तुष्टि के लिए तुम पेरिस में कहीं भी पूछ सकते हो। ऐथोस, पार्थस और अरामिस को अलग-अलग कोई नहीं कर सकता। जब हम तीनों एक साथ ही रहते है तो यहां हमें तीन तिलंगो के नाम से जाना जाने लगा। अब तो हम सम्राट की शाही सेना में तीन तिलंगों के नाम से मशहूर है।"

जब पार्थस और अरामिस को यह पता चला कि ऐथोस से दंगल लड़ने वाला और कोई नहीं वरन दार्ता है तो उन्हें बहुत हैरानी हुई। वह अचरज में पड़ गए कि एक आदमी ने तीन-तीन चुनौतियां एक ही दिन में स्वीकार कैसे कर ली? अवश्य ही यह नौजवान बहादुर होगा। उन्होंने ऐथोस से कहा "जिस नौजवान से अभी तुम्हारा दंगल होने वाला है उसी नौजवान से आज हमारा भी दंगल होगा और यह चुनौती उसने खुद स्वीकार की है।"

अरामिस बोला "देखो तुम्हारे साथ बारह बजे है तो पार्थस के साथ इसका दंगल एक बजे है और फिर मेरे साथ इसी नौजवान का दंगल दो बजे है। "क्यों क्या मैं सच कह रहा हूं?"

दार्ता बोला "हां यह सही है लेकिन अभी एक बजे से पहले मेरा दूसरा दंगल नहीं है वरन एक बजे से पहले मुझे तुममें से एक आदमी से निपटना है। जब तुम्हारी बारी आएगी तब देखा जाएगा।"

जब तीनों लोगों को यह पता चला कि वे सभी दार्ता से लड़ना चाहते है तो उन्होंने एक दूसरे से पूछा कि क्या कारण है जो दार्ता से लड़ना चाहते है? फिर तीनों ने अपने अपने कारण बताए।

वे बातें कर रहे थे और दार्ता को क्रोध आ रहा था कि आखिर इन तीनों ने मुझे समझ क्या रखा है? वह बोला "देखो मैं बारी-बारी से तुम तीनों से ही लडूंगा। मुझे तुम कायर मत समझना। मेरी थोड़ी सी उम्र जानकर तुम भूल मत कर बैठना कि मैं कुछ हूं ही नहीं। मैं भी एक वीर



पिता की बहादुर सन्तान होने गर्व करता हूं। हां जब दो वीरों में लड़ाई होती है तो एक का तो अन्त होता ही है। हां अब समय के अनुसार मुझे ऐथोस से लड़ना है" फिर उसने पार्थस एव अनामिस से कहा "देखो

भाई चिन्ता मत करो तुम्हारी बारी आने पर मैं तुमसे भी अवश्य लड़ूंगा। पर अगर मैं ऐथोस से लड़ने के बाद मर गया तो मुझे बेहद दुःख होगा कि मैं आप दोनों से नहीं लड़ सकूंगा। इसलिए मैं अभी से तुमसे मॉफी मांगे लेता हूं। हां अगर जिन्दा रहा तो तुम्हारी हसरत जरूर पूरी करूंगा।"

फिर वह ऐथोस से बोला "अब तुम्हारे दो पंच भी आ चुके है और मैं भी तैयार हूं आशा है अब तुम भी तैयार होगे।"

ऐथोस बोला "ठीक है! मैं भी दंगल करने के लिए तैयार हूं" इतना कहकर ऐथोस ने अपनी तलवार निकाल ली। दार्ता तो तैयार था ही उसने भी फौरन अपनी तलवार निकाल ली।

पार्थस व अरामिस दूर खड़े होकर देखने लगे। ऐथोस व दार्ता दोनों एक दूसरे पर वार करने लगे, दोनों ही बहादुर थे कभी पलड़ा दार्ता का भारी रहता तो कभी ऐथोस का। ऐथोस ने शायद गलत सोचा था कि दार्ता बच्चा है यह क्या लडेगा? अचानक पार्थस ने सामने की तरफ देखा तो भौचक्का रह गया। सामने से कार्डिनल के कुछ सिपाही अपने सरदार गुसाक के साथ दौड़े चले आ रहे है। उन्हें देख पार्थस ने ऐथोस से कहा "ऐथोस जल्दी से अपनी तलवार म्यान के अन्दर डाल लो। देखो सामने से कार्डिनल के सिपाही इसी तरफ आ रहे है।" परन्तु दार्ता उनकी बात को नहीं समझ पाया और वह उन तीनों की तरफ देख रहा था।

इतने ऐथोस कुछ समझ पाता या अपनी तलवार को म्यान में रख पाता तब तक कार्डिनल के सिपाही उसके बहुत नजदीक पहुंच गए थे। अब काफी देर हो चुकी थी अब किया भी क्या सकता हैं क्योंकि उन्हें लड़ते हुए कार्डिनल के सिपाही देख चुके थे? वे सड़क पर दंगल लड़ रहे थे अभी दो दिन पहले भी ये तीन तिलंगे कार्डिनल के सिपाहियों से सड़क पर दंगा फसाद करके उनसे भिड़ बैठे थे। वैसे भी ऐथोस इन सिपाहियों से चिढ़ा था। गुसाक नजदीक आ पहुंचा व गरज कर बोला "तुम्हें अब भी अक्ल नहीं आई। तुम लोगों ने फिर सड़क पर मारपीट शुरू कर दी। तुम्हारी नजर में सम्राट की आज्ञा की कोई कीमत नहीं है। तुम मानोगे

नहीं।"

गुसाक की बातें सुनकर वे तीनों ही भड़क उठे। वैसे भी गुसाक से तो तीनों ही बहुत चिढ़े हुए थे अभी दो ही दिन पहले ऐथोस गुसाक के वार से ही घायल हुआ था उसके घाव हरे हो चुके थे, उसकी तलवार गुसाक पर चलने को मतवाली हो उठी। फिर भी वह लापरवाही से ऐसे बोला जैसे उसने गुसाक की बात सुनी ही नहीं "महाशय हम तो ऐसे ही लड़ रहे थे। आप जरा हट जाइए और पार्थस एवं अरामिस के पास खड़े हो जाइए हमें जरा लड़ लेने दीजिए फिर हम चले जाएगें हमें भी हाथ खोल लेने दीजिए और तुम भी दूर खड़े होकर तमाशा देखिए।"

उसकी बातें सुनकर गुसाक का गुस्सा और बढ़ गया वह ऐथोस को डांटकर बोला "जानते हो तुम किसके सामने खड़े हो और क्या बकवास कर रहे हो? तुम्हारी भलाई इसी में है कि अपनी तलवार म्यान में डाल लो और यहां से चुपचाप चले जाओ वरना.....। वरना..... तुम्हें।" गुसाक के दांत भीच गए।

उसे ऐसा करते देख अरामिस व्यंग्य से मुस्कुरा पड़ा और उसका मजाक उड़ाते हुए बोला "माफ कीजिए हमें अच्छी तरह पता है कि हम किसके सामने खड़े है? परन्तु तुम यह क्यों भूल जाते हो जहां तुम सम्राट के एक मामूली नौकर हो वहीं हम सम्राट की शाही सेना के सिपाही है और हम तीनों तिलंगे के रूप में प्रसिद्ध है। साहब हमसे मोस्यो त्रिवेल ने ही कहा है कि हम स्वतन्त्र है कहीं भी किसी से भी लड़ सकते है और आप हमें अपने उपदेश दे रहे है। हम आपसे तकरार नहीं चाहते है अच्छा है कि आप यहां से तशरीफ ले जाए अन्यथा.....।"

उन तीनों को उल्टा सीधा बोलते देख गुसाक को और भी गुस्सा आया। वास्तव में ये तीनों चाहते भी यहीं थे कि गुसाक का गुस्सा और बढ़ जायं ताकि इसकी अक्ल ठिकाने लगाई जायं। अब गुसाक बोला "देखो तुमने काफी कह लिया। लगता है तुम लोग ऐसे नहीं मानोगे। तुममें शाही सेना के तिलंगे होने का घमण्ड बहुत है। मैं फिर कहता हूं चुपचाप चलो जाओ अन्यथा एक-एक आदमी को सबक सिखाना ही

पड़ेगा।"

पार्थस खड़ा-खड़ा मुस्कुरा रहा था जबकि दार्ता कभी गुसाक की तरफ देखता जो गुस्से में आग बबूला हो रहा था और कभी उन तीनों की तरफ देखता जो आपस में आंख चलाकर मुस्कुरा रहे थे। तभी ऐथोस बोला "क्यों तुमनें अपने आपको समझ क्या रखा है? हम भी तुमसे कम नहीं है। तुमनें हमें समझ क्या रखा है? तुम तो यही समझे बैठे हो कि हम डर कर भाग जाएंगे और तुम हमारे ऊपर जीत के झंडे गाड़ दोगे फिर सम्राट से नमक मिर्च लगाकर अपने सैनिकों की तारीफ में पुल बांध दोगे। बहुत चल गई तुम्हारी दादागीरी परन्तु अब और नहीं चलने देंगे। हम भी तो देखे कि तुम कर क्या लोगे? हमें मालूम है कि तुम्हारे पास आठ सिपाही है और हम तीन है परन्तु इनकी संख्या पर इतना गुरूर मत करो हम तीन भी इनके ऊपर भारी है। अरे उस दिन तो हमें धोखे से मारा था आज अगर तुमने आंखे दिखाई तो तुम्हारे सिपाहियों की आंखे निकाल लूंगा। क्यों इन्हें दुनिया देखने से भी वंचित कराना चाहते हो? अगर तुम्हारा यही अरमान है कि हम तुमसे लड़े तो उस अरमान को मन से मत रखो और मैदान में आ जाओ फिर देखो किसके खून से धरती लाल होती है? कायर कहीं के?"

कुछ देर तक तो गुसाक सन्न रह गया परन्तु वह भी चुप नहीं रह सका परन्तु उसने उन तीन तिलंगों के बारे में काफी कुछ बहादुरी के चर्चे सुन रखे थे। फिर बोला "देखो ज्यादा बढ़ बढ़कर बात मत करो। कभी भी गरजने वाले बादल बरसते नहीं है।" ऐथोस के साथ-साथ पार्थस एवं अरामिस ने भी तलवार निकाल ली। दार्ता असमन्जस में पड़ गया। उसकी समझ नहीं आया कि ऐसी परिस्थिति में आखिर वह क्या करे? हालांकि उसे तीनों से लड़ना है परन्तु ये तीनों मोस्यो त्रिवेल के सैनिक है और दार्ता मोस्यो त्रिवेल को बहुत चाहने लगा था। उसने तय किया लड़ाई तो बाद में देखी जाएगी फिलहाल तो उसे तीन तिलंगो का ही साथ देना चाहिए फिर वह ऐथोस से बोला "भाई ये आठ है तो तुम तीन नहीं चार हो मैं भी तो तुम्हारे साथ हूं।"



दार्ता की बातें सुनकर ऐथोस चौक पड़ा। कहां तो खुद हम ही इससे लड़ना चाहते थे और अब दार्ता ही हमारा साथ देने के लिए तैयार है। उन तीनों ने दार्ता को समझाया कि वह इस लड़ाई में भाग ना ले

और दूर खड़ा होकर तमाशा देखे लेकिन दार्ता नहीं माना। आखिर उन्होंने कह ही दिया कि जैसी तुम्हारी इच्छा। तब ऐथोस उसके कन्धे पर प्यार से हाथ रखकर बोला "वास्तव में तुम एक बहादुर नौजवान हो। मुझे तुम जैसा साथी पाकर अपने पर गर्व है।

अब उन तीन तिलंगो का चौथा साथी दार्ता भी युद्ध भूमि में उतर आया। दार्ता को देखकर गुसाक बोला "अरे क्यों तुम अपने बूढ़े मां-बाप का बुढ़ापा बिगाड़ना चाहते हो?" और अपने सिपाहियों से अकड़कर बोला "देखते क्या हो? इन चारों की तलवारें छीन लो इन्हें इन तलवारों पर बड़ा घमण्ड है इनका यह घमण्ड तोड़ दो और अच्छी मरम्मत कर दो ताकि ये आज से बाद में सिर उठाकर न जी सके। और हां इतना याद रखना कि इनमें से कोई मरने ना पाएं बस इन्हें इतना तड़फाना है कि लोग इनके ऊपर थूकें।"

वे चारों भी चौकन्नें थे पता नहीं गुसाक के सिपाही उन पर कब धावा बोल दे? लेकिन उनका यह भी एक प्रण था कि हम पहले वार नहीं करेंगे। पहले वार गुसाक के सिपाही ही करेंगे। अचानक गुसाक के सिपाही चीते की भांति दौड़े और उन तीनों से भिड़ गए। यही मौका था जब दार्ता अपनी बहादुरी के दो दो हाथ दिखाता। वास्तव में वह ऐथोस से तो लड़ ही नही रहा था परन्तु असलियत में लड़ाई तो अब हुई है। उसने देखा कि सिपाही और वे तीनों लड़ रहे है गुसाक एक तरफ नंगी तलवार लिए खड़ा है। तभी दार्ता गुसाक की ओर तलवार लेकर लपका परन्तु गुसाक भी तैयार था। वे दोनों आपस में भिड़ गए। दार्ता ने देखा कि गुसाक बड़ी बहादुरी से लड़ रहा है। वह पैतरे बदल-बदल कर दार्ता को पस्त करने की सोच रहा था परन्तु दार्ता भी कम नहीं था। दार्ता भी उछल-उछल तलवार चला रहा था और गुसाक उसके वार को निसफल बनाता जा रहा था। इसी दौरान गुसाक का वार चुक गया और वह धरती पर गिर पड़ा। दार्ता हांफ रहा था वह उसकी छाती पर चढ़ बैठा और तलवार की नोंक उसकी छाती पर लगा कर बोला।

"मैं चाहूं तो इसी क्षण तुम्हारा खून बहा सकता हूं लेकिन नहीं तुम



बहादुर हो और युद्ध का यही नियम है कि निहत्थे आदमी पर कभी वार नहीं करना चाहिए। अब अपने आदमियों से बोलो कि वे तलवार फैंक दें अन्यथा मुझे वह सब करने पर विवश होना पड़ेगा जो मैं करना नहीं

चाहता।"

उधर ऐथोस, अरामिस और पार्थस बड़ी बहादुरी के साथ लड़ रहे थे उन्होंने बाकी सिपाहियों को नाकों चने चबवा दिए। गुसाक के सारे सैनिक हार की स्थिति में जमीन से धूल चाट रहे थे। हां उनमें एक वेकरे नाम का सिपाही अब भी बहुत बहादुरी के साथ लड़ रहा था परन्तु उसके सभी साथी यहां तक कि उसका सरदार गुसाक भी जमीन पर पड़ा था। आखिर वे चार थे और वह अकेला। कहां तक लड़ता? परन्तु उसके अभी भी हौंसले पस्त नही हुए थे। तभी दार्ता दहाड़कर बोला "हरामजादे क्यों अपने पिल्ले को बेमौत मरवा रहा है? तू उससे बोल कि तलवार फैंक दे अन्यथा तुम्हें उठाने वाला भी नसीब नही होगा। हार कर उसने वेकरे से इशारे में कहा कि वह तलवार फैंक दे। बेकरे की इच्छा तो थी कि इन चारों को धूल चटा दे परन्तु जब उसने गुसाक सहित सभी सिपाहियों की यह दशा देखी तो उसने भी तलवार फैंक दी। इस लडाई में गुसाक के पांच सैनिक मारे गए। दार्ता और तिलंगे अपनी इस विजय पर फूले नहीं समा रहे थे। अब उन्होंने मरे हुए और घायल सैनिको को उठाया और मठ की सीढ़ियों के पास रख दिया और वे चारों मोस्यो त्रिवेल की हवेली की और भाग गए।

पादरी के मठ के पास इस लड़ाई को देखने वालों की भीड़ इकट्ठी हो गई। उन्होंने इस नए नौजवान की बहादुरी देखी जिसने सरदार को नीचे गिरा दिया था। थोड़ी ही देर में इसकी चर्चा पूरे नगर में फैल गई लोग तीन तिलंगे की प्रंशसा कर रहे थे साथ में दार्ता की बहादुरी के भी चर्चे थे। जब मोस्यो त्रिवेल को पता चला कि दार्ता सचमुच बहादुर है तो वह बहुत खुश हुआ। वास्तव में वह तो पहले ही चाहता था कि दार्ता शाही सेना में भर्ती होकर अपनी बहादुरी दिखाए। अब हर आदमी की जबान पर दार्ता की बहादुरी के चर्चे थे। उसने तभी सम्राट के पास जाने की ठानी और वह तैयार होने लगा। वह दार्ता को सम्राट की शाही सेना में तीन तिलंगे के रूप में देखना चाहता था।

मोस्यो त्रिवेल अपने तिलंगे से बहुत खुश था परन्तु उसने यह

खुशी जाहिर नहीं होने दी और ऐथोस, पार्थस और अरामिस को अपने पास बुलाया। साथ में दार्ता भी था परन्तु वह मोस्यो त्रिवेल का गम्भीर चेहरा देखकर घबरा गया और चुपचाप सिर झुका कर उन तीनों के पीछे खड़ा हो गया। त्रिवेल ने एक-एक बार उन चारों को देखा फिर बनावटी गुस्से से बोला "मैं मानता हूं कि तुम सम्राट की शाही सेना के सिपाही हो और तुम्हें कहीं भी कुछ करने का आदेश भी मैंने ही दिया था इसका मतलब यह नहीं कि तुम रास्ते में ही मरने-मारने पर उतारू हो जाओ। आज तुमने जिसके ऊपर वार किया था वे भी कार्डिनल के सिपाही थे और गुसाक तो उसका सरदार था। तुम्हें शर्म आनी चाहिए।" फिर त्रिवेल दार्ता से बोले "देखो अभी तुम इस नगर में नए-नए आए हो तुम्हें यहां के नियम नहीं मालूम। परन्तु इतना तो मालूम ही है कि किसी से बीच सड़क पर लड़ने का क्या दण्ड है? लेकिन वह इन चारों की बहादुरी भरे कारनामों को सुनकर मन ही मन खुश हो रहा था। फिर उनसे बोला "अच्छा अब तुम जाओ और अपने साथ दार्ता को भी हकीम के पास ले जाना। देखो इसके भी कई जगह से खून बह रहा है।" तीन तिलंगों के साथ दार्ता भी हकीम के कमरे में चला गया और मोस्यो त्रिवेल सम्राट के पास रवाना हुआ।

मोस्यो त्रिवेल रास्ते में सोचता जा रहा था कि अब देखूंगा कि अपनों के मारे जाने पर उसके मुंह की रंगत कैसी है? आज मेरे तीन नहीं चार बहादुर है जिन्होंने आज मेरा मस्तक ऊंचा कर दिया। सचमुच दार्ता भी वीर है आज तीन तिलंगों के तो बहादुरी के चर्चे है दार्ता के भी बहादुरी के चर्चे है। महल में पहुंचने पर मोस्यो त्रिवेल को पता चला कि सम्राट प्रधानमन्त्री के साथ गुप्त बैठक में तल्लीन है। वास्तविकता यह भी थी कि मोस्यो त्रिवेल के पहुंचने के पहले ही प्रधानमन्त्री सम्राट के पास पहुंच गया था। जैसे ही उसे इस बारे में पता चला तो उसे इसी बात की जल्दी थी कि कहीं मुझसे पहले मोस्यो त्रिवेल पहुंचकर सच बात न बतला दे। इसलिए वह अपनी हवेली भी नहीं पहुंचा और सीधा सम्राट के पास आ उनसे इस बारे में बातें करने लगे। वह वहां बैठा हुआ

मोस्यो त्रिवेल के सिपाहियों की शिकायत कर रहा था। सम्राट सुन रहे थे और गम्भीर चेहरा बनाए हुए थे परन्तु उन्हें प्रधानमन्त्री के आने के पहले ही तीन तिलंगों के बहादुरी कारनामों का पता चल गया था। मोस्यो त्रिवेल को सब पता चल गया कि प्रधानमन्त्री ने सम्राट को क्या-क्या बताया है? परन्तु त्रिवेल जरा भी नहीं घबराया। मौका मिलते ही वह सम्राट से मिलने जा पहुंचा और उसने बताया कि प्रधानमन्त्री के सिपाहियों ने खुद ही तिलंगों से झगड़ा मोल लिया। हुजूर जब कोई व्यक्ति सामने वाले व्यक्ति को बिना बात मारने लगे तो सामने वाला कब तक चुप बैठेगा? आखिर हर बात की सीमा होती है।

मोस्यो त्रिवेल को यह अच्छी तरह पता था कि सम्राट प्रधानमन्त्री और उसके सैनिकों से नाराज रहते थे। मोस्यो त्रिवेल ने सम्राट को बताया कि जनता प्रधानमन्त्री के सिपाहियों के बिल्कुल नहीं चाहती वरन शाही सेना के तीन तिलंगों को बहुत प्यार करती है क्योंकि ये तिलंगे जनता की भरपूर सुरक्षा करते है।

सम्राट ने कहा "देखो त्रिवेल अभी मेरे पास प्रधानमन्त्री शाही सेना के सिपाहियों की शिकायत लेकर आए और अब तुम प्रधानमन्त्री के सैनिकों को देखो। मैं तुमसे ही पूछना चाहता हूं कि आखिर बात क्या है? तुम तो जानते ही हो कि प्रधानमन्त्री की बातों पर मुझे विश्वास नहीं है।"

मोस्यो त्रिवेल ने जब देखा कि सम्राट मूड में है वह यह भी जानता था कि सम्राट प्रधानमन्त्री और उसके सिपाहियों से नाराज रहते है तो त्रिवेल ने भी खूब नमक मिर्च लगाकर सारा किस्सा बताया। उसने बताया "महाराज आप ही बताएं कि वे आठ सिपाही थे और ये तीन तिलंगे। फिर महाराज एक नौजवान लड़का जो कि अभी कुछ ही देर पहले मुझसे मिला था वह भी तिलंगों के साथ लड़ा इस तरह भी हमारी सेना में चार आदमी हुए फिर भी हमारे आदमियों ने बहुत बहादुरी के साथ उन्हें खदेड़ दिया। महाराज जो मैं नवयुवक के बारे में बता रहा था उसका नाम दार्ता है आज उसकी बहादुरी की पेरिस में हर जगह चर्चा



है। सही बात तो यह है कि वह शाही सेना में भरती होने के लिए ही आया था परन्तु फिर मैंने शाही सेना के भरती होने के नियम बताए तो वह निराश हो गया परन्तु कुछ ही देर बाद उसने ऐसी बहादुरी दिखाई कि वह पेरिस के आदमी, आदमी का प्यारा हो गया। अब तो मेरी भी

इच्छा है कि उसे तिलंगो की सेना में भरती कर लिया जायं।"

सम्राट भी दार्ता के बारे में सुन चुका था उसकी भी इच्छा थी कि उस बहादुर नौजवान से मिला जायं तो सम्राट बोला "देखो उन तिलंगो ने बड़ी बहादुरी दिखाई है लगता है ये कार्डियल के सिपाही जनता पर ज्यादातई कर रहे है मैं तिलंगो से मिलना चाहता हूं तुम जब उन तिलंगो को लेकर मेरे पास आओ तो दार्ता को भी अवश्य लाना। मेरी इच्छा उस नौजवान से मिलने की भी हो रही है।"

सम्राट के सलाहकार ने मोस्यो त्रिवेल को मिलने का समय दिया जिससे मोस्यो त्रिवेल सोचने लगा कि शायद सम्राट दार्ता के कार्य से प्रभावित हुए है। निश्चित समय पर मोस्यो त्रिवेल तीन तिलंगो के साथ दार्ता को भी लेकर सम्राट के पास पहुंचे। इस बीच वह प्रधानमन्त्री के सिपाहियों से दो बार लड़ चुका था एवं अपनी बहादुरी दिखाई जिससे प्रधानमन्त्री के सिपाही दार्ता का नाम सुनते ही भाग लेते थे। इतना तो सिपाही तिलंगो से भी नहीं डरे जितना कि दार्ता के नाम से ही भय था इस बात का भी सम्राट को पता चला। वह सोचने लगा कि त्रिवेल सच ही कह रहे थे ये हीरा कीचड़ में कैसे दबा रह गया? सचमुच इसकी परख तो अब हुई है। दरबार में पहुंचकर उसे पिता की बातें याद आ गई कि यह सिर सिर्फ सम्राट के आगे ही झुके और किसी के आगे नहीं। उसने अपनी तलवार सम्राट के पैरो में रख दी और दन्डवत प्रणाम किया जिससे सम्राट बेहद प्रसन्न हुए और अपने सिहांसन से उठ उसे गले लगा लिया जिससे मोस्यो त्रिवेल की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। वास्तव में मोस्यो त्रिवेल का सपना पूरा होने जा रहा है। सम्राट ने मोस्यो त्रिवेल को आदेश दिया "इस नौजवान को तुरन्त शाही फौज में भर्ती कर लिया जायं क्योंकि हम नहीं चाहते कि यह हीरा अब दुबारा कीचड़ में फंस जाए। इससे आने वाले वक्त में पेरिस गर्व महसूस करेगा ऐसा मेरा अनुमान है।

●●



चार

जब दार्ता को यह पता लगा कि उसे शाही सेना में भरती कर लिया गया है तो उसकी खुशी की सीमा न रही। अब वह सेना में खूब मन लगा कर काम करने लगा। उसके काम से मोस्यो त्रिवेल तो खुश थे ही साथ में सम्राट भी बहुत खुश थे। अब वह इस चक्कर में लगा रहता ताकि उसका नाम बहादुरों में गिना जाए। वैसे उसने जो अभी तक काम किए उसे जनता ने भी सराहा था।

सबसे बड़ी खुशी दार्ता को यह थी कि वह अब तिलंगो की सेना में भरती हो गया था इसके लिए वह मोस्यो त्रिवेल का आभारी था। अब दार्ता की निगाहों में त्रिवेल एक पूज्यनीय व्यक्ति थे। एक दिन दार्ता घूमने के लिए बाजार में निकला चारों तरफ उसके अभिवादन में सिर झुक रहे थे कि अचानक उसकी नजर एक लेड़ी पर गई। वह उसको तुरन्त पहचान गया यह एक अंग्रेज महिला थी। यह वही महिला थी जिसे उसने सरदार के साथ सराय में देखा था इसी महिला को सरदार ने एक बक्सा दिया था और कहा था कि उसे फ्रांस में मत खोलना। इसी औरत को दार्ता खोज रहा था क्योंकि इसी के माध्यम से उस सरदार तक पहुंचा जा सकता था। अचानक इस महिला को बाजार में देखकर दार्ता के अचरज का ठिकाना ना रहा। वह घोड़ागाड़ी पर थी दार्ता भी घोड़े पर था। उसने उसका पीछा करना शुरू किया। दार्ता ने सुना कि स्त्री कोचवान से कह रही थी कि मुझे जर्मेयन मार्ग पर जाना है।

दार्ता ने देखा वह अंग्रेज महिला इधर-उधर चोर निगाहों से देख रही थी लगता था जैसे वह कहीं से भाग कर जा रही थी। वह घबराई हुई थी। दार्ता ने देखा कि उसके साथ-साथ एक घुड़सवार भी चल रहा था। वे दोनों बतला रहे थे परन्तु यहां दार्ता के सामने भाषा की समस्या

आ खड़ी हुई। वे दोनों अंग्रेजी भाषा में धीरे-धीरे बतला रहे थे जबकि दार्ता सिर्फ फ्रान्सिसी ही जानता था। लेकिन दार्ता उसके चेहरे के हाव-भाव से इतना अवश्य जान गया कि स्त्री बहुत नाराज थी और वह घुडसवार हंस-हंसकर उसे मनाने की कोशिश कर रहा था। दार्ता सोच रहा था उन दोनों का आपस में आखिर रिश्ता क्या है? वह घुड़सवार उससे मिन्नतें कर रहा था परन्तु वह नागिन की तरह फूंकार मार रही थी।

दार्ता उनके साथ-साथ काफी आगे निकल गया दूसरा घुड़सवार घोड़ागाड़ी के साथ-साथ दूसरी तरफ चल रहा था इसलिए उसने दार्ता के ऊपर इतना गौर नहीं दिया और वह चले जा रहा था परन्तु दार्ता को यह पता लगा चुका था कि बात कोई गम्भीर है। दार्ता ने सोचा कि वगैर इनसे जान पहचान किए काम नहीं चलेगा। दार्ता ने सोचा कि वह घुडसवार कोई मजनूं है जो बार-बार इस औरत को तंग कर रहा है वह उस लेड़ी के नजदीक आकर बोला "देवीजी लगता है आपको मेरी सहायता की जरूरत है। अगर किसी भी तरह की कोई भी सहायता चाहिए तो मैं तैयार हूं आप चिन्ता मत कीजिए। लगता है यह घुड़सवार आपको परेशान कर रहा है अगर आज्ञा हो तो इसका काम तमाम कर दूं।"

वास्तव में उस अंग्रेज महिला ने दार्ता को देखा नही था या फिर देखते हुए भी अनदेखा कर रही थी। जब उस अंग्रेज महिला ने घुड़सवार की तरफ देखा तो चौक पड़ी। कुछ क्षण के लिए तो वह घबराई पर फिर संयत होकर बोली "नौजवान तुम मेरी सहायता करना चाहते हो इसके लिए धन्यवाद लेकिन मुझे तुम्हारी मदद की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि जिसे तुम फरेबी जालसाज और मजनूं समझ रहे हो वह मेरा भाई है। अगर ये कोई और होते तो मैं सहायता अवश्य लेती।"

दार्ता ने जैसे ही सुना कि वह घुड़सवार उस अंग्रेज महिला का और कोई नहीं वरन भाई है तो काफी लज्जित हुआ और उससे हाथ जोड़कर बोला "मुझसे गलती हुई, माफ कीजिएगा सचमुच मैं तो इन्हें कोई



आवारा किस्म का आदमी समझ रहा था। मुझे तो पता ही नही था कि यह आपके भाई है।"

इनकी बातचीत में घोड़ागाड़ी की गति धीमी पड़ गई थी वैसे भी उस घुड़सवार ने दार्ता और औरत की सारी बाते सुन ली थी। उसे

क्रोध आ गया और डांटकर बोला "बदतमीज बात करने की भी अक्ल नहीं है। बेवकूफ चुपचाप चला जा और अपना रास्ता देख। क्यों इस जवानी में जान गंवाना चाहता है?"

अंग्रेज महिला ने जब देखा कि दार्ता को भी गुस्सा आ गया तो सन्न रह गई। उसने सोचा बात को यही रहने दे तो अच्छा है। दार्ता उसके भाई को जवाब देना ही चाहता था कि वह अंग्रेज महिला बोल उठी "अच्छा देखो तुम दोनों बात करो मैं घर चली जाती हूं। तुम दोनों की लड़ाई में मेरा क्या कसूर है? फिर उसने कोचवान से कहा "कोचवान तुम जरा तेजी से घर चलो।" शायद कोचवान उसके घर को जानता था। अब कोचवान घोड़ागाड़ी को तेजी से भगाऐ जा रहा था।

दार्ता ने उसे खा जाने वाली निगाहों से घूर कर देखा जिससे पहला घुड़सवार सहम गया व धीरे-धीरे चलने लगा। दार्ता भी उससे सटकर उसी के साथ चला जा रहा था। घुडसवार खीज गया था उसे अच्छा नहीं लगा कि वह उसके साथ-साथ चले। वह डर गया था कि कहीं यह वास्तव में कोई चोर ना हो। इस पर घुडसवार दार्ता से बोला "देखो मैं फिर कहता हूं चुपचाप यहां से चले जाओ तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूं? मेरा गुस्सा पेरिस जानता है। अब अगर तुम चुप नहीं हुए तो मैं तुम्हारी अक्ल ठीक कर दूंगा।"

दार्ता ने उसके चेहरे पर उतरते-चढ़ते भावों को देखा और हंसकर बोला "ओह तो तुम मेरी अक्ल ठीक करना चाहते हो। मैं तो ये ही देखना चाहता हूं कि तुम्हारे अन्दर अक्ल कितनी है जो तुम मेरी अक्ल ठीक करोगे? लगता है तुम्हारी बहन काफी आगे निकल गई है अब तो तुम्हारे पास बल नहीं होगा। हां आज शाम को छः बजे लेक्समवर्ग बाग के पीछे मुझसे मिलना वहीं तलवारों के सहारे मालूम होगा कि किसमें कितनी अक्ल है? क्यो?" कहकर दार्ता व्यंग्य से मुस्कुराने लगा।

वह घुड़सवार अब दार्ता से चिढ़ गया था और आश्चर्य से उसकी और देखे भी जा रहा था। उसने सोचा शायद यह पेरिस में नया आया है परन्तु उसकी चालढ़ाल और पहनावे को देखकर उसे नया भी नहीं कह

सकते। इतना तो घुड़सवार को पता लग ही चुका था कि यह सम्राट की शाही सेना का आदमी है क्योंकि जो सैनिक वर्दी दार्ता ने पहन रखी थी शाही सेना की ही थी। उसकी समझ यही नहीं आया कि यह मुझे पहचानने में भूल क्यों कर रहा है? कुछ चिढ़कर उसने दार्ता से कहा "लगता है तुम्हारा दिमाग फिर गया है जो मुझसे झगड़ा मोल लेना चाहते हो। जानते हो मैं कौन हूं? मैं शेफिल्ड का नवाब 'लार्ड विक्टर' हूं। तुम लार्ड विक्टर से अकड़कर बात कर रहे हो। जानते हो इसकी सजा कितनी बड़ी है? फिर भी मैं तुम्हारी बहादुरी देखना चाहता हूं। ठीक छः बजे में लेक्समबर्ग बाग के पीछे मिलूंगा और हां तुम भी भूल मत जाना। अपने एक दो दोस्तों को भी लाना मत भूलना ताकि हाथ-पैर टूटने पर वे लादकर तो ले जाएंगे।"

यह सुनकर दार्ता मुस्कुरा पड़ा और हंसकर कहने लगा "देखिए जनाब! जब आप शाम को तलवार के साये में मुझसे मिलना चाहते है तो फिर आप नवाब कैसे? फिर भी मैं आपका परिचय तो जान ही चुका हूं क्योंकि वह आपने अपने मुंह से ही कह डाला है इसके लिए धन्यवाद। यह तो शाम को ही पता चलेगा कि हाथ पैर किसके टूटेंगे? खैर कोई बात नहीं। अब आप मेरा परिचय और जान ले तो अच्छा है। मेरा नाम दार्ता है। मैं गेस्कन गांव का रहने वाला हूं और आजकल मोस्यो त्रिवेल के नेतृत्व में सम्राट की शाही फौज में काम कर रहा हूं। चिन्ता मत कीजिए मैं अकेला नहीं आंऊगा मेरे साथ मेरे तीन दोस्त भी आएंगे क्योंकि अगर आपके हाथ पैर टूट गए तो शेफील्ड के नवाब लार्ड विक्टर के घर के दरवाजे तक छोड़ देंगे। हां यह तो हमारा फर्ज बनता है। क्यों शेफिल्ड के नवाब।" यह कह दार्ता वहां रूका नहीं उसने अपना घोड़ा दूसरी तरफ सड़क पर मोड़ लिया।

शाम को ठीक छः बजे दार्ता ऐथोस, पार्थस और अरामिस के साथ अकड़कर लेक्समबर्ग बाग के पीछे पहुंच गया जहां लार्ड विक्टर उसका इन्तजार कर रहा था। वहां लार्ड विक्टर अपने तीन अंग्रेज योद्धाओं के साथ था।

फ्रांस के नियम के अनुसार दोनों तरफ के लोगों ने पहले आपस में परिचय किया। जैसे ही पार्थस, अरामिस और ऐथोस ने सुना कि यही लार्ड विक्टर है तो सन्न रह गए, परन्तु यह तो दंगल है वैसे भी इन लोगों ने पीठ दिखाना तो सीखा ही नहीं था। दंगल सिर्फ लार्ड विक्टर और दार्ता के बीच था लेकिन दंगल शुरू होने पर तीन तिलंगें भी उन अंग्रेज योद्धाओं के ऊपर टूट पड़े। वे जमकर लड़ रहे थे। उनकी बहादुरी और कौशल को देखकर उन अंग्रेज योद्धाओं के पैर उखड़ गए।

दार्ता लार्ड विक्टर से भिड़ गया। दार्ता के साथ लार्ड विक्टर बहादुरी के साथ लड़ रहा था। लार्ड विक्टर दार्ता के युद्ध कौशल को सुन चुका था। दार्ता ने देखा कि लड़ते-लड़ते लार्ड विक्टर बहुत बुरी तरह थक चुके थे दार्ता ने मौके का फायदा उठाया उसके शरीर में भी जवां खून बह रहा था, हौंसले बुलन्द थे। उसने अचानक उछल कर तलवार का भरपूर वार किया जिसको लार्ड विक्टर सम्हाल नहीं पाए और उनकी तलवार के दो टुकड़े हो गए। लार्ड विक्टर लड़खड़ा रहे थे। वह ज्यादा देर खड़े नहीं रहे सके और जमीन पर गिर गए। दार्ता फुर्ती से उनकी छाती पर चढ़ बैठा और दोनो हाथों से तलवार पकड़कर उसकी नौंक लार्ड विक्टर की छाती पर टिका दी और बोला "कहिए शेफिल्ड के नवाब, किसको अक्ल आई? कुछ मालूम चला। अपनी बहादुरी का बहुत बखान करते थे, अब कहिए आप तो मुझे अक्ल सिखाने जा रहे थे। तुम जो तीन अंग्रेज योद्धा लाए थे वे तो पहले ही जमीन पर धूल चाट रहे है। लगता है अब उन्हें उठाने को किराए के आदमी लाने पड़ेंगे। हां मैं चाहूं तो इसी क्षण आपकी जान ले सकता हूं परन्तु मैं ऐसा हरगिज नहीं करूंगा क्योकि मैं एक वीर हूं और वीर की इज्जत करना जानता हूं। मैं निहत्थे योद्धा पर वार करना कायरता समझता हूं। वैसे तो युद्ध में यह नहीं देखा जाता परन्तु तुम्हारी जवान बहन पर मुझे तरस आता है। अगर मैंने तुम्हें मार दिया तो तुम्हारी बहन की शादी कौन करेगा? मैं तुम्हारी बहन का दीवाना जो हो गया हूं।"

इतना कहकर दार्ता उछला और लार्ड विक्टर के ऊपर से अलग



हट गया। लार्ड विक्टर सोचता ही रह गया साथ में उसकी बहादुरी पर बहुत ही खुश था। वह मन ही मन उस नौजवान को चाहने लगा था। फिर लार्ड विक्टर उठा और दार्ता को गले से लगा लिया और बोला "शाबास दार्ता मुझे तुम जैसे बहादुर योद्धा पर नाज है तुम्हारे तीन साथी

भी बड़ी बहादुरी से लड़े। सच पेरिस को तुम जैसे ही योद्धा चाहिए।" इस दगंल में तीन तिलंगे काफी घायल हुए परन्तु लार्ड विक्टर के दो अंग्रेज योद्धा मारे गए। एक अभी भी पड़ा कराह रहा था। तभी लार्ड विक्टर दार्ता से बोला "दार्ता मैं तुम्हारी और तुम्हारे साथियों की बहादुरी से प्रसन्न हूं। जैसे ही तुम्हारे साथियों ने तलवार चलानी शुरू की तो मैं एक दम पहचान गया था कि अवश्य ही ये तीन तिलंगे है क्योंकि पेरिस में इतनी कुशलता से तलवार सिर्फ तिलंगे ही चला सकते है। मेरी दिली इच्छा है कि तुम अपने साथियों को लेकर मेरी काठी पर आना। वहां मैं अपनी परियों जैसी सुन्दर बहन से मिलवाऊंगा, जब वह तुम्हें देखेगी तो बहुत खुश होगी। शायद तुम्हें ये पता नहीं कि सम्राट के दरबार में मेरी बहन की बहुत इज्जत है।"

जब दार्ता ने देखा कि उससे लार्ड विक्टर बहुत अधिक प्रभावित हुआ है तो वह मुस्कुराकर बोला "लगता है समझदार हो! चलो अब तुमने ही मुझे अपने घर आने का निमन्त्रण दिया है तो मैं स्वीकार करता हूं एक दिन में घर अवश्य आऊंगा। हां तुमने मेरे तीन आदमियों की तारीफ की उसके लिए धन्यवाद परन्तु आपके आदमी की बहादुरी में किसी से कम नहीं थे आखिर समय तक भी काफी सूझबूझ से लड़े। आपके आदमी युद्ध में मारे गए इस बारे में आपको जरा भी अफसोस नहीं करना चाहिए क्योंकि जब दो योद्धा लड़ते हे तो एक तो मारा ही जाता है वैसे घर का कुत्ता भी मर जाता है तो दुःख तो उसका भी होता है फिर ये तो बहादुर योद्धा थे। हम सभी लोगो को अफसोस है कि आपके तीनों आदमी मर गए। चलते-चलते लार्ड विक्टर ने अपने घर का पता दार्ता को दिया और बोला "इन पवित्र चरणों को मेरे घर भी लाइए ताकि आपकी कुछ वीरता मेरे घर को भी मिलें। इतना कह लार्ड विक्टर अपने घर की तरफ को चला गया।"

●●



पांच

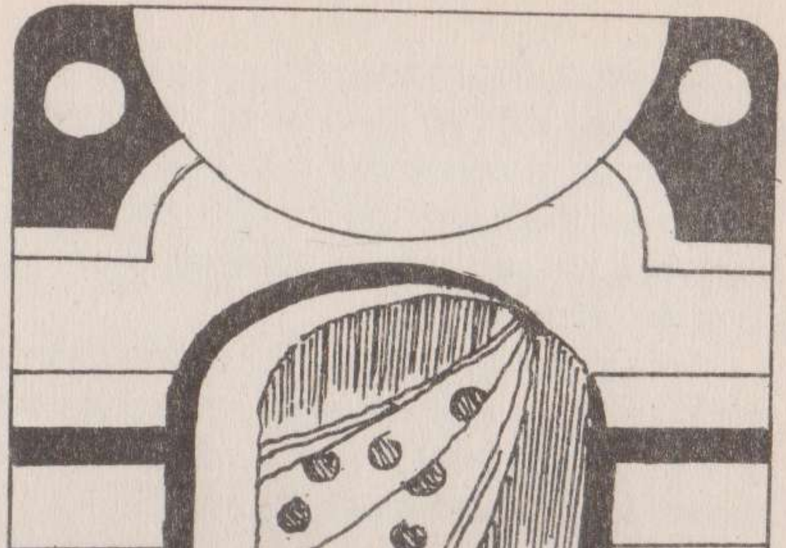
घर लौटकर दार्ता ने अच्छी तरह स्नान किया और सुन्दर पोशाक पहनकर वह लार्ड विक्टर की कोठी के लिए रवाना हो गया। जब वह वहां पहुंचा तो लार्ड ने उसका स्वागत किया, फिर बैठक में ले जाकर अपनी बहन से उसका परिचय कराया।

उस अंग्रेज महिला का नाम लेडी केलरिक था। लार्ड विक्टर ने लेडी केलरिक से कहा, "मेरे इस बहादुर मित्र ने अपने हाथ में होने पर भी मुझे जिन्दा छोड़ दिया। मैंने इसे इसीलिए यहां बुलाया है कि तुम इससे मिलकर खुश होगी।"

दार्ता ने देखा कि उन लोगों ने एक बन्दर पाल रखा था बन्दर को पुचकारते हुए लेडी केलरिक ने मुस्कराते हुए कहा, "दार्ता, तुमसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई। तुम्हारा जब मन हो, तुम हमारी कोठी पर आ सकते हो। तुम्हारे जैसे बहादुर नौजवान का हम अंग्रेज लोग बहुत आदर करते हैं।"

इसके बाद लार्ड विक्टर उसे आज की लड़ाई का किस्सा सुनाने लगे। दार्ता को यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि लेडी केलरिक उनकी बातों को सुन तो रही थी, लेकिन वह कुछ प्रसन्न नहीं मालूम होती थी। बड़ी मुश्किल से वह अपनी चिढ़ छिपाने की कोशिश कर रही थी।

लार्ड विक्टर ने दार्ता को मेज के पास बुलाया और शराब का जाम पीने को दिया। वहीं दीवार के पास लगे एक आईने में लेड़ी केलरिक की आकृति दिखाई दे रही थी। दार्ता उसके चेहरे को गौर से देखने लगा। लेकिन लेडी को यह नहीं मालूम था कि दार्ता की नजर उसके चेहरे पर है। दार्ता ने देखा कि लेड़ी के चेहरे पर हिंसा का भाव स्पष्ट था। वह



बहुत घृणा से उसकी तरफ देख रही थी।

थोड़ी देर बाद एक नौकरानी ने आकर लार्ड विक्टर को कुछ कहा और वे वहां से उठकर जाते हुए दार्ता से कहते गए, "तुम जरा मेरी बहन

के पास बैठो, मैं अभी थोड़ी देर में आता हूं।"

दार्ता लेड़ी केलरिक से बातचीत करने लगा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस बीच लेडी ने अपने चेहरे का भाव बिल्कुल बदल दिया था और अब वह बहुत शांत दिखाई दे रही थी। बातचीत में उसने दार्ता को बताया कि लार्ड विक्टर उसके भाई नहीं हैं बल्कि उसके पति के बड़े भाई हैं, यानी उसके जेठ हैं, उसके पति की कुछ दिन पहले मृत्यु हो गई थी। उसके एक बच्चा भी है।

दार्ता को लगा कि यह सब बताते हुए भी लेडी केलरिक उससे कुछ छिपाने की कोशिश कर रही थी। पूरी बातचीत खत्म होने के बाद दार्ता को लगा कि इस स्त्री के भाव चाहे जो कुछ हों, लेकिन यह मेरी भलाई ही चाहती है और मेरे खिलाफ यह कोई काम नहीं करेगी।

इसके बाद तो दार्ता अक्सर लेडी केलरिक से मिलने जाने लगा। वहां लार्ड विक्टर से भी उसकी मुलाकात होती थी। लेकिन उसके स्वागत का सारा भार लेडी केलरिक पर ही था। दार्ता यह बिल्कुल भूल चुका था कि पहले दिन लेडी केलरिक से नजर बचाकर उसको बहुत घृणा से देखा था। बात भी असल में यही थी। लेडी मन से दार्ता को बिलकुल नहीं चाहती थी, क्योंकि वह प्रधानमंत्री की जासूस थी। इसके अलावा उसे एक बात की और चिढ़ थी, कि वह चाहती थी कि किसी तरह लार्ड विक्टर की जल्द ही मृत्यु हो जाए और वह उसकी सारी सम्पत्ति को हथिया ले।

इधर दार्ता का यह हाल था कि उस पर उस लेडी का बहुत अधिक असर होता जा रहा था। वह मन-ही-मन उसे चाहने लगा था लेकिन ऐथोस की नजर से यह बात छिपी न रह सकी। उसे मालूम था कि लेडी किस प्रकार की स्त्री है और वह दार्ता के जीवन को बर्बाद कर देना चाहती है? दार्ता के साथियों ने उसको समझाने की बड़ी कोशिश की लेकिन दार्ता उनकी हर बात को हंसी में टाल देता था। इस समय अगर उनके भाग्य ने उनकी मदद न की होती तो वह पूरी तरह से उस दुष्ट स्त्री के पंजे में फंस जाता।

जब लेडी ने समझ लिया कि दार्ता अच्छी तरह से उसकी मुट्ठी में आ गया है और उस पर मुग्ध है तो उसने धीरे-धीरे अपना जाल फैलाना शुरू किया। इस षड्यंत्र में उसने अपनी एक विश्वासपात्र नौकरानी केटी से मदद ली। लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि पहले दिन जब केटी ने दार्ता को देखा था तो उसी समय से वह उसको चाहने लगी थी। उसने दार्ता की बहादुरी के किस्से भी सुन रखे थे।

केटी को यह पता लगते देर नहीं लगी कि लेडी केलरिक ने दार्ता की हत्या का षड्यंत्र रचा है। वह बड़ी बेचैनी से ऐसे मौके की तलाश में थी कि समय रहते ही दार्ता को सब कुछ बता सके। और एक दिन उसे मौका मिल गया। उस दिन दार्ता कोठी पर आया तो लेडी केलरिक कहीं गई हुई थी। उसकी नौकरानी केटी दार्ता को एक कमरे में ले गई और उसने दार्ता से कहा, "लेडी मेरी मालकिन है, लेकिन फिर भी मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि आप जल्दी ही उससे सम्बन्ध तोड़ दें। वह आपके खिलाफ षड्यंत्र रच रही है।"

पहले तो दार्ता को उसकी बात बहुत बुरी लगी, लेकिन जब उसने लेडी केलरिक के हाथ की एक चिट्ठी दिखाई तो दार्ता असमन्जस में पड़ गया। यह चिट्ठी एक सरदार को लिखी गई थी जिसमें उसके प्रति बहुत प्रेम प्रकट करते हुए लेडी केलरिक ने लिखा था कि वह तुरन्त उससे मिलने के लिए चला आए, क्योंकि उसने दार्ता नाम के लड़के को ढूंढ लिया है।

इतने में मकान के दरवाजे पर एक गाड़ी रुकी। केटी ने देखा कि उसकी मालकिन गाड़ी से उतरकर घर में आ रही है। उसने दार्ता को कुछ देर के लिए छिपे रहने के लिए कहा और वह दौड़ती हुई वहां से चली गई। दार्ता उसी कमरे में छिपा रहा।

कुछ देर बाद उसने सुना कि पास के कमरे में लेडी केलरिक केटी के साथ बातचीत कर रही थी उसकी बात से दार्ता को लगा कि केटी ठीक कह रही थी। कुछ देर बाद उसने सुना कि लेडी केलरिक कह रही थी, "चिट्ठी पहुंचा आई न? वह बेवकूफ सिपाही दार्ता आज अभी तक



नहीं आया। वह समझता है कि मैं उससे प्रेम करती हूं। लेकिन उसे पता नहीं कि मुझे उससे कितनी घृणा है? उसने लार्ड विक्टर को जिन्दा छोड़कर मेरी मेहनत पर पानी फिरा दिया।"

यह सुनकर भी दार्ता चुपचाप वहां छिपा रहा। वह वहां से भागा नहीं। जिस जाल में लेडी ने उसको फंसाने की कोशिश की थी, उसी जाल में उसने खुद लेडी को फंसा दिया। वहां रुककर उसने बाद में केटी से कई गुप्त चिठ्ठियां प्राप्त की और सारी बात का पता लगाया।

एक दिन दार्ता को पता चला कि लेडी केलरिक ने उस अज्ञात सरदार को मिलने के लिए बुलाया है जो उसकी हत्या करने वाला था। उस दिन रात को लेडी केलरिक जब निश्चित समय पर उस व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रही थी, तब अचानक दार्ता उसके सामने जा खड़ा हुआ। यह देखकर पहले तो लेडी बहुत चकराई, लेकिन फिर उसने ऐसा मुंह बनाया जैसे वह दार्ता के आने की राह देख रही थी और उसके आने पर उसे बड़ी खुशी हुई थी।

लेकिन दार्ता उसकी बातों में नहीं आया। उसने लेडी को बता दिया कि वह सब कुछ जानता है। उन गुप्त चिट्ठियों को लेडी के सामने रखते हुए वह बोला, "क्यों, तुमने मेरी हत्या कराने के लिए ही उस सरदार को यहां बुलाया था न? आज तुम उसी की तो राह देख रही हो?"

लेडी केलरिक ने जब यह देखा कि उसकी सारी चाल खुल गई है तो वह मारे शर्म और गुस्से के पागल हो उठी। अचानक वह एक छुरी निकालकर दार्ता पर टूट पड़ी। लेकिन दार्ता पलक मारते ही उछलकर अलग जा खड़ा हुआ और अपनी तलवार निकालकर बोला, "खबरदार! तुम स्त्री हो, वरना अभी मैं तुम्हें इसका जवाब देता!"

लेडी केलरिक चिल्ला-चिल्लाकर अपने नौकरों को बुलाने लगी। लेकिन दार्ता इतना मूर्ख नहीं था वह तुरन्त वहां से भाग निकला। इस तरह वह उस दुष्ट के पंजे से बच सका।



छः

इन्हीं दिनों फ्रांस में जोर-शोर के साथ लड़ाई की तैयारी होने लगी। मोस्यो त्रिवेल को भी अपनी सेना के साथ युद्ध में भाग लेने के लिए जाना पड़ा। इस प्रकार दार्ता के जीवन में एक नये अध्याय की शुरुआत हुई।

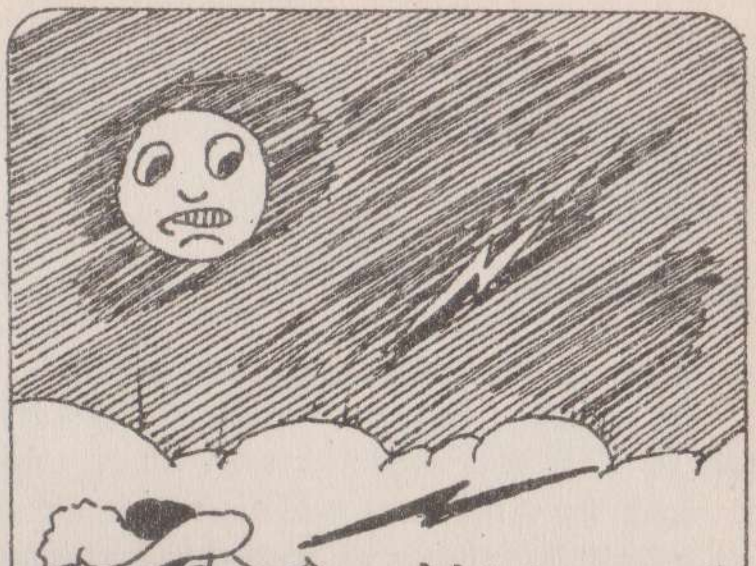
लेडी केलरिक के साथ आखिरी मुलाकात होने के पन्द्रह दिन बाद ही दार्ता को पेरिस छोड़कर रणक्षेत्र की ओर चल देना पड़ा।

कई साल से इंग्लैंड और फ्रांस के बीच लड़ाई छिड़ी हुई थी। फ्रांस ने अपने लगभग सभी बन्दरगाह अंग्रेजों से छीन लिए थे लेकिन अब भी रोचल नाम का बन्दरगाह अंग्रेजों के हाथ में था। वहीं युद्ध चल रहा था। उस समय फ्रांस में सम्राट तेरहवें कार्डिनल ने इस युद्ध में बड़ा नाम कमाया। इतिहासकारों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की है।

दुश्मन के पास फ्रांस में प्रवेश करने का एक ही रास्ता रह गया था और वह था रोचक बन्दरगाह। दुश्मन के इसी रास्ते को रोकने के लिए कार्डिनल ने अपनी फौज वहां जमा की थी।

अंग्रेजी फौज के सेनापति का नाम था ड्यूक ऑफ बकिंघम। युद्ध शुरू होने पर अंग्रेजी सेना फ्रांसीसी सेना पर टूट पड़ी। फ्रांसीसी सेना का सेनापति 'संत मार्टिन' नामक एक किले में अपनी फौज को बचाकर ले आया। उसके दूसरे सैनिकों ने 'लाप्रि' नामक एक दूसरे छोटे किले में अड्डा जमाया।

कुछ देर बाद दार्ता की फौज भी फ्रांसीसी सेना की मदद के लिए रणक्षेत्र में पहुंच गई। अंग्रेज सेना दोनों किलों पर आक्रमण कर रही थी, लेकिन अभी तक उन पर कब्जा नहीं कर पाई थी।



इसी बीच एक दिन सम्राट के भाई, आर्लियन्स दा ड्यूक, सेना के निरीक्षण के लिए वहां पहुंचे। जब वे पलटन की सलामी ले रहे थे और दार्ता के पास पहुंचे तो सेनानायक ने ड्यूक को कुछ कहते हुए दार्ता की

तरफ संकेत किया। फिर ड्यूक की आज्ञा से दार्ता को उनकी छावनी में बुलाया गया। दार्ता की समझ में यह नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है? इतने सारे सिपाहियों को छोड़कर सिर्फ उसे ही क्यों बुलाया जा रहा है?

जब वह निश्चित समय पर ड्यूक के खेमे में हाजिर हुआ तो सेनानायक ने उससे कहा, "एक बहुत मुश्किल काम आ पड़ा है, जिसे तुम्हारे जैसा कोई बहादुर आदमी ही पूरा कर सकता है। मैंने ड्यूक को तुम्हारे बारे में बताया था। इसीलिए वे तुमने मिलना चाहते हैं।"

भला दार्ता के लिए इससे बढ़कर खुशी की और क्या बात हो सकती थी? बात यह थी कि अंग्रेजों ने एक किले पर घेरा डाल रखा था और फ्रांसीसी सेना के लिए उस गढ़ को जीतना जरूरी था। तभी वह आगे बढ़ सकती थी। इसलिए यह पता लगाना था कि दुश्मन ने किले के आस-पास घेरे का कैसा इन्तजाम किया है? यह एक जोखिम का काम था।

इसके लिए दार्ता ने अपने चार साथियों को चुना और फिर वह अपने काम पर निकल पड़ा। दो सिपाही उसके साथ थे और दो उसके पीछे आ रहे थे।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर कभी पेट के बल और कभी घुटनों के बल चलते हुए वे लोग आगे बढ़ने लगे। जब वे लोग किले से सौ गज दूर रह गए तो दार्ता ने पीछे मुड़कर देखा कि पीछे आने वाले दो सिपाही गायब हो गए थे। उसने सोचा कि शायद वे लोग डरकर भाग गए हैं। वह दो सिपाहियों को साथ लेकर आगे बढ़ा।

किले के दरवाजे के पास जाने पर उन लोगों ने देखा कि वहां कोई नहीं था। वे लोग धीरे-धीरे दरवाजे में घुसने की कोशिश करने लगे कि अचानक एक धमाका हुआ और सामने से गोलियां चलने लगीं। दार्ता के साथी एक पत्थर की आड़ में छिप गए। इतना उन्हें मालूम हो गया था कि किले के दरवाजे पर कोई पहरेदार नहीं है, लेकिन अन्दर दोनों तरफ सिपाही बन्दूकें लेकर छिपे बैठे हैं।



इतना जान लेने के बाद दार्ता फौरन वहां से अपने साथियों के साथ वापस लौट चला, लेकिन अचानक गोलियां चलीं और उसके दोनों साथी मरकर जमीन पर गिर पड़े। दो कदम आगे बढ़ने पर अचानक सामने से एक गोली सनसनाती हुई आई और दार्ता के सिर पर से होकर

निकल गई। दार्ता को बड़ा आश्चर्य हुआ कि दुश्मन तो पीछे है और सामने से उन पर कौन गोली चला रहा है? वह फौरन इस तरह जमीन पर गिर पड़ा जैसे मर गया हो।

कुछ देर बाद उसने देखा कि सामने से वे ही दो सिपाही चले आ रहे थे, जो उसका साथ छोड़कर भाग गए थे। पास आने पर उसमें से एक सिपाही बोला, "चलो, हम लोग लौट चलें और कह देंगे कि दार्ता दुश्मन की गोली से मारा गया। हम लोगों ने लेडी का काम पूरा कर दिया।"

यह सुनते ही दार्ता बिजली की तेजी से उछलकर खड़ा हो गया और तलवार निकालकर उन गद्दार सिपाहियों पर टूट पड़ा। उनमें से एक मौका पाकर दुश्मन से मिलने के लिए किले की ओर भागने लगा। लेकिन किले में से एक गोली आई और उसने उस सिपाही को वहीं ढेर कर दिया। अब दार्ता ने दूसरे सिपाही को जमीन पर पटककर अपनी तलवार उसकी छाती पर लगा दी तो वह गिड़गिड़ाकर बोला, "मुझे मत मारो, मुझ पर दया करो। मेरा कोई दोष नहीं है। तुम्हारी हत्या करने के लिए रुपए दिए थे और कहा था कि अगर तुम दार्ता की हत्या कर दोगे तो तुम्हें एक सौ मोहरें इनाम में मिलेंगी। अब भी उसकी जेब में उस अंग्रेज औरत की चिट्ठी रखी होगी।"

दार्ता ने उसको माफ कर दिया और फिर किले के सामने मरे पड़े उसके साथी के पास जाकर वह उसके कपड़ों में चिट्ठी की खोज करने लगा। जब चिट्ठी उसके हाथ न लगी तो वह उसकी लाश को कंधे पर उठा लिया और एक गड्ढे में बैठकर उसकी तलाशी लेने लगा। अन्त में उसकी कमर में एक चिट्ठी मिली, जो लेडी केलरिक के हाथों लिखी गई थी। दार्ता ने चिट्ठी को संभालकर अपनी जेब में रख लिया। फिर वह दूसरे सिपाही को साथ लेकर वापस अपनी छावनी में लौट आया। सम्राट के भाई ने उसको अपने पास बुलाया और खूब शाबाशी दी।

●●



सात

कुछ दिनों बाद एक दिन की बात है कि दार्ता अपने खेमे में बैठा था। इतने में एक आदमी एक चिट्ठी लेकर उसके पास पहुंचा। यह चिट्ठी तिलंगा पलटन के रसोइये ने दार्ता के नाम लिखी थी। इसमें उसके साथ तीनों तिलंगों के हाल लिखे थे। उसमें लिखा था कि ऐथोस, पार्थस और अरामिस युद्ध-क्षेत्र की तरफ आगे बढ़ रहे थे। रास्ते में एक जगह उन्होंने कहीं कुछ गड़बड़ी की थी जिसमें कुछ दिनों के लिए उनको जेल में बंद कर दिया गया था। इस रसोइये का नाम था गोदो। उसने अंत में लिखा था "लेकिन फिर भी आपके साथी तिलंगे आपको भूले नहीं थे। उन्होंने आपके लिए बारह बोतल शराब भेंट के रूप में भेजने को कहा था, जिसे मैं इस आदमी के हाथ आपके पास भेज रहा हूं।"

इस खुशी में दार्ता ने दूसरे दिन अपने खेमे में अपने कुछ साथियों को दावत पर बुलाया। फलांशे नाम के उसके रसोइये ने बड़ा अच्छा खाना बनाया था। जिस गद्दार सिपाही को दार्ता ने माफ कर दिया था, वह भी अब दार्ता का सेवक बन गया था। उसका नाम मांट था। फलांशे और मांट ने दावत का बड़ा अच्छा इन्तजाम किया।

जैसे ही लोग भोजन की टेबल पर बैठे कि अचानक कुछ हल्ला हुआ और ऐथोस, पार्थस और अरामिस दार्ता के खेमे में आ घुसे। बात यह थी कि सम्राट की फौज भी प्रधानमंत्री की मदद के लिए वहां आ पहुंची थी। उसके साथ शाही तिलंगा पलटन भी थी। दार्ता अपने साथियों से मिलकर बड़ा खुश हुआ। वह बोला, "वाह, तुम लोग बड़े मौके से आए। चलो, खाना तैयार है, और तुम लोगो की भेजी हुई शराब की बोतलें भी मौजूद हैं।"



उसकी बात सुनकर तीनों तिलंगो को बड़ा आश्चर्य हुआ। उनमें से किसी ने भी उसके लिए शराब नहीं भेजी थी। जब दार्ता ने उन लोगों को चिट्ठी की बात बताई तो मालूम हुआ कि चिट्ठी जाली थी। अरामिस

ने फौरन चिट्ठी देखकर कहा, "यह चिट्ठी रसोइये के हाथ से लिखी हुई हो ही नहीं सकती। मैं उसकी लिखावट पहचानता हूं। इसके अलावा इसमें लिखा था कि हम लोगों को कैद कर लिया गया है। भला हमको कैद करने की हिम्मत किसमें है?"

यह सुनकर दार्ता का चेहरा मारे गुस्से से लाल हो गया। अब उसकी समझ में आया कि वह सारा षड्यन्त्र उसी अंग्रेज स्त्री का रचा हुआ था। अन्दर जाकर देखा कि फलांशे और मांट ने शराब पी ली थी और उसके जहर के कारण वे जमीन पर छटपटा रहे थे। कुछ ही देर में दोनों की मृत्यु हो गई।

दार्ता ने सारी शराब नाली में फिंकवा दी और मेहमानों को हाथ जोड़कर क्षमा मांगते हुए विदा कर दिया। जब सब लोग चले गए तो अपने साथी तीनों तिलंगो के साथ बैठकर वह इस बात पर विचार करने लगा कि उस अंग्रेज स्त्री से किस तरह पीछा छुड़ाया जाए? क्योंकि वह हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गई थी। अन्त में सबने यह तय किया कि दार्ता को एक बार उससे मुलाकात करनी चाहिए और उससे साफ-साफ कह देना चाहिए कि अगर वह फौरन फ्रांस छोड़कर यहां से नहीं गई, तो उसकी खैर नहीं है।





आठ

रोचल का घेरा खत्म होने के बाद अंग्रेजी फौज के सेनापति ड्यूक ऑफ बकिंघम इंग्लैण्ड वापस लौट गए। जब फ्रांस के प्रधानमंत्री कार्डिनल को यह पता चला तो उन्होंने लेडी केलरिक को, जो उनकी मित्र थी, चुपचाप इंग्लैण्ड भेज दिया, ताकि वहां वह ड्यूक के खिलाफ कोई गहरा षड्यन्त्र रच सके। प्रधानमंत्री के सिवा और किसी को पता भी नहीं चला कि लेडी फ्रांस छोड़कर चली गई है।

उधर जब लेडी केलरिक का जहाज इंग्लैण्ड के पोर्ट्समाउथ नामक बन्दरगाह में पहुंचा तो वहां एक समारोह हो रहा था। नये तैयार हुए चार जहाजों को धूमधाम के साथ पानी में उतारा था। ड्यूक भी सज-धजकर समारोह में भाग लेने के लिए वहां आए थे। लेड़ी ने अपने जहाज की छत पर से ही यह देख लिया था कि ड्यूक बन्दरगाह के घाट पर कुछ लोगों के साथ खड़े हैं।

तभी अचानक एक घटना घट गई। जब लेडी अन्य यात्रियों के साथ जहाज से उतरकर और नाव में बैठकर घाट की ओर जाने लगी तो अचानक एक आदमी ने उसको पहचान लिया। लेडी भी उसको जानती थी। वह बन्दरगाह पर यात्रियों की तलाशी लेने का काम करता था। वह बन्दरगाह पर नियुक्त खुफिया विभाग का दारोगा था। जब लेडी ने देखा कि वह बराबर उसके पीछे लगा हुआ है तो वह बहुत घबराई और मन में डरने लगी। लेकिन ऊपर से उसने नाराज होकर दारोगा से कहा, "आप मेरे पीछे क्यों लगे हुए हैं? मैं कोई परदेशी थोड़े ही हूं। मैं तो यहीं की हूं। मेरा नाम लेडी केलरिक है।"

दारोगा बोला, "जी हां, मैं जानता हूं। आपको किसी बात की

तकलीफ न हो, इसीलिए मैं आपकी सेवा में हाजिर हूं।" फिर वह कुछ रहस्यमय ढंग से मुस्कराकर बोला, "यह लड़ाई का जमाना है न, हम लोगों को हर आदमी की ठीक से जांच-पड़ताल करनी पड़ती है। मुझे आपके साथ आपके ठहरने की जगह तक जाना पड़ेगा। आइए, बाहर घोड़ागाड़ी तैयार खड़ी है। आपको किस सराय में ठहरना है?"

बन्दरगाह के दफ्तर के बाहर एक घोड़ागाड़ी खड़ी थी। लेडी के साथ दारोगा भी चुपचाप उसमें जा बैठा। गाड़ी चल पड़ी। गाड़ी में दारोगा बिलकुल चुप बैठा था। लेडी बुरी तरह घबरा रही थी? उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह मुझे कहां ले जा रहा है। गाड़ी शहर के बाहर आ पहुंची थी। अंधेरा हो गया था। लेडी ने देखा कि गाड़ी शहर को छोड़कर किसी सुनसान इलाके में दौड़ी चली जा रही थी। वह बोली, "मुझे कहां ले जा रहे हो? मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूंगी!"

लेकिन इतने पर भी दारोगा चुपचाप बैठा रहा और कुछ नहीं बोला। अन्त में जब घबराकर लेडी ने चलती हुई गाड़ी से कूदने के लिए उसका दरवाजा खोलना चाहा तो वह बोला, "आप यह कोशिश न कीजिए, वरना आपका ही नुकसान होगा।"

अन्त में मन मारकर लेडी बड़बड़ाती हुई गाड़ी में बैठी रही। कुछ देर बाद गाड़ी एक मजबूत किले के सामने आ खड़ी हुई। गाड़ी के रुकते ही किले का लोहे का फाटक खुल गया। दारोगा लेडी को उतारकर किले के अन्दर ले जाने लगा।

वह बोली, "लगता है, तुम मुझे कैदखाने में पहुंचा रहे हो। लेकिन इतना याद रखो कि तुम मुझे ज्यादा दिनों तक यहां रख नहीं सकोगे, क्योंकि मैं बिलकुल निर्दोष हूं।"

लेकिन दारोगा कुछ नहीं बोला। उसने अपनी जेब से सीटी निकाली और तीन बार बजाया। देखते-देखते कुछ सैनिक वहां आ पहुंचे। सैनिकों को गाड़ी की तरफ जाने का इशारा करके वह लेडी को पत्थर की एक सीढ़ी पर से होते हुए ऊपर की मंजिल पर एक बैठक में ले आया।



बैठक की खिड़कियों में मोटे-मोटे सींखचे लगे हुए थे। असल में यह पूरा किला एक कैदखाना था। लेडी केलरिक एक आराम कुर्सी पर बैठ गई। उसे यह भी पता नहीं था कि किसके हुक्म से उसे यहां लाया

गया है? अन्त में काफी देर तक चुप रहने के बाद उसने उस अफसर से पूछा, "ईश्वर के नाम पर मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं, मुझसे यह न छिपाओ कि आखिर मुझे यहां क्यों कैद किया जा रहा है?"

इस पर दारोगा ने कहा, "मुझे जितना मालूम है, उतना ही मैं बता सकता हूं। इस कमरे में आपको रखने का हुक्म मिला है। इसीलिए मैं आपको यहां ले आया हूं। मुझे हुक्म मिला था कि बन्दरगाह से ही आपको यहां पहुंचा दिया जाए। मैंने अपना फर्ज पूरा कर दिया। अब मेरी जगह दूसरा आदमी आपको संभालेगा।"

लेडी केलरिक ने घबराकर पूछा, "आखिर वह दूसरा आदमी कौन है?"

इतने में बाहर बरामदे में कुछ सिपाहियों के गुजरने की आवाज हुई। इसके बाद धीरे-धीरे चलते हुए किसी के जूतों की आवाज पास आने लगी।

दारोगा बोला, "जिनके बारे में तुम पूछ रही हो, वे खुद तुम्हारे सामने खड़े हैं।" यह कहकर उसने दरवाजे की ओर इशारा कर दिया। पहले लेडी केलरिक उसे पहचान न सकी। लेकिन फिर चौंककर बोली, "अरे, भाईसाहब आप!"

लार्ड विक्टर ने आगे बढ़कर सिर झुकाकर कहा, "हां, देवी, मैं ही हूं। यह मेरा ही किला है।"

लेडी केलरिक ने आश्चर्य से कहा, "तो क्या मैं मान लूं कि तुम्हीं ने मुझे कैद कर लिया है। तुम्हारे किले में मैं एक कैदी की तरह हूं? लेकिन यह व्यवहार तो तुम्हें शोभा नहीं देता।"

दारोगा के चले जाने के बाद लार्ड विक्टर बोले, "तो तुम फिर से इंग्लैंण्ड आ पहुंची? तुमने तो पेरिस में कसम खाई थी तुम कभी इंग्लैण्ड नहीं आओगी। आखिर अब अचानक तुम्हें इंग्लैंण्ड क्यों आना पड़ा?"

लेडी ने बहुत भोलेपन से कहा, "सिर्फ आपसे मिलने के लिए। इसमें आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है?" मैं सिर्फ आपसे ही मिलने के लिए यहां आई हूं।"

"अच्छा, तो तुम मुझे इतना चाहती हो, बहन?"

"और क्या? मैं तुम्हारी सबसे करीब की रिश्तेदार जो हूं।"

लार्ड विक्टर मुस्कराकर बोले, "हां, हां, क्यों नहीं? रिश्तेदार ही नहीं, मेरी एकमात्र वारिस भी तो हो।"

लेडी समझ गई लार्ड विक्टर के मन में उसके प्रति कोई सन्देह जमकर बैठ गया है। धीरे-धीरे बात बढ़ती गई। लार्ड विक्टर ने लेडी के सारे पापों को एक-एक करके गिनाना शुरू किया। वे बोले,"मेरे भाई के मरने पर तुमने उसकी सारी सम्पत्ति हथिया ली लेकिन उससे तुम्हें संतोष नहीं हुआ। अब तुम मेरी जायदाद भी हड़पना चाहती हो। लेकिन इतना याद रखो कि अगर मैं मर गया या तुम्हारे षड्यन्त्र के कारण मारा गया तो भी मेरे धन में से तुमको एक छदाम भी नहीं मिल सकता। मैंने सारा इन्तजाम कर लिया है। दस-पन्द्रह दिन में ही अंग्रेज फौज को साथ लेकर तुम्हारे मित्र और फ्रांस के प्रधानमन्त्री कार्डिनल से युद्ध करने के लिए रोचल की रणभूमि में पहुंच जाऊंगा। लेकिन इसके पहले तुमको दूर समुद्र में किसी टापू में कैद कराकर ही जाऊंगा।"

लेडी केलरिक आश्चर्य और भय से आंखे फाड़कर उसकी तरफ देखती रही। लार्ड विक्टर ने आगे कहा, "इस बीच तुम्हें इसी किले में रहना पड़ेगा। यहां से भाग निकलना असंभव हैं। मैने पहरेदारों को हुक्म दे रखा है कि अगर तुमने यहां से भागने की कोशिश की तो तुरन्त गोली चलाई जाए। यह फेल्टन नाम का दारोगा, जो तुम्हें बन्दरगाह से यहां लाया था, तुम पर पूरी नजर रखेगा।"

इसके बाद लार्ड विक्टर ने दारोगा को अन्दर बुलाकर कहा, "फेल्टन, देखो, इसी महिला के बारे में मैं तुम्हें बताया करता था। यह स्त्री नहीं, राक्षसी है। अपनी पच्चीस की उम्र में ही यह दुनियाभर के सारे पाप कर चुकी है। अब यह मेरी हत्या करने के लिए इंग्लैण्ड आई है, लेकिन दुर्भाग्य से यह मेरे चंगुल में फंस गई है। इसे अदालत के हाथों उचित दण्ड दिलाना तुम पर ही निर्भर है।"

फेल्टन ने सलाम करके कहा, "जी, बहुत अच्छा! मैं आपके हुक्म

का पालन करूंगा।"

लार्ड विक्टर ने उनसे कहा, "देखो, होशियार रहना। यह जरा-सी देर के लिए यहां से बाहर न निकल सके और किसी के हाथ कोई चिट्ठी-पत्री न भेज सके। इसके अलावा, तुमको छोड़कर इस किले में यह किसी और से नहीं मिलेगी।" फिर उन्होंने लेडी केलरिक की ओर मुड़कर कहा, "अच्छा, अब मैं जा रहा हूं। मनुष्य की दृष्टि में तुम्हारा न्याय हो गया। अब तुम ईश्वर को याद करो।"

यह सुनकर लेडी केलरिक ने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। लार्ड विक्टर बाहर निकल गए। फेल्टन ने भी बाहर आकर कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया।





नौ

लेडी केलरिक ने देखा कि जिस कमरे मे उसे रखा गया है वह कैदखाने में काफी अन्दर है और उसका कमरा समुद्र के किनारे है। हालांकि उसमें हवा आने के लिए समुद्र की तरफ ऊपर एक रोशनदान है जिसमें से समुद्र के गर्जने की आवाज आ रही थी। केलरिक सोच रही थी कि अब हो क्या सकता है? इस कैदखाने से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है? केलरिक तो अभी तक स्वतन्त्र थी और वह स्वतन्त्र ही रहना चाहती थी। इस कोठरी में तो उसका दम घुटे जा रहा था। लार्ड विक्टर को सन्तोष था कि एक सर्पणी को उसने कैद कर लिया है। वैसे उसकी खाने पीने की देखभाल अच्छी तरह की गई थी। करीब तीन दिन बाद लार्ड विक्टर लेडी केलरिक से मिलने आए वह तो ये देखने आए थे कैद सर्पणी कैसे पत्थरो में अपना सिर पटक रही है? उसका विष समाप्त हुआ या नहीं। उन्होंने देखा कि वह सर्पणी और तेज फुंकार मार रही थी। वे मुस्कुरा पड़े और बुदबुदा उठे "रस्सी जल गई पर बल नहीं गया।" उन्हें केलरिक को ऐसा बर्ताव करते देख मजा आ रहा था। उन्होंने देखा कि वह दोनों घुटनों में सिर दिए दरवाजे की तरफ अपनी लाल-लाल आंखों से घूर रही है।

जब लार्ड विक्टर उसके नजदीक पहुंचे तो वह घायल शेरनी की भांति गुर्रा उठी। लेकिन पिंजरे में भी उसका यह रूप देखकर एक बार तो लार्ड विक्टर विचलित हो गए और सोचा क्या मैं इसके प्रति अन्याय कर रहा हूं? परन्तु फिर सिर झटक दिया। यह अन्याय नहीं न्याय है यह तो बहुत मामूली सी सजा है। इस चुड़ैल को तो इससे भयानक सजा मिलनी चाहिए। फिर उन्होंने जेब से हुक्मनामा निकाला और व्यंग्य से

बोले "लो तुमको हुक्मनामा चाहिए ना लो अब मैं हुक्मनामा भी ले आया हूं। अब तुम्हें आगे कहां रहना है उसका नाम मैंने नहीं लिखा है क्योंकि यह सब मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूं तुम्हें जहां रहना हो खुद लिख लेना क्योंकि इस बोझे को मैं अपने ऊपर नहीं लादना चाहता। हां एक शर्त तो तुम्हें माननी पड़ेगी। इंग्लैण्ड से एक हजार मील की दूरी पर तुम किसी भी टापू पर रह सकती हो तुम्हारे साथ एक आदमी जाएगा उसका चुनाव मैने कर लिया है। देखो उसका नाम वेक्सन है वह उस टापू पर पहरेदार की तरह हर वक्त तुम्हारे साथ रहेगा। हां वेक्सन को भी उस टापू से तीन मील के अन्दर रहना है। अगर वह भी अपनी सीमा से बाहर निकला तो बगैर किसी के पूछे उसे मार दिया जाएगा। अगर उसे तुमने बरगलाने की कोशिश की तो हम स्वतन्त्र है कि तुम्हें कहां रखा जाएं? शायद तुम दोनों को कालकोठरी के अन्दर तब तक रखा जाएगा जब तक की तुम्हारी इह लीला समाप्त नहीं हो जाती। तुमने मेरे साथ, इस समाज के साथ इतना बड़ा विश्वासघात किया है कि जी करता है तुम्हें मैं अपने हाथों से तड़फा-तड़फा कर मारूं लेकिन मैं मजबूर हूं।"

लेडी केलरिक ने लार्ड विक्टर के हाथों से हुक्मनामा छीन लिया फिर उसे पढ़ने लगी। उसके बाल बिखरे थे। हुक्मनामे को पढ़कर वह बेहताशा हंसने लगी अब वह चुड़ैल लग रही थी। फिर गुर्राकर बोली "क्या तुम्हारी भाषा में इसी को हुक्मनामा कहते है? इस पर ना ही तो किसी के दस्तखत है और ना ही मोहर। फिर मैं इसे क्या समझू? मैं इसको नकली समझूं या.....। तुम्ही बोलो! क्या तुम मेरा मूर्ख बनाने के लिए इसे लाए हो।"

लार्ड विक्टर हंस पड़े और उसकी तरफ देखने लगे फिर बोले "वाह री शातिर औरत! मुझे मालूम था कि तुम ऐसा ही कहोगी और तुम जैसी औरत से उम्मीद भी यही थी। मुझे मालूम है कि तुममे कानून की जानकारी खूब है। हो भी क्यों ना? घाट-घाट का पानी जो पिया है कदम-कदम पर कानूनी दांव-पेचों से जो निकली हो। हां मैं कल ही इसको बकिंघम के सम्राट ड्यूक के पास दस्तखत के लिए भेज दूंगा।

वहीं इस पर मोहर भी लग जाएगी। चिन्ता मत करो आज तुम्हें कहीं भेजा भी नहीं जा रहा है जब तक इस हुक्मनामे पर दस्तखत नही हो जाते तुम अपना सिर इन्हीं पत्थरों में पटकती रहो और पुराने पापों की गिनती करती रहो।"

लार्ड विक्टर के चले जाने के बाद लेडी केलरिक ने एक गहरी निश्वास छोड़ी और लार्ड विक्टर को जाते हुए देखती रही। ऐसा लग रहा था कि अगर कोई पत्थर या हथियार होता तो अवश्य ही वह लेडी लार्ड विक्टर पर दे मारती और फिर मन ही मन बोली "खैर अभी दो-तीन दिन मैं तो दस्तखत होंगे। चलो अभी दो तीन दिन तो मेरे पास है ही फिर वह तीखी-तीखी मुस्कुरा पड़ी।

लेडी केलरिक को यह तो मालूम चल ही गया कि फेल्टन नाम का दारोगा जो उसे इंग्लैण्ड के बन्दरगाह से यहां तक लाया है एव जो उसकी देखरेख के लिए रखा गया है वह लार्ड विक्टर का बहुत विश्वास पात्र आदमी है। परन्तु लार्ड विक्टर यह नहीं जानते थे कि जिस औरत को आज तक ईश्वर नहीं समझ पाया वह मामूली इन्सान क्या समझेगा? औरत अगर अपनी जिद पर आ जाती है तो बड़े-बड़े राजाओं का सत्यानाश हो जाता है, धरती फट जाती है और अगर किसी से घृणा करने लगती है तो उसका सर्वनाश कर देती है। वह अभी तक मर्द जात को ही बेवकूफ बनाती आई है। वह मर्दों की कमजोरी को अच्छी तरह जानती थी। उसने सोचा कि दारोगा फिल्टन की भी अवश्य कोई न कोई कमजोरी होगी। दो दिन का समय बहुत होता है वह यहां से भाग निकलने में जरूर फेल्टन की कमजोरी का लाभ उठाएगी। उसे यह भी अच्छी तरह मालूम था कि मर्द विधवा औरत को दया और सहिष्णुता भरी नजरों से देखते है वैसे भी मर्द को कमजोर बनाने के लिए तो औरत के दो आंसू ही काफी है।

लेडी केलरिक को अब यह पता लगाना था कि फेल्टन किस धर्म से सम्बन्ध रखता है क्योकि वह जानती थी कि आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी उसका धर्म है। अगर वह धर्म को स्वीकार नहीं करता तो

विधवा के नाम पर दो आंसू बहा दो आदमी टूट जाएगा। शाम तक उसने यह पता लगा लिया था कि फेल्टन प्यूरिटन धर्म का मानने वाला था उसको यह भी पता चला कि फेल्टन अपने धर्म के प्रति कट्टर था इसलिए बकिंघम के सम्राट ड्यूक और उनके साथ के लोगों के प्रति उसकी जरा भी श्रद्धा नहीं थी। इन दिनों इंग्लैण्ड में धार्मिक मतभेद बहुत ज्यादा था, अपने अपने धर्म के प्रति सभी लोगों की भावनाएं थी व दूसरे धर्म के प्रति जरा भी भावना नहीं थी लोग छोटी-छोटी बातों पर धर्मान्धता में लड़ जाते थे। लेडी केलरिक इसी बात का फायदा उठाना चाह रही थी। अब फेल्टन को प्रभावित करने के लिए अपना रहन सहन बदल लिया वह ऐसे लगने लगी मानों वह प्यूरिटन धर्म को मानने वाली है।

अगले रोज सुबह जब फेल्टन के आने का समय हुआ तो लेडी केलरिक ने अपना त्रिया चरित्र दिखाना शुरू कर दिया। जैसे ही फेल्टन उसके सामने आया तो रोने लगी और आंसू बहाते हुए बोली "देखिए मैं नही जानती कि तुम किस धर्म के अनुयायी हो परन्तु मैं प्यूरिटन धर्म को मानती हूं तुम तो जानते ही हो की लार्ड विक्टर और ड्यूक इस धर्म के लोगों को बड़ी हेय दृष्टि से देखते है मुझे भी इन्होंने वर्षों से परेशान कर रखा है और अब तुम देख ही रहे हो कि मुझे देश निकाला दे रहे है। शायद ये लोग प्यूरिटन धर्म को इंग्लैण्ड से खत्म ही करना चाहते है। देखो ना मुझे चारों तरफ से समुद्र से घिरे टापू में रखा जा रहा है।"

उसके घडियाली आंसू उसके वक्षस्थल भिगो रहे थे जिसे देख फेल्टन को बहुत दुःख हुआ वह बोला "रोओ मत मैं भी प्यूरिटन धर्म को मानने वाला हूं।" उसके हावभाव देखकर केलरिक मन ही मन खुश हो रही थी फिर बोली "क्या आप इग्लैण्ड से प्यूरिटन धर्म खत्म होते हुए देख सकते है? क्या तुम्हें अपनी जवान बहन पर इस तरह के जुल्म अच्छे लगते है? मैं तो इस संसार में अकेली हूं। विधवा हूं ना। इसलिए मेरी सुनेगा भी कौन? एक सम्राट ही तो है परन्तु वह भी मेरे धर्म का

विरोधी है आज अगर वो होते तो! भैया अब तो सिर्फ आप ही है जो मुझे इस कैद से छुटकारा दिला सकते है। फेल्टन को लार्ड विक्टर और सम्राट ड्यूक पर गुस्सा आ रहा था तभी फेल्टन ने लेडी केलरिक के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा "चुप हो जा मेरी बहन अभी तेरा भाई जिन्दा है इसके रहते तुम्हारा कोई कुछ नहीं कर सकता। मेरी हर सम्भव कोशिश होगी कि तुम स्वतन्त्र हो जाओ।"

लार्ड विक्टर खुश था कि लेडी केलरिक नाम की मुसीबत यहां से दो दिन बाद चली जाएगी। लार्ड विक्टर अगले दिन लेडी केलरिक के पास आया और बोला "कहो केलरिक रात कोई परेशानी तो नहीं हुई? मैं आज तुम्हारे पास यह बताने के लिए आया हूं कि अब तुम्हें दक्षिण महासागर के एक टापू पर रखा जाएगा परन्तु अभी यह नही बता सकता कि उस टापू का नाम क्या है?" लेडी केलरिक मुस्कुराई और बोली "चलो जब तुमने यह ठान ही लिया है कि मैं तुम्हारी नजरों से दूर रहूं तो ऐसा ही सही। मुझे कहीं भी भेजो मैं तैयार हूं।"

इतना कहकर लार्ड विक्टर चला गया और लेडी केलरिक की मुस्कान और गहरी हो गई और मन ही मन बोली "विक्टर साहब अब देखना यह है कि केलरिक अनजान टापू पर जाती है या कहीं और? तुम अपनी चाल चले जाओं लेकिन शतरंज के पासे तो मेरे हाथ में है अब तुम्हें देखना है कि मेरे पासे किस तरफ पड़ेंगे? और वह फिर एक बार घायल शेरनी की भांति फूंकार उठी।

उस दिन लेडी केलरिक सोचती रही कि फेल्टन को अपने शिकंजे में ऐसा कस लिया है कि वह मुझे मुक्त कराकर ही रहेगा। उस दिन शाम को आकाश में बादल हो रहे थे रह-रहकर बादल गरज रहे थे लगता था बड़ा भयंकर तूफान आने वाला है तभी मूसलाधार पानी बरसने लगा। जैसे जैसे समय बीतता गया तूफान और तीव्र हो गया। अब समुद्र की लहरें गर्जना करने लगी। अचानक रात को करीब ग्यारह बजे समुद्र की तरफ की खिड़की से धीरे से आवाज आई।

मूसलाधार बारिश के कारण लेडी केलरिक ने सारी खिडकियां बन्द

कर रखी थी जब खिड़की से खटखटाने की आवाज आई तो वह तुरन्त पहचान गई कि अवश्य ही यह आवाज फेल्टन की है जो उसकी सहायता के लिए थी। तुरन्त उसने पीछे की तरफ खुलने वाली खिड़की को खोला तो उसका अंदाजा सही निकला। उसने देखा कि आकाश में गहन अन्धकार था। जिसमें फेल्टन पानी में भीग रहा था। वह लेडी केलरिक को देखकर मुस्कुरा पडा और बोला "देखो तुम घबराना मत तुम्हारी खिड़की के अभी सारे सींखचे नहीं कटे है इसके अभी दो सींखचे काटने बाकी है। वह भी मैं अभी काट रहा हूं तुम तैयार होकर बिस्तर पर बैठी रहना जब मैं सारे सींखचे काट लूंगा तो इशारा करूंगा यहां भी नीचे पहरेदार पहरा दे रहे है इसलिए सींखचों को काटने में देरी हो रहा है। हालांकि मौसम बहुत खराब है परन्तु मैं चाहता हूं कि ऐसे खराब मौसम में ही तुम निकल चलो तो अच्छा हो। इतना कहने के बाद वह अपने काम मे लग गया।

लेडी केलरिक अब तैयार होकर बिस्तर पर बैठकर फेल्टन के इशारे का इन्तजार करने लगी। हां फेल्टन सींखचों पर आरी तभी चलाता जब जोर की बिजली कडकती। जब सारे-सींखचे कट गए तो लेडी केलरिक का दिल जोर-जोर धड़कने लगा। तभी केलरिक जंगले के पास पहुंची और फेल्टन ने उसे सहारा देकर खिड़की से पार कर लिया। केलरिक ने देखा कि फेल्टन सारे इन्तजाम किए था उसने समुद्र से खिडकी तक एक रस्से की सीढ़ी बना खिड़की से बांध रखी थी। जिस पर वह खडा होकर सींखचे काट रहा था। लेडी केलरिक के पास एक थैला था जो फेल्टन ने ले लिया और फेल्टन के साथ-साथ वह सावधानी से रस्सी की सीढ़ी से नीचे उतरने लगी। फेल्टन बराबर उसको सहारा दे रहा था। अभी वे उतरने ही वाले थे कि समुद्र के किनारे किसी के पैरों की आहट आई लेडी केलरिक बुरी तरह घबरा गई परन्तु फेल्टन बोला "देखो ऐसे में हमें बहुत सावधानी बर्तनी होगी जरा सी चूक भी हमारे लिए फांसी का फन्दा बन सकती है।"

केलरिक की घबराहट देख फेल्टन बोला "देखो नीचे पहरेदार पहरा

दे रहे हैं। अभी तक तो तुम आसानी से उतर आई लेकिन यहां पर थोड़ी सी सावधानी की जरूरत है। चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। ईश्वर हमारे साथ है तुम चुपचाप सांस रोके खड़ी रहो इन पहरेदारों ने अभी हमें देखा नहीं है और ना ही देख पाएंगे क्योंकि मैंने जगह ही ऐसी चुनी है। हम पहरेदारों को देख सकते है परन्तु ये हमें नहीं देख सकते। जब ये लोग यहां से चले जाएंगे। तब हम नीचे उतर जाएंगे।"

लेडी केलरिक और फेल्टन सांसे रोके वहीं रस्सी की सीढ़ी पर खड़े रहे। उधर समुद्र में उठी ऊंची-ऊंची लहरें पत्थरों से टकराकर तेज आवाज कर रही थी। अभी भी मूसलाधर बारिश हो रही थी। हवा में ठंडक थी वे दोनों खड़े-खड़े कांप रहे थे। तभी थोड़ी सी देर बाद पहरेदार वहां से चले गए। लेडी केलरिक और फेल्टन सीढ़ी पर से नीचे पत्थरों पर कूद पड़े। अब वे किले के बाहर थे। फेल्टन ने सन्तोष की सांस ली। अब फेल्टन झाड़ियों से बचता हुआ आगे-आगे चल रहा था। रास्ता कंटीली झाड़ियों से भरा पथरीला था उसके पीछे-पीछे लेडी केलरिक भी सम्हल-सम्हल कर चल रही थी। फेल्टन को समुद्र के किनारे पहुंचने का एक गुप्त रास्ता मालूम था वे दोनों उसी रास्ते से समुद्र के किनारे पहुंच गए।

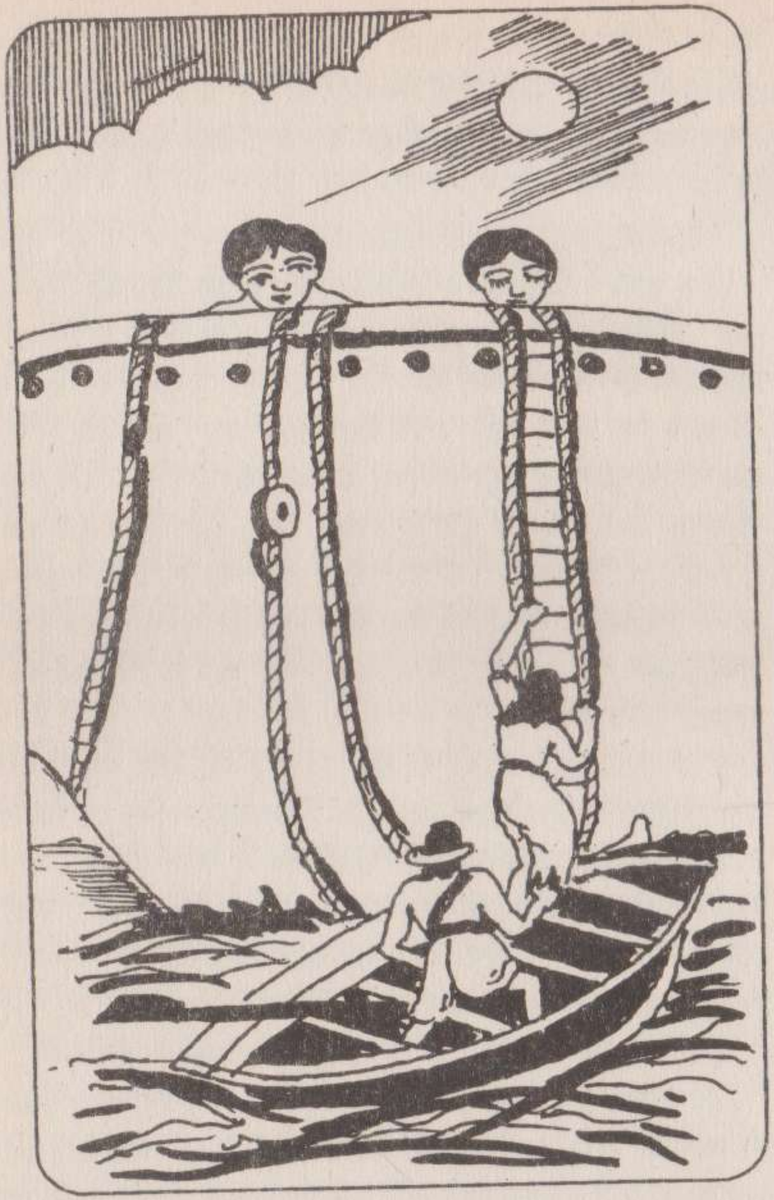
समुद्र के किनारे बिलकुल अन्धेरा था फेल्टन ने यहां भी सारा इन्तजाम कर रखा था। उसने इधर-उधर देखा तो उसे कुछ भी नजर नहीं आया। अब बारिश थम चुकी थी और वे दोनों भीग चुके थे। अब ठंडी हवाएं चल रही थी उनके सारे कपड़े बदन से चिपक हुए थे। फेल्टन ने इधर ऊधर देखा जब वह निश्चित हो गया कि आसपास कोई भी नहीं है तो उसने तीन बार सीटी बजाई और अपने दाहिनी और देखने लगा। तभी कुछ ही समय बाद लहरों को चीरती हुई एक नाव उनके पास आ गई उसके मल्लाहों ने फेल्टन को सिर झूकाकर सलाम किया फेल्टन ने अभिवादन में हाथ हिलाया और लेडी केलरिक को लेकर नाव में बैठ गए। तभी मल्लाहों ने नाव की गति तेज कर दी। देखते ही देखते उनकी नाव किनारे से काफी दूर निकल गई थी। फेल्टन सोच रहा था

कि एक प्यूरिटन महिला मेरे हाथों इसके चगुंल से निकल गई। उधर लेडी केलरिक खुश थी कि वह यहां से विक्टर की कैद से भागकर फिर अपना जाल बुनेगी। वह सोच रही थी कि मर्द भी कितना कमजोर होता है?

कुछ देर बाद नाव एक जहाज के नजदीक पहुंच गई तो लेडी केलरिक खुशी से चीख पड़ी और उसने फेल्टन के इस काम को सराहा। फेल्टन मुस्कुराकर बोला "देखो मैंने सिर्फ तुम्हें आजाद कराने के लिए ही यह जहाज किराए पर लिया था। मुझे पोर्ट्स माउथ के बन्दरगाह पर उतरना है वहां से मैं सम्राट ड्यूक के पास जाऊंगा। लार्ड विक्टर की आज्ञानुसार मुझे तुम्हारे हुक्मनामे पर दस्तखत कराने है तुम आगे जहां भी जाना चाहो ये जहाज तुम्हें वहीं उतार देगा। ड्यूक सिर्फ मुझे कल ही मिलेंगे क्योंकि फिर वे एक फौज लेकर रोचल की लड़ाई में भाग लेने जा रहे है। इसलिए मैं तुम्हारे साथ आगे नहीं जा सकता उसके लिए माफी चाहूंगा वैसे ये जहाज अब तुम्हारा है तुम जहां कहोगी वहां तुम्हें सकुशल पहुंचा देगा।

लेडी केलरिक ने फेल्टन को चोर नजरों से देखा और मन ही मन कहा "कितना बेवकूफ है लार्ड विक्टर का विश्वासपात्र। फिर वह फेल्टन से बोली "भैया तुमने मुझे उन जल्लादों की कैद से मुक्ति दिलाकर बहुत बड़ा काम किया है तुमने तो प्यूरिटन धर्म की रक्षा की, तुम्हारा नाम तो इंग्लैण्ड के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाना चाहिए पर आदमी के जिन्दा रहने पर उसके महत्व को कोई नहीं समझ पाता। हां मरने के बाद ही उसके कामों को सब पूजते है ईश्वर आपका भला करेंगे।"

तब तक नाव जहाज के नजदीक पहुंच गई थी। जहाज का इंजन तो चालू था परन्तु वह चल नहीं रहा था शायद उन्हें हमारे आने का आभास हो गया था इसलिए उन्होंने रस्सी की सीढ़ी नीचे लटकाई हुई थी। लेडी केलरिक फेल्टन की इस व्यवस्था से बहुत खुश थी। वे दोनों उस सीढ़ी के सहारे ऊपर पहुंच गए जहां जहाज के कप्तान ने फेल्टन का गर्मजोशी के साथ स्वागत है। किया उसने बड़े अदब के साथ



झुककर लेडी केलरिक को भी सलाम किया जिसका अभिवादन केलरिक ने मुस्कुरा कर दिया। फिर फेल्टन ने लेडी केलरिक का परिचय जहाज के कप्तान से कराया और बोला "देखो इनको फ्रांस की धरती पर

बोलोन बन्दरगाह पर छोड़ देना। हां यह मैं कह रहा हूं बाकी ये जहां भी उतरना चाहे इन्हें सकुशल पहुंचा देना। मैंने इन्हीं के बारे में तुम्हें बताया था यह एक संभ्रान्त महिला है और प्यूरिटन धर्म को मानती है।" फिर फेल्टन लेडी केलरिक से बोला "ये कप्तान भी बहुत भले आदमी है व प्यूरिटन धर्म के ही अनुयायी है।" हां तो तुम्हें पांच सौ मुहरें तो दी जा चुकी है और सात सौ मोहरे और देना बाकी है फेल्टन ने कहकर जेब में हाथ डाला ही था कि लेडी केलरिक ने कहा---

"नहीं! अब तुम कप्तान को धन मत दो। मैं इन्हें इनका सारा पैसा दे दूंगी। वह कप्तान से बोली "कप्तान मुझे बोलोन बन्दरगाह पर जाना है यह मैं निश्चित कर चुकी हूं जैसा कि अभी तुम्हें फेल्टन ने बताया। हां अगर तुमने मुझे बोलोन में सही सलामत पहुंचा दिया तो मैं तुम्हें सात सौ मोहरो के अलावा पांच सौ मोहरे और दूंगी।"

पोर्हस माऊथ बन्दरगाह जब थोड़ी दूर रह गया तो कप्तान ने समुद्र में एक नाव उतार दी और फेल्टन रस्सी की सीढ़ी के सहारे उतर गया और सम्राट ड्यूक से मिलने के लिए रवाना हो गया। फेल्टन को लेडी केलरिक को अकेला छोड़ना असहाय हो रहा था। चूंकि लेडी केलरिक को फेल्टन के जरिए इंग्लैण्ड से बहुत दूर जाना था कहीं रास्ते में फेल्टन की नीयत खराब न हो जायं इसलिए उसने फेल्टन को अपना भाई बना लिया। अब लेडी केलरिक कप्तान के साथ थी उसका मासूम चेहरा उसे अच्छा लगा फेल्टन ने विदा होते समय लेडी केलरिक से कहा "देखो आज जब विक्टर तुम्हें वहां नहीं देखेगा तो वह चारों तरफ आपको ढूंढेगा तब तक तुम इंग्लैण्ड की सीमा से बाहर निकल जाओगी। हां अगर मुझे गिरफ्तार नहीं किया गया तो मैं अपना काम पूरा करके तुमसे फ्रांस की धरती पर वेपून नाम के नगर के प्यूरिटन धर्म के मठ में मिलूंगा।" लेडी केलरिक मुस्कुराकर बोली "ईश्वर तुम्हारी यह इच्छा भी पूरी करेगा।

लेडी केलरिक को कप्तान की नियत भी ठीक नहीं लगी जबकि खुद भी कप्तान को एक ही नजर में चाहने लगी। क्या करे? फेल्टन ने

उसका परिचय ही कप्तान को प्यूरिटन धर्म की सन्यासिनी कहकर कराया था। जैसे ही फेल्टन अपनी नाव मे बैठा तो कप्तान ने जहाज की रफ्तार तेज कर दी अभी जहाज इंग्लैण्ड की सीमा में ही था और फ्रांस की सीमा आने में करीब चालीस मील का रास्ता बाकी था। कप्तान चाहता था कि वह जल्द से जल्द इग्लैण्ड की सीमा के पार पहुंच जांए।

●●





दस

जब फेल्टन ने पोर्टस माऊथ की जमीन पर कदम रखा तो सुबह का सूरज काफी ऊपर पहुंच गया था जब फेल्टन ने गिरजाघर की घड़ी की तरफ देखा तो सात बज चुके थे सड़कों पर चहल-पहल थी उसे याद था कि आज शाम को सम्राट को युद्ध करने जाना है समुद्र के किनारे सिपाहियों का जमघट लग रहा है बाजार में काफी गहमा गहमी थी बाजार की सड़कों को पार करता हुआ वह ड्यूक के महल के पास पहुंचा।

लार्ड विक्टर और ड्यूक की गहरी दोस्ती थी। वह लेडी केलरिक के बारे में जानता था कि वह लार्ड विक्टर के छोटे भाई की पत्नी है जो कि कुछ समय पहले ही इस संसार से विदा हो गए है। लार्ड विक्टर ने ड्यूक को लेडी केलरिक की चालाकियों से परिचित करा दिया था। जब एक सिपाही ने ड्यूक को बताया कि लार्ड विक्टर का एक आदमी आपसे मिलना चाहता है तो ड्यूक ने फौरन उसे आदर सहित अपने पास बुलाने का हुक्म दिया।

अन्दर जाकर फेल्टन ने सम्राट ड्यूक को झुककर सलाम किया ड्यूक ने कहा "कहो विक्टर कैसे हैं और तुम मेरे पास क्या सन्देश लेकर आए हो?" तो फेल्टन ने ड्यूक से कहा "महाराज वह महिला जिसको देश निकाले का हुक्म दिया जा रहा है वह तो बहुत भली महिला है और धार्मिक प्रवृत्ति की है मुझे नहीं लगता कि उस महिला का कोई दोष है वह तो देवी है उसका कसूर सिर्फ इतना है कि वह पति के मरने के बाद अनाथ हो गई है ऐसी बेसहारा औरतों के समाज में दुश्मन की कोई कमी नहीं है आप इस हुक्मनामे पर दस्तखत करने के बजाय एक दूसरा



ही हुक्मनामा बनाइए और उस पर दस्तखत कर दीजिए ताकि उस औरत को स्वतन्त्र रहने की इजाजत मिल सके। उसमें उसकी रिहाई का हुक्म लिख दीजिए।" यह कहकर फेल्टन ने हुक्मनामे के साथ-साथ एक

दूसरा कोरा कागज निकाल कर सम्राट ड्यूक के सामने रख दिया।

ड्यूक को उसकी बातें सुनकर गुस्सा आया वह दहाड़ उठा और बोला "तुम्हे पता है तुम क्या बक रहे हो और किसके सामने खड़े हो? लार्ड विक्टर को मैं अच्छी तरह से जानता हूं वह कोई फैसला गलत नहीं ले सकते। फिर मुझे क्या करना है और क्या नहीं इसकी राय देने वाले तुम होते कौन हो?"

फेल्टन को तो लेडी ने खूब अच्छी तरह धर्म का पाठ दिया था उस पर तो लेडी केलरिक का नशा सवार था। उसे इस वक्त धर्म के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था वह तो अब वहीं कर रहा था जो उससे लेडी केलरिक ने कहा था। उसके दिमाग में इंग्लैण्ड के सम्राट ड्यूक प्यूरिटन धर्म के सबसे बड़े शत्रु थे। वह तनिक भी ना घबराया और ना ही हिचकिचाया और ड्यूक के सामने छाती तान कर बोला "ड्यूक तुमने अपने आपको समझ क्या रखा है? अरे तुम्हारे राज में तो जनता त्राहि-त्राहि कर रही है वह तो तुम जैसे राजा से परेशान है आप अपना राज्य मनमाने ढंग से चला रहे हे पूरे राज्य पर तुम्हारी तानाशाही चलती है क्या कभी तुमने जनता के बीच जाकर उनके दुःख दर्द सुने है? सच पूछो तो तुम राजा बनने लायक ही नहीं हो। दो चार चाटूकार कुत्ते तुमने पाल रखे है जिन्हें तुम अपना विश्वासपात्र बताते हो। मैं इन सब बातों से तुम्हें आगाह कराना चाहता हूं अभी भी वक्त है अपने को बदल डालो इस चाटुकारों की बातों से मत आओ और जनता के दुःख दर्द का अहसास करो ताकि जनता तुमसे खुश रहे। अगर ऐसा नही किया तो जिस जनता ने सम्राट बनाया है वह गद्दी से उतारना भी जानती है। आपको इस कोरे कागज पर तो दस्तखत करने ही पड़ेगे क्योंकि लेडी केलरिक एक धार्मिक विचारों की महिला है एवं भली है। उसके साथ देश निकाले की सजा अन्याय होगी। अगर उसने कोई अपराध किया है तो और कोई दण्ड दीजिए?"

सम्राट ड्यूक को फेल्टन की एक-एक बात चुभ रही थी। अब उसकी बातें असहनीय हो गई थी उसने देखा उसकी तलवार दूर रखी

है। राजा का गुस्सा बहुत ज्यादा बढ़ गया था जैसे ही वह अपनी तलवार लेने के लिए उठा तो फेल्टन उसका इरादा भांप गया और उसने कमर में से छुरी निकाल ली और उसे लेकर सम्राट के सामने खड़ा हो गया।

ड्यूक अचानक इस हमले से घबरा गया और दो कदम पीछे हट गया फिर उन्होंने अपने नौकर को बुलाया। बेशक ड्यूक सम्राट था परन्तु इस समय वह निहत्था था और सामने वाले के हाथ में छुरी थी ड्यूक समझदार और चालाक आदमी था उसने सोचा कि अब जल्दी नहीं दिखानी चाहिए। पर फेल्टन का तो कुछ और ही इरादा था उसने सोचा अब देर करनी ठीक नही है एक पल की भी देरी उसे हमेशा के लिए सुला सकती है। वह फौरन सम्राट की तरफ उछला तब तक सम्राट कुछ कर पाता फेल्टन ने छुरी उसकी छाती में घोंप दी। सम्राट ड्यूक लहुलुहान हो जमीन पर गिर पड़े।

सम्राट ड्यूक और फिल्टन कमरे में अकेले थे इसी का फायदा उठा फेल्टन ने ड्यूक पर वार किया। अभी डयूक का कोई आदमी कमरे में नहीं आया था। फेल्टन ने इसका फायदा उठाया जब तक ड्यूक का आदमी कमरे में आ पाता फेल्टन खिड़की में कूद कर महल के बाहर आ गया उसने इधर-उधर देखा फिर चल दिया उसके कपड़े खून से सने थे। तभी एक मोड़ पर अचानक उसे लार्ड विक्टर मिल गया जो उसी की तरफ आ रहा था। उसे अचानक देखकर फेल्टन घबरा गया।

लार्ड विक्टर को जब पता चला कि लेडी केलरिक खिड़की की सलाखें काटकर फरार हो गई है तो वह फौरन सम्राट ड्यूक के पास पहुंचा वह हांफते हुए चला आ रहा था जब उसने देखा कि फेल्टन सम्राट के महल से खून से सनी छुरी लेकर भाग रहा है तो उसे समझते देर नहीं लगी कि अवश्य कोई अनहोनी हो गयी है। हो ना हो लेडी केलरिक को भागने में इसका हाथ हो और यह सम्राट का खून करके भाग रहा हो।

लार्ड विक्टर ने फेल्टन के हाथ में छुरी देखकर सोचा कि इस समय इस पर खून का भूत सवार है इसलिए अब समझदारी से काम लेना



चाहिए। वह बोला "देखो फेल्टन तुमने जो कुछ भी किया वह अच्छा नहीं किया। वह स्त्री राक्षसी प्रवृत्ति की थी मैंने तुम्हें उसके बारे में सब

कुछ बताया था मैं नहीं समझता था कि मेरा इतना विश्वासपात्र आदमी इस कदर उसकी बातों में फंसकर इग्लैण्ड का इतना बड़ा नुकसान कर बैठेगा।"

फिर भी लार्ड विक्टर ने लेडी केलरिक का सारा किस्सा बयान दिया और बताया कि वह स्त्री कितनी चालाक थी और अब तक कितने ही अपराध कर चुकी है और तुम उसकी चालाकी भरी बातों में उलझकर खुद अपना ही नुकसान कर बैठे।

जब लार्ड विक्टर की बातें फेल्टन ने सुनी तो वह चक्कर में पड़ गया क्या सच है और क्या झूठ वह समझ ही नहीं पाया? फिर वह बोला "लेकिन उसने तो बताया था कि वह प्यूरिटन धर्म को मानने वाली है और उसी धर्म के लिए अपना जीवन जी रही है चाहे उसे कोई कितना ही क्यों ना सताए? उसने यह भी बताया कि विक्टर बार-बार मुझसे धर्म परिवर्तन के लिए कह रहा है और जब मैंने धर्म परिवर्तन से साफ इन्कार कर दिया तो उसने मुझे देश निकाला दे दिया। उसने मुझसे हमेशा साथ देने का वादा किया था उसने तो यहां तक कहा कि धर्म के लिए वह कुछ भी कर सकती है और अगर मैं धर्म के युद्ध में मारा जाऊं तो निश्चित ही वह भी अपनी जान दे देगी। एक तरफ तो वह धर्म के लिए मरने को तैयार है और दूसरी तरफ तुम......। समझ नहीं आता कि तुम दोनों में से कौन कितना सही है?"

लार्ड विक्टर दांत पीस कर क्रोध से बोला "अरे मूर्ख मरेगी वह नहीं मरना तो अब तुम्हें पड़ेगा और तुम्हारी जलती चिता पर वह ठहाका मार कर हंसेगी और अपने हाथ गर्म करेगी। तुम्हें पता नहीं तुमने उस दुष्ट स्त्री के बहकावे में आकर क्या कर डाला? तुमने उसे भगाकर बहुत बड़ा अनर्थ कर दिया है अब पता नहीं वह दुष्ट औरत और किस-किस का सर्वनाश करेगी?"

सारी बातें सुनकर फेल्टन इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वास्तव में उसने बहुत बड़ी गलती की है गलती ही नही वरन इग्लैण्ड के साथ बहुत बड़ा अपराध किया है जो क्षमा योग्य नहीं है। उससे अब खड़ा नहीं हुआ

जा रहा था वह माथा पकड़ कर जमीन पर बैठ गया। लार्ड विक्टर के पीछे-पीछे उसके सिपाही भी चले आ रहे थे लार्ड विक्टर ने आदेश दिया कि इसे गिरफ्तार कर लो। फौरन सिपाहियों ने उसे हथकडियां पहना दी। लार्ड विक्टर ने कहा "तुम यह मत समझ लेना कि सिर्फ मुझको ही सजा मिलेगी और दोषी मैं ही हूं। सजा तो उस दुष्ट स्त्री को भी मिलेगी, हां वह भागकर खुश होगी कि अब मुझे कोई पकड़ नहीं पाएगा लेकिन अगर वह धरती के अन्दर भी गई तो मैं उसे ढूंढ़ निकालूंगा और उसे इस बार ऐसी सजा दूंगा कि वह आगे से भागना भी भूल जाएगी।"





ग्यारह

जैसे ही सम्राट की मृत्यु की खबर फैली तो जनता त्राहि-त्राहि कर उठी। लार्ड विक्टर ने फेल्टन की किस्मत का फैसला जनता के हाथों में छोड़ दिया। जनता बहुत गुस्से में थी उस समय की प्रथा थी कि दोषी आदमी को जनता पत्थरों से मार-मार कर उसकी जान ले लेती थी यही हश्र फेल्टन का भी हुआ। अब लेडी केलरिक की बारी थी अर्थात उसे खोजना बाकी था। लार्ड विक्टर ने फ्रांस की सीमा पर जगह-जगह सिपाहियों का जाल बुन दिया आखिर लार्ड विक्टर के अथक परिश्रम ने रंग ला ही दिया और लेडी केलरिक का पता चल गया। वह दुष्ट स्त्री फ्रांस की सीमा में बेथून शहर में रह रही थी।

लार्ड विक्टर को जैसे ही पता चला कि लेडी केलरिक फ्रांस में रह रही है तो वह वह अकेला ही फ्रांस की ओर चल दिया और वहां जाकर वह तीन तिलंगे ऐथोस, पार्थस और अरामिस से मिला। फिर वह दार्ता से भी मिला और सारी स्थिति से अवगत कराया। उसे यह भी बताया कि वह स्त्री बैथून में रह रही है क्योंकि तुमने उसे अच्छी तरह देखा है इसलिए उसे पकड़ने में तुम ज्यादा सहयोग दोगे। दार्ता पहले से ही लेडी केलरिक से घृणा करता था जब उसे पता चला कि लेडी केलरिक लार्ड विक्टर को चकमा देकर भाग गई है तो उसके गुस्से की सीमा न रही। उसने तीनों साथियों के साथ कसम खाई कि अब वह किसी भी कीमत पर लेडी केलरिक को खोज कर रहेगा और उसे उसकी करनी की सजा अवश्य दिलवाएगा।

दूसरे दिन ऐथोस, पार्थस और अरामिस के साथ दार्ता भी लेडी केलरिक को खोजने के लिए जाने को तैयार हो गया, तभी ऐथोस बोला

"देखो हम लोग अभी नही जा सकते क्योंकि हमें भी किसी का इन्तजार है। अभी कुछ ही देर बाद वह आने वाला है फिर हम उस व्यक्ति के साथ बैथून शहर को जाएंगे।

ऐथोस के तीनों साथी अचम्भे से उसकी तरफ देखने लगे क्योंकि ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता कि कोई बात हो और उन्हें आपस में पता ना हो। उनके साथियों ने पूछा "क्यों ऐथोस ऐसा वह कौन सा व्यक्ति है जिसके बारे में अभी तक हमें भी पता नहीं है?"

ऐथोस ने कहा "देखो हम एक ऐसे काम से जा रहे है जो फ्रांस के साथ-साथ इंग्लैण्ड के लिए भी महत्वपूर्ण है मैं अभी इस बारे में कुछ भी नहीं बताऊंगा। हां इतना अवश्य है कि समय आने पर इसके बारे में मुझे बताने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। तुम्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा।

जब उन्होंने देखा कि ऐथोस उसके बारे में बताने के लिए राजी नहीं है तो उन्होंने बाध्य भी नहीं किया और चुप हो गए। तभी थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति घोड़े पर सवार वहां आ पहुंचा उसने आकर ऐथोस से हाथ मिलाया। पार्थस, अरामिस और दार्ता इतना तो समझ ही गए थे कि ऐथोस को जिस आदमी का इन्तजार था यही वह आदमी है। वह जिरह बख्तर पहने हुए था उसने चेहरे पर भी नकाब डाली हुई थी इस वजह से कोई उसे पहचान नहीं पाया किसी ने यह जानने की कोशिश भी नहीं की क्योंकि जब इस आदमी को ऐथोस जानता है तो अवश्य ही यह आदमी विश्वासपात्र होगा।

ऐथोस ने उस व्यक्ति से कहा "देखो हम लोग बिल्कुल तैयार है सिर्फ आपका ही इन्तजार था अब हमें ज्यादा देर नहीं करनी चाहिए और यहां से चल देना चाहिए। फिर वे लोग अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो बैथून नगर की ओर चल पड़े। बैथून काफी दूर पड़ता था वे दिन भर चलते रहे। अब उन चारों के चेहरे पर थकावट थी परन्तु किसी को पकड़ने की बैचेनी भी थी। चलते-चलते वे शाम को बैथून नगर जा पहुंचे लेकिन वह रूके नहीं क्योंकि वह तो अपनी मन्जिल को आज ही



पा जाना चाहते थे। थोड़ी देर बाद वे सब एक मकान के आगे खड़े हो गए। उन सबको रोककर ऐथोस अकेला ही आगे बढ़ गया और दरवाजे के आगे जाकर रूक गया।

दरवाजे के पास जाकर वह घोड़े पर से उतर गया और मकान को इधर-उधर से देखने लगा। उसने देखा कि दरवाजे की दाहिनी तरफ कुछ ऊंचाई पर एक खिड़की है जो थोड़ी सी खुली हुई थी उसने उस खिड़की से देखा तो कमरे में एक स्त्री बैठी हुई है। ऐथोस ने उसे फौरन पहचान लिया कि वह स्त्री और कोई नहीं वरन लेडी केलरिक ही थी। ऐथोस ने सोचा कि इस दुष्ट स्त्री को पहचानने में तो वह भूल कर ही नहीं सकता। जिसकी खोज में वे इतनी दूरी से आए थे वह स्त्री उन्हें मिल गई।

अब ऐथोस उसे पकड़ने की योजना बनाने लगा। ऐथोस यह भी अच्छी तरह जानता था कि वह बहुत चालाक औरत है अगर मैं सीधा गया तो वह भाग भी सकती है उसने मकान के पीछे वाले दरवाजे पर अरामिस और दार्ता को खड़ा कर दिया। सिपाही पलक झपकते ही खिड़की से अन्दर कूद पडा। लेडी केलरिक को आभास भी नहीं था कि यहां भी कोई पहुंच सकता है। फिर भी लेडी केलरिक दरवाजे की तरफ भागी जैसे ही उसने दरवाजा खोला तो वह सन्न रह गई उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया, हाथ पांव फूल गए और वह घबरा गई क्योंकि दरवाजे पर नंगी तलवार लिए दार्ता खडा था इस अक्समात हमले से लेडी केलरिक कांप उठी। देखते ही देखते उसके अन्य साथी भी पहुंच गए। अब लेडी केलरिक के साथ "काटो तो खून नहीं" वाली स्थिति आ गई। ऐसी स्थिति में आखिर वह कर भी क्या सकती थी क्योंकि उसे चारों तरफ से घेर लिया था?

लेडी केलरिक ने जब देखा कि उसे चारों तरफ से घेर लिया है तो उसने सोचा कि अगर बचना ही है तो अब आत्मसमर्पण ही आखिरी रास्ता है परन्तु फिर यह विचार तुरन्त झटक दिया और वह बोली "मेरी समझ नहीं आया कि तुम लोग मुझसे क्या चाहते हो? आखिर तुम हो कौन? और तुम्हारे आने यहां आने का क्या उद्देश्य है?"

इस पर दार्ता से पहले ही ऐथोस बोल पड़ा "वैसे तो हम लोग शेरेलट नामक आदमी की खोज में बैथून नगर में आए थे हमें पता चला

था वह इसी मकान में रहता है लेकिन हमें तुम मिल गई। खैर चलो कोई बात नहीं क्योंकि हमें तुम्हारी भी तलाश थी।"

अब लेडी केलरिक चेहरे पर बनावटी गुस्सा लाकर बोली "तुम्हें पता है तुम क्या बक रहे हो? तुम्हें पता नहीं कि मैं एक विधवा स्त्री हूं। चले जाओ अन्यथा मैं छेड़छाड़ के जुर्म में तुम्हें गिरफ्तार करवा दूंगी। भला तुमको मुझसे क्या काम हो सकता है?"

अरे तुम तो ऐसे घबरा रही हो जैसे सचमुच ही तुमने कोई बड़ा पाप किया हो? तभी दार्ता ने अपनी जेब से रूमाल निकाल कर उस महिला को दिया और बोला "देखो घबराहट की वजह से तुमको पसीना भी बहुत आ रहा है लीजिए पौंछ लीजिए अन्यथा आपकी सोचने समझने की शक्ति क्षीण हो जाएगी वैसे भी हम न्याय के लिए ही लड़ते है। देखो ना तुम्हारे ऊपर कितने अन्याय हुए है? धर्म परिवर्तन न होने पर तुम्हें देश निकाला दे दिया और तुम्हारे भाई फेल्टन को इंग्लैण्ड की जनता ने पत्थरों से पीट-पीट कर जान ले ली क्योंकि उसने भी अपने धर्म के खातिर इंग्लैण्ड के राजा ड्यूक की हत्या तक कर डाली। उसने बताया कि उसकी एक विधवा बहन थी असहाय और लाचार। उसने उसी की मदद के लिए ड्यूक को छुरी घोंपकर मार डाला। तुम चिन्ता मत करो तुम्हें अपने बचाव का पूरा हक रहेगा। हां न्यायालय में पहुंच कर तुम्हारे खिलाफ जितनी भी शिकायतें है वे सभी बताई जाएंगी। हां तो दार्ता पहले तुम ही बताओ तुम्हें इनके खिलाफ क्या-क्या शिकायत है?"

दार्ता ने पहले तो ऐथोस को देखा फिर घृणा से लेड़ी केलरिक की और देखकर कहा "इस औरत से मुझे एक शिकायत हो तो मैं बताऊं भी इस औरत की तो इतनी गलतियां है कि मैं गिना नहीं सकता फिर भी मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूं कि इस धूर्त महिला ने मुझे जहर खिलाकार मार डालने की साजिश रची थी खुद इसकी नौकरानी ने मुझे समय रहते आगाह किया और मैं आपके सामने खड़ा हूं लेकिन वह जहर कहीं ना कहीं तो असर करता ही। ईश्वर की कृपा से मैं तो बच गया

परन्तु एक निर्दोष मर गया।

दार्ता की बात सुनकर पार्थास और अरामिस बोल पड़े "दार्ता ने अभी जो कुछ कहा वह अक्षरत सही है हम दोनों इसकी गवाही दे सकते है" फिर ऐथोस बोला "हां तो सम्भ्रांत महिला लेडी केलरिक क्या तुम्हें इसकी सफाई में तुम्हें कुछ कहना है?" इस पर लेडी केलरिक माथा प्रकड़कर बैठ गई तो ऐथोस बोला "क्यो क्या सुनने की शक्ति नहीं रही? केलरिक चुपचाप खड़ी हो जाइए अन्यथा हमें आपके साथ ज्यादातई करनी पड़ेगी अभी तो कई शिकायतें सुननी पड़ेंगी।"

इतना सुनने के बाद वह औरत उठी और कांपकर कहने लगी "यह सब मुझे फंसाने की कोशिश की जा रही है।" तभी ऐथोस ने लार्ड विक्टर से कहा "सर आपको भी अगर इस औरत से अगर कोई शिकायत हो तो आप भी कहिए।" लार्ड विक्टर उस औरत से बेहद घृणा करता था इसलिए उसने लेडी केलरिक की तरफ थूककर कहा "अगर इस औरत के प्रति एक शिकायत हो तो कहूं पर तुम्हारी आज्ञा टाली भी नहीं जा सकती।" फिर लार्ड विक्टर बोले "सबसे बड़ा अपराध तो इस स्त्री का ये ही है कि इसने एक धर्मान्ध आदमी को भड़का कर हमारे सम्राट ड्यूक की हत्या करवा दी परन्तु यह एक देश की अपनी समस्या है मेरी शिकायत यहीं खत्म नहीं होती। मेरे भाई की एक स्त्री के साथ शादी हुई थी और उसकी एक छोटी सी बीमारी में रहस्यपूर्ण मृत्यु हो गई मैं इस बात से परेशान हूं कि वह मौत आखिर कैसे हुई? जिसके साथ मेरे भाई की शादी हुई वह औरत यही थी हालांकि मैंने सुना है कि इसकी पहली शादी फ्रांसिसी आदमी के साथ हुई लेकिन उससे मेरा कोई मतलब नहीं है। बस मैं तो अपने भाई की मौत का कारण जानना चाहता हूं।"

यह सुनकर लेडी केलरिक कुछ नहीं बोली और सिर झुकाए खड़ी रही। तभी ऐथोस बोला "सर अब यह कुछ भी नहीं बोलेगी क्योंकि अब इसके पास बोलने के लिए कुछ है ही नहीं। सबने देखा कि लेडी केलरिक के आंसू आ गए थे और होठ कांप रहे थे। वह बोलना चाहकर भी बोल

नहीं पा रही थी। आखिर उसका सारा रहस्य तो खुल ही चुका था। तभी सबसे बड़ा विस्फोट ऐथोस ने किया वह बोला "अब तुम लोग मेरी भी शिकायत सुन लो। जब मेरी उम्र कम थी तब इस स्त्री की भी उम्र कम ही थी उस समय इसका विवाह मेरे साथ हुआ था"

ऐथोस की यह बात सुनकर सब चौंक पड़े किसी को यह पता ही नहीं था कि इस स्त्री के सम्बन्ध में खुद ऐथोस भी फंस चुका है ऐथोस कुछ रूककर बोला "हां दोस्तों अचरज वाली बात नहीं है। उस समय मैं इसके बारे में इतना नहीं जानता था मेरे घर के सभी लोग इस शादी से सहमत नहीं थे परन्तु मुझे तो इस औरत ने अपने प्रेम जाल में फंसा रखा था मैंने घरवालों की भी परवाह नही की और इसके साथ विवाह कर लिया परन्तु इस औरत का षड्यन्त्र मेरे साथ ज्यादा दिन नहीं चल पाया। शादी के कुछ दिन बाद ही एक दिन अचानक मैंने इसके दाहिने कन्धे पर फूल का दाग बना देखा जिसे देखकर मेरा माथा ठनका। क्योंकि ये निशान अदालत का होता है ऐसा निशान तो सजा काट चुके मुजरिम के दाहिने कन्धे पर दागा जाता है।"

ऐथोस बोला "हां तो बोलो क्या यह सच है कि उस समय तुम्हें सजा मिल चुकी थी? बोलो! अब चुप क्यों हो? इस पर लेडी केलरिक ने मुंह खोला और कांपते-कांपते बोली "हां यह सच है कि मैं सजा काट चुकी थी परन्तु एक न्यायाधीश ने मुझे फसांया था और मेरे साथ अन्याय हुआ था। क्या तुमने हर औरत को एक जैसा समझ रखा है?"

अभी तक वह बख्तर धारी आदमी चुपचाप सब कुछ सुन रहा था परन्तु अब उसके लिए लेडी केलरिक की बातें असहनीय हो गई थी उसने अपने चेहरे से नकाब हटा दिया और बोला "शाबास कोई दे या नहीं दे मैं तुम्हारी इस बात का जवाब दे सकता हूं कि किस न्यायधीश ने तुम्हें गलत फसांया था?"

लेडी केलरिक उसका चेहरा देखकर चीख पड़ी जैसे उसने कोई डरावना सपना देखा हो। वह चेहरे से हाथ लगा फफक-फफक कर रो पड़ी और डर के कारण उसके मुंह से आवाज तक नहीं निकली। ऐसा

लगा जैसे अचानक किसी ने सैकड़ों बिजली के तार उसको छुआ दिए हो या फिर उसने खुली आंखों से किसी भूत को देख लिया हो। फिर वह कांपते हुए हकलाकर बोली "न.....!.....तुम.....जिन्दा.....हो.....!.....हे... ..ईश्वर......!.....यह सपना.....है.....या.....हकीकत।" वह कानों पर हाथ लगाकर चीखी "नहीं ईईईई! यह सब सच नहीं हो सकता।"

सभी हैरत में पड़ गए कि आखिर इस व्यक्ति को देखकर लेडी केलरिक इतना भयभीत क्यों हो गई? आखिर यह आदमी है कौन? तभी दार्ता ने पूछा "मैं नहीं जानता कि इस औरत से आपका क्या सम्बन्ध है? परन्तु आप है कौन? जो आपको देखते ही यह औरत अपने होशोहवाश खो बैठी।"

उस औरत की यह दशा देखकर वह सैनिक अट्टाहस कर उठा। और बोला "यह आप मुझसे पूछ रहे है अच्छा होता कि मैं कौन हूं आप इस पतिता स्त्री से पूछते तो यही बताती? अगर मैंने अपना परिचय अपने आप दे दिया तो.....। यह औरत मुझे नहीं भूल सकती क्योंकि इस औरत को पता है कि मैं मर चुका हूं इसलिए यह औरत मेरा चेहरा देखकर चीख पड़ी।"

यह कहकर वह आदमी लेडी केलरिक की और देखकर कुटिल हंसी हंस पड़ा। केलरिक सोचने लगी अवश्य ही यह आदमी मरा नहीं क्योंकि यह इतने आदमियों के बीच खड़ा मुस्कुरा रहा है फिर भी लेडी केलरिक कांपते हुए बोली "हां मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानती हूं। तुम ही लिली शहर की जेल के जेलर हो। मैं नहीं जानती थी कि तुम अचानक ही इस तरह मेरे सामने प्रकट हो जाओगे। मुझे माफ कर दो। मैं अब किसी को अपना मुंह दिखाने के लायक भी नहीं रहीं।" फिर लेडी केलरिक से खड़ा नहीं रहा गया और बैठ गई और घुटनों में सिर रखकर सिसकने लगी। सब खामोश उस अजनबी आदमी को देख रहे थे जिसकी शक्ल देखने मात्र से लेडी केलरिक टूट चुकी थी।

जब वह सिसकती रही तो उस अजनबी सैनिक ने कहा "यह क्या बताएगी? क्योंकि यह तो मुझे मार चुकी थी। सुनो मैं ही लिली शहर



का जेलर हूं इस नीच औरत के साथ मेरा किस्सा बड़ा ही दिलचस्प है" वह मुस्कुरा कर ऐथोस से बोला "क्यों ऐथोस संसार में कोई ऐसा न्यायालय है जो मेरा न्याय कर सकता है? मेरी कहानी उस समय शुरू

होती हे जब इस औरत का विवाह नहीं हुआ था। उस समय यह फ्रांस के एक मठ में भिक्षुणी थी। उस मठ में एक सन्यासी रहता था वह बाल ब्रहमचारी था परन्तु इस औरत की काली-काली आंखों ने, काले-काले बालों ने उस बाल ब्रहमचारी का ब्रहमचर्य छीन लिया। अरे भाई जब नारी के आगे ईश्वर तक नहीं टिक सका जिसने की इसकी रचना की तो वह तो मनुष्य था। कुछ दिनों में वह इसका बेहद दीवाना हो गया इसने उसको वरगलाना शुरू किया कि हम दोनों इस मठ में नहीं रह सकते क्योंकि इस औरत की प्यास काफी बढ़ गई थी। वह भी इसका इस कदर मजनूं बन गया कि उसने अपना धर्म तक छोड़ दिया। जब इस औरत ने देखा कि यह व्यक्ति उसके बिना नहीं रह सकता तो इसने उसे मठ से भाग निकलने के लिए कहा। इन लोगों के पास रुपया पैसा तो था नहीं भागकर जाते भी कहां? फिर इस पापात्मा ने उस पवित्र मठ से बर्तन चोरी किए और पैसे इकट्ठे कर वहां से भाग निकले।

इस नीच औरत की शह पर उस व्यक्ति ने भी मठ में चोरी की। मठाधीश को जब पता चला कि ये दोनों भाग गए है और मठ में से काफी सामान लेकर भागे है तो उन्होंने थाने में रिपोर्ट की। इन दोनों के पास जब तक पैसा रहा मौज-मस्ती की यह उस आदमी के साथ मनमानी करती रही। लेकिन शायद भाग्य ने इनका साथ नहीं दिया और एक सराय से ये दोनों ही पकड़े गए। चूंकि दोनों के ऊपर मठ से भागने का और चोरी का आरोप था इसलिए दोनों को जेल की सजा मिली। लेकिन यह लड़की चालाक थी इसने जेल में सिपाहियों को भी नहीं बक्सा। उस समय यह जवान थी। कमसिन थी इसने रात के ड्यूटी वाले सिपाही को अपनी अदा दिखा कर अपनी जुल्फों में कैद कर लिया और उसकी मदद से यह जेल में से भाग निकली। इस जुर्म में उस अभागे सन्यासी की सजा और भी बढ़ गई अब उसकी सजा एक साल से बढ़कर दस साल हो गई।"

वह अजनबी सैनिक बोलते-बोलते हॉफ रहा था "हां तो वह सन्यासी अब अपने किए पर पछता रहा था। जब उसे उस औरत की

असलियत का पता चला तो उसने अपना माथा पीट लिया और सोचने लगा कि काश मैं इसके जाल में ना फंसता तो कम से कम आज मुझे ये जलालत तो ना उठानी पड़ती। अब जेल से निकलकर मैं अपना मुंह किसे दिखाऊंगा? वह सन्यासी दिन रात रो-रोकर बिताता। दस साल पूरा होने के बाद उसे जेल से छुट्टी मिली परन्तु वह टूट गया था उस अभागे ने तो.....।" इतना कहकर वह सिसक पड़ा सब उसकी तरफ देखने लगे उसने आंसू पूछ कर कहा "मैं अभागा ही उसका बड़ा भाई हूं और उसी जेल का जेलर था। उस अभागे ने तो अपना मुंह मुझे भी नहीं दिखाया और अपनी जान नदी में छलांग लगाकर समाप्त कर ली। जिस दिन वह जेल से निकला उस समय में किसी काम से बाहर गया हुआ था मुझे उसी दिन शाम को आना था परन्तु वह तो सुबह ही निकल गया उस समय जेल से निकले कैदी के दाहिने कंधे पर फूल का निशान दाग दिया जाता था वह कार्य भी मेरे एक सहयोगी ने पूरा किया। जब शाम को मैं आया तो मैंने जेल के बरामदे में कफन से ढकी लाश देखी तो पता चला कि वह जेल से निकलने के बाद नदी मे कूद पड़ा उसके पीछे दो आदमी उसे बचाने गए लेकिन वे कामयाब नहीं हुए और वह मर गया। उस दिन मैंने उसकी जलती चिता की राख हाथ में लेकर कसम खाई थी कि जैसे भी हो मैं इस औरत को सजा अवश्य दूंगा।"

कुछ ही दिनों बाद मैंने देखा कि यह औरत एक मकान में किसी व्यक्ति की हमसाया बनकर रह रही है। मैंने इसे फिर गिरफ्तार किया और इसे चोरी के जुर्म में सात महिने की जेल की सजा हो गई। इस औरत के दाहिने कंधे पर मैंने ही फूल का निशान गौदा था ताकि लोगों को यह मालूम चल जाए कि यह स्त्री चोरी के अपराध मे जेल याफ्ता मुजरिम है।"

अब उस बख्तर धारी सैनिक की बात पूरी हो गई थी। सब उस व्यक्ति की तरफ ही देख रहे थे जो अब हॉफ रहा था और उस स्त्री की तरफ खा जाने वाली निगाहों से देख रहा था। अब ऐथोस की बारी थी

क्योंकि हर किसी का निर्णय वहीं कर रहा था। वह बोला "देखो इस स्त्री ने अपनी छोटी सी जिन्दगी में बहुत से जघन्य अपराध किए है जिसमें से कोई भी अपराध माफी योग्य नहीं है यह नीच स्त्री सुन्दर है और अपनी सुन्दरता और अदाओं से बड़ी चालाकी दिखा बचती रही है और बेचारे निर्दोष लोगों को फंसाती रही है। कभी सन्यासिनी बनकर तो कभी विधवा और बेसहारा बनकर। चूंकि हम सभी इसके जाल में फंसे है अतः अकेले मुझे इसे सजा देने का कोई हक नहीं बनता। हम सब इसे सजा देंगे। इसे कौन सी सजा दी जाय यह हम अभी तो निर्णय नहीं ले सकते? इस औरत को आज इसी मकान में कैद रखेंगे। इसकी सजा हम सभी मिलकर कल तय करेंगे।" इसके बाद उस औरत को वहीं मकान में बन्द कर दिया और मकान के बाहर दरवाजों पर ऐथोस, पार्थस, अरामिस, दार्ता, लार्ड विक्टर और बख्तर धारी सैनिक पहरा देने लगे।

सुबह जैसे ही उन लोगों ने दरवाजा खोला तो वह सभी सन्न रह गए क्योंकि पीछे की तरफ की खिड़की खुली हुई थी और वह कमरे में नहीं थी अभी वे लोग बातें ही कर रहे थे कि हमने एक गुनाह और कर दिया जो रात को उसे मौत नहीं दी। तभी कोलाहल सुनकर सभी बाहर की तरफ भागे। कुछ लोग किसी लाश को नदी से निकाल कर उसी और ला रहे थे। जब वह लाश नीचे रखी गई तो ऐथोस ने उस पर ढ़का हुआ पर्दा खींच लिया तो चीख निकल गई क्योंकि यह लाश किसी और की नहीं वरन लेडी केलरिक की ही थी। उसे सजा देने से पहले उसने मौत को खुद गले लगा लिया। उसे इतनी आत्मग्लानि इतनी हुई कि वह नदी में डूब कर मर गई।

●●●

